Chander Kanta
..O RAM PRESS SRINAGAR
THE KASHMIR NOVEL AGEN
PROPRI TOR

اورینٹل گورنمنٹ

لمیٹڈ بمبئ

چھ ان

ایکٹر صاحبان - مسٹر سوراب جی - ای وارڈ
) سر بھالچندرا کرشنا صاحب نائٹ ایل - ایم - (...
صب بارٹ - (۴) آنریبل مسٹر پرشوتم داس - ٹھاکر
) مسٹر فرینک لسن صاحب (۶) مسٹر ریلیف کر ...
) مسٹر نرو تم مرارجی صاحب -

سلٹنگ ایکچوری یعنی مشیر حساب - تھامس و ...
اسی ایڈ پنڈ

ڈیٹرس یعنی حساب پڑتال کنندگان - (۱) باپلو ...
بلیمور یا چا

ایکچوری یعنی مشیر حساب بمبئی - ای ایڈ ون جو یعن ...
ڑ صاحبان صلاح کار - لفٹننٹ کرنل جے - جی ...
ایس - لنڈن - (۲)
- آئی - ایم - ایس - لنڈن -

ررز یعنی خزانچیان کمپنی - نیشنل بنک آف ...
سٹی یعنی متولی - آفیشل ٹرسٹی بمبئی یعنی سرکار ...
آر پیٹرسن براؤن صاحب -

चन्द्रकान्ता

(सचित्र)
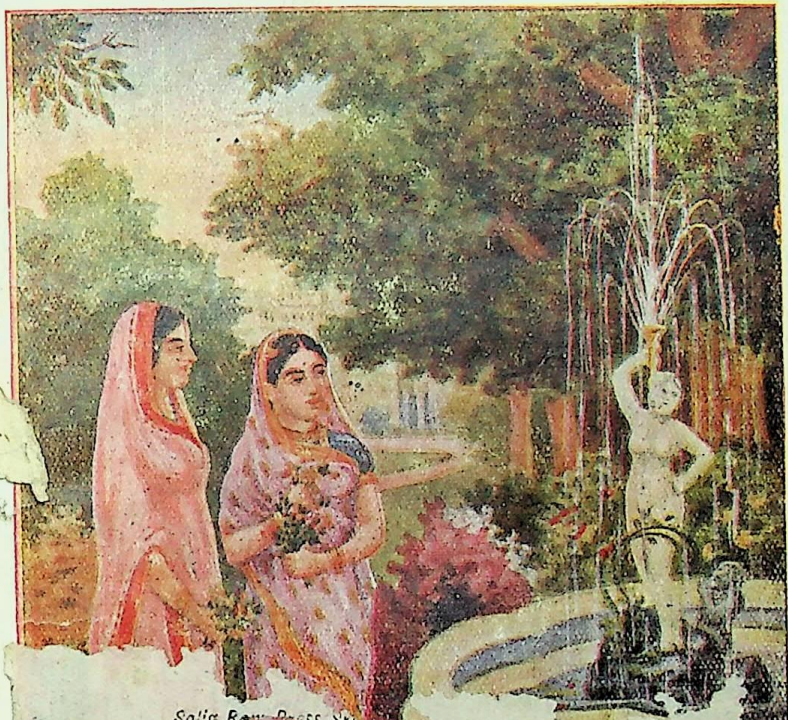
॥ श्रीः ॥

(गुटका)

चन्द्रकान्ता ।

॥ उपन्यास ॥

(सचित्र)

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

लहरी प्रेस काशी में मुद्रित और प्रकाशित ।

1923.

पन्द्रहवीं बार]

[मूल्य १॥)

भूमिका ।

[प्रथम संस्करण से]

आज तक हिन्दी के बहुत से उपन्यास हुए हैं जिनमें कई तरह की बातेंवो राजनीति भी लिखी गई हैं, राजदर्बार के तरीके वो सामान भी जाहिर किये गये हैं, मगर राजदर्बारों में ऐयार (चालाक) भी नौकर हुआ करते थे जो कि हरफन मौला याने सूरत बदलना, बहुत सी दवाओं का जानना, गाना, बजाना, दौड़ना, शस्त्र चलाना, जासूसों का काम देना वगैरह बहुत सी बातें जाना करते थे। जब राजाओं में लड़ाई होती थी तो ये लोग अपनी चालाकी से बिना खून गिराये वो पलटनों की जानें गँवाये लड़ाई खतम कर देते थे। इन लोगों की बड़ी कदर की जाती थी, इन्हीं ऐयारी पेशे में आज कल बहुरूपिये दिखलाई देते हैं। वे सब गुण तो इन लोगों में रहे नहीं, सिर्फ शक्ल बदलना रह गया, वह भी किसी काम का नहीं। इन ऐयारों का बयान हिन्दी किताबों में अभी तक मेरी नजरों से नहीं गुजरा अगर हिन्दी पढ़ने वाले भी इस मजे को देख लें तो कई बातों का फायदा हो, सब से ज्यादे फायदा तो यह है कि ऐसी किताबों का पढ़ने वाला जल्दी किसी के धोखे में न पड़ेगा। इन सब बातों का खयाल कर के मैंने यह "चन्द्रकान्ता" नामक उपन्यास लिखा है। इस किताब में नौगढ़ वो विजयगढ़ दो पहाड़ी राजवाड़ों का हाल कहा गया है। इन दोनों राजवाड़ों

में पहिले आपुस का खूब मेल रहना, फिर वज़ीर के लड़के की बदमाशी से बिगाड़ होना, नौगढ़ के कुमार बीरेन्द्रसिंह का विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता पर आशिक हो कर तकलीफें उठाना, विजयगढ़ के दीवान के लड़के क्रूरसिंह का महाराज जयसिंह से बिगड़ कर चुनार जाना और चन्द्रकान्ता की तारीफ करके वहां के राजा शिवदत्तसिंह को उभाड़ लाना, इस बीच में ऐयारी भी अच्छी तरह से दिखलाई गई है और ये राज पहाड़ी होने से इस में पहाड़ों, नदियों, दर्रों, भयानक जङ्गलों और खूबसूरत वो दिलचस्प घाटियों का भी बयान अच्छी तरह से आया है॥

मैंने आज तक कोई किताब नहीं लिखी है, यह पहिला श्रीगणेश है, इस लिये इसमें किसी तरह की गलती वा भूल का हो जाना ताज्जुब नहीं, जिसके लिये मैं आप लोगों से क्षमा मांगता हूं, बल्कि बड़ी मेहरबानी होगी अगर आप लोग मेरी भूल को पत्र द्वारा मुझ पर जाहिर करेंगे क्योंकि यह ग्रन्थ बहुत बड़ा है आगे और छप रहा है, भूल मालूम हो जाने से दूसरी जिल्दों में उसका खयाल किया जायगा॥

आपका—

देवकीनन्दन खत्री

महल्ला लाहौरी टोला

बनारस सिटी।

आषाढ़ सम्बत् १९४८

॥ श्रीः ॥

[पहिला हिस्सा]

पहिला बयान

शाम के वक्त कुछ कुछ सूरज दिखाई देता है, सुनसान मैदान में एक पहाड़ी के नीचे दो शख्स, बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठे आपुस में कुछ बातें कर रहे हैं।

बीरेन्द्रसिंह की उम्र इक्कीस या बाईस बर्ष की होगी, यह नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह का इकलौता लड़का है।

तेजसिंह, राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान जीतसिंह का प्यारा लड़का और कुंअर बीरेन्द्रसिंह का सच्चा दिली दोस्त, बड़ा चालाक, फुरतीला, कमर में सिर्फ खञ्जर बांधे बगल में बटुआ लटकाये, हाथ में एक कमन्द लिये बड़ी तेजी के साथ चारो तरफ देखता और इनसे बातें करता जाता है॥

इन दोनों के सामने एक घोड़ा कसा कसाया दुरुस्त, पेड़ से बँधा हुआ था॥

कुंअर बीरेन्द्रसिंह ने कहा, भाई तेजसिंह ! देखो मुहब्बत भी क्या बुरी बला है जिसने इस दर्जे तक पहुंचा दिया। कई दफे तुम विजयगढ़ जा कर राजकुमारी चन्द्रकान्ता की चीठी मेरे पास लाये और मेरी चीठी उन तक पहुंचाई जिससे यह भी मालूम होता है कि जितनी मुहब्बत मैं चन्द्रकान्ता से रखता हूं उतनी ही चन्द्रकान्ता भी मुझसे रखती है। हमारे राज्य से उसके राज्य के बीच सिर्फ पांच कोस का फासला है तिस पर हम लोगों के किये कुछ भी नहीं बन पड़ता। देखो इस खत में भी चन्द्रकान्ता ने यही लिखा है कि "जिस तरह बने जल्द मिल जाओ॥"

तेजसिंह ने कहा कि मैं हर तरह से तुमको वहां ले जा सकता हूं मगर एक तो आज कल चन्द्रकान्ता के बाप जयसिंह ने महल के चारो तरफ सख़्त पहरा बैठा रक्खा है, दूसरे राजा जयसिंह के मंत्री का लड़का क्रूरसिंह उस पर आशिक है। उसने भी अपने दोनों ऐयारों* को जिनका नाम नाजिमअली और अहमद खां है इस बात की ताकीद की है कि तुमलोग बराबर महल की निगहबानी किया करो, क्योंकि तुम्हारी मुहब्बत का हाल क्रूरसिंह और उनके ऐयारों को बखूबी मालूम हो गया है। चाहे चन्द्रकान्ता क्रूरसिंह से बहुत ही नफरत करती है और राजा भी अपनी लड़की अपने मन्त्री के लड़के को नहीं दे सकता फिर भी उसे उम्मीद बंधी हुई है और तुम्हारी लगावट/बहुत बुरी मालूम होती है। उसने अपने बाप के जरिये जयसिंह (चन्द्रकान्ता के पिता) के कान तक

---

* ऐयार उसको कहते हैं जो हर एक फन जानता हो, शकल बदलना और दौड़ना उनका मुख्य काम है॥

तुम्हारी लगावट का हाल पहुंचा दिया है। इसी सबब से पहरे की सख़्त ताकीद है। आपका ले चलना अभी मुझे पसन्द नहीं जब तक कि मैं वहां जा कर फसादियों को गिरफ़्तार न कर लूं॥

इस वक्त मैं फिर विजयगढ़ जा कर चन्द्रकान्ता और चपला से मुलाकात करता हूं क्योंकि चपला ऐयारा और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है और चन्द्रकान्ता को जान से ज्यादः मानती है, सिवाय चपला के मेरा साथ देने वाला वहां कोई नहीं है। अस्तु अपने दुश्मनों की चालाकी और कार्रवाई देख कर लौटूं तो आपके चलने के बारे में राय दूं। ऐसा न हो कि बिना समझे बूझे काम करने से हम लोग वहां ही गिरफ़्तार हो जायं॥

बीरेन्द्र०। जो मुनासिब समझो करो, हमको तो सिर्फ़ अपनी ताकत का भरोसा है लेकिन तुमको अपनी ताकत और ऐयारी दोनों का॥

तेज०। मुझे यह भी पता लगा है कि हाल ही में क्रूरसिंह के दोनों ऐयार नाजिम और अहमद पुनः यहां आ कर हमारे महाराज का दर्शन कर गये हैं। न मालूम किस चालाकी में आये थे, अफसोस! उस वक्त मैं यहां न था॥

बीरेन्द्र०। मुश्किल है कि तुम क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों को फंसाया चाहते हो और वे लोग तुम्हारी गिरफ़्तारी की फिक्र में हैं, परमेश्वर कुशल करे। खैर अब तुम वहां जाओ और जिस तरह बने चन्द्रकान्ता से मिलने का बन्दोबस्त करो॥

तेजसिंह फौरन उठ खड़ा हुआ और बीरेन्द्रसिंह को वहीं छोड़ पैदल विजयगढ़ की तरफ रवाना हुआ। बीरेन्द्रसिंह भी घोड़े को दरख़्त से खोल, सवार हो अपने किले की तरफ चले गये॥

दूसरा बयान ।

विजयगढ़ में क्रूरसिंह* अपनी बैठक के अन्दर नाज़िम और अहमद दोनों ऐयारों के साथ बैठा बातें कर रहा है। क्रूर ने कहा:-

देखो नाज़िम ! महाराज को तो यह खयाल है कि मैं राजा हो कर मन्त्री के लड़के को कैसे दामाद बनाऊं और चन्द्रकान्ता बीरेन्द्रसिंह को चाहती है, अब मेरा काम कैसे निकले। अगर यह सोचा जाय कि चन्द्रकान्ता को ले कर भाग जाऊं तो कहां जाऊं और कहां रह कर आराम करूं, फिर ले जाने के बाद मेरे मां बाप की महाराज क्या दुर्दशा करेंगे ? इससे यही मुनासिब है कि पहिले बीरेन्द्रसिंह और उसके ऐयार तेजसिंह को किसी तरह गिरफ़ार कर किसी ऐसी जगह खपा डाल जाय कि हजार वर्ष तक पता न लगे, इसके बाद मौका पा कर महाराज को मारने की फिक्र की जाय, फिर तो मैं झट गद्दी का मालिक बन जाऊंगा, तब अलबत्ते अपनी जिन्दगी में मैं चन्द्रकान्ता से ऐश कर सकूंगा। मगर यह तो कहो कहो कि महाराज के मरने बाद मैं गद्दी का मालिक कैसे बनूंगा ? लोग मुझे राजा कैसे बनावेंगे ?

नाज़िम ने कहा, हमारे राजा के यहां बनिस्बत काफिरों के मुसलमान ज्याद: हैं, उन सभों को आपकी मदद के लिये मैं राज़ी कर सकता हूं और उन लोगों से कसम खिला सकता हूं कि महाराज के बाद आपको राजा मानें, मगर शर्त यह है कि काम हो जाने पर आप भी हमारे मजहब मुसलमानी को कबूल करें॥

---

* इसकी उम्र २१ या २२ वर्ष की थी, इसके ऐयार भी हमसिन थे।

क्रूरसिंह ने कहा, "अगर ऐसा है तो तुम्हारी शर्त मैं दिलो-जान से कबूल करता हूं।" यह सुन अहमद बोला, "इस बात का आप एकरारनामा लिख कर मेरे हवाले करें जिसे मैं सब मुसलमान भाइयों को दिखला कर अपने साथ मिला लूं॥

क्रूरसिंह ने काम हो जाने पर मजहब मुसलमानी अख़्तियार करने के लिये एकरारनामा लिख कर फौरन नाज़िम और अहमद के हवाले किया। अहमद ने क्रूरसिंह से कहा, "अब सब मुसलमानों का एक दिल कर लेना हम लोगों के जिम्मे है इसके लिये आप कुछ न सोचिये, हां हम दोनों आदमियों के लिये भी एक एकरारनामा इस बात का हो जाना चाहिये कि आपके राजा होने पर हम ही दोनों वज़ीर मुकर्रर किये जायँ, तब हम लोगों की चालाकी का तमाशा देखिये कि बात की बात में जमाना कैसा उलट पलट कर देते हैं॥"

क्रूरसिंह ने झटपट बमूजिब कहने इन ऐयारों के इस बात का भी एकरारनामा लिख कर हवाले कर दिया जिससे वे दोनों बहुत ही खुश हुए॥

नाज़िम ने कहा, "इस वक्त हम लोग चन्द्रकान्ता के हाल चाल की खबर लेने जाते हैं क्योंकि यह शाम का वक्त बहुत अच्छा है। चन्द्रकान्ता जरूर बाग में गई होगी और अपनी सखी चपला से अपनी बिरह कहानी कहती होगी इसलिये हमको इसका पता लगाना कोई मुश्किल न होगा कि आजकल बीरेन्द्र और चन्द्रकान्ता के बीच में क्या हो रहा है। यह कह दोनों ऐयार क्रूरसिंह से बिदा हुए॥

तीसरा बयान।

कुछ कुछ दिन बाकी है, चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बाग में टहल रही हैं, भीनी भीनी फूलों की महक धीमी धीमी हवा के साथ मिल कर तबीयत को खुश कर रही हैं, तरह तरह तरह के फूल खिले हुए हैं, बाग के पश्चिम की तरफ आम के घने पेड़ों की बहार और उस में से बैठते हुए सूरज के किरनों की चमक एक अजीब ही मजा दे रही है, इधर फूलों की क्यारियों में और रविशों पर छिड़काव किया हुआ है, फूलों के दरख़्त अच्छी तरह पानी से धोये हुए हैं, कहीं गुलाब, कहीं जूही, कहीं बेला, कहीं मोतिये की क्यारियां अपना अपना मजा दे रही हैं, एक तरफ बाग से सटा हुआ ऊंचा महल और दूसरी तरफ सुन्दर दो बुर्जियां अपनी ही बहार दिखला रही हैं, चपला जो चालाकी के फन में बड़ी तेज़ और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है, अपने चञ्चल हावभाव के साथ चारो ओर चन्द्रकान्ता को सङ्ग लिये घूमती और तारीफ करती हुई खुशबूदार फूलों को तोड़ तोड़ कर चन्द्रकान्ता के हाथ में दे रही है, मगर चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह की जुदाई में ये सब बातें कब अच्छी मालूम होतीं थीं, उसे तो दिल बहलाने के लिये उसकी सखियां जबर्दस्ती बाग में खैंच लाई थीं॥

चन्द्रकान्ता की सखी चम्पा गुच्छा बनाने के लिये फूलों को तोड़ती हुई मालतीलता की कुञ्ज की तरफ चली गई लेकिन चन्द्रकान्ता और चपला धीरे धीरे टहलती हुई बीच के फौहारे के पास जा निकलीं और उनके चक्करदार टूटियों से निकलते हुए जल का तमाशा देखने लगीं॥
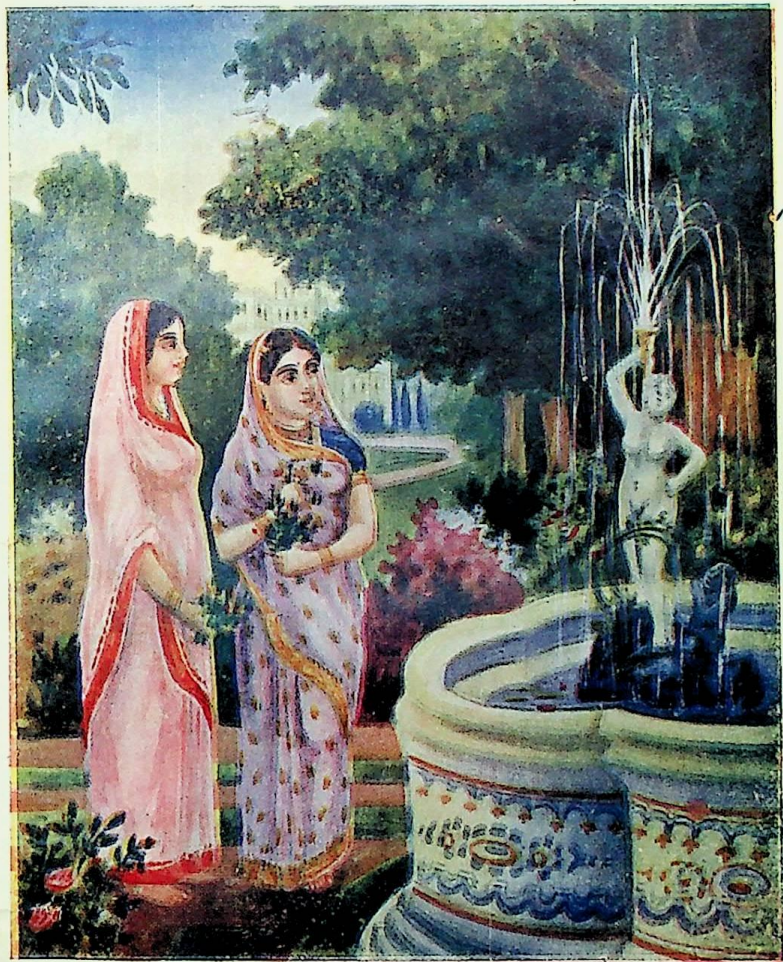
"चन्द्रकान्ता और चपला टहलती हुई फौवारे के पास जा निकलीं।"

(पहिला हिस्सा) (तीसरा बयान)

चपला० । न मालूम चम्पा किधर चली गई !!

चन्द्रकान्ता० । कहीं इधर उधर घूमती होगी ॥

चपला० । घण्टा भर से ज्यादे हुआ कि हमलोगों के साथ नहीं है ॥

चन्द्रकान्ता० । देखो वह आ रही है ॥

चपला० । इस वक्त तो इसकी चाल में फर्क मालूम होता है!!

इतने में चम्पा ने आ कर एक फूलों का गुच्छा चन्द्रकान्ता के हाथ में दे कर कहा कि देखो यह कैसा अच्छा गुच्छा बना लाई हूं, अगर इस वक्त कुंवर बीरेन्द्रसिंह होते तो इसको देख मेरी कारीगरी की तारीफ करते और मुझको बहुत कुछ इनाम देते ॥

यकायक बीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही चन्द्रकान्ता का अजब हाल हो गया, भूली हुई बात फिर याद आ गई, कमल-मुख मुरझा गया, ऊंची २ सांसें लेने लगी, आंखों से आंसू टपकने लगे, धीरे २ कहने लगी, " न मालूम बिधाता ने मेरे भाग्य में क्या लिखा है, न मालूम मैंने उस जन्म में कौन ऐसे पाप किये हैं कि जिनके बदले यह दुःख भोगना पड़ा ! देखो पिता को क्या धुन समाई है; कहते हैं चन्दकान्ता को कुंवारी ही रक्खूंगा । हा ! बीरेन्द्र के पिता ने शादी करने के लिये कैसी कैसी खुशामदें कीं मगर उस दुष्ट क्रूर के बाप कुपथसिंह ने उनको ऐसा अपने बश में कर रक्खा है कि किसी काम को होने ही नहीं देता और कूर मुझ से अपनी हो लसी लगाना चाहता है !!"

यकायक चपला ने चन्द्रकान्ता का हाथ पकड़ कर धीरे से दबाया, मानो चुप रहने के किये इशारा किया ॥

चपला के इशारे को चन्द्रकान्ता समझ कर कर चुप हो

रही और चपला का हाथ पकड़ कर फिर बाग में टहलने लगी मगर चपला अपना रूमाल उस जगह जान बूझ कर गिराती गई। थोड़ी दूर आगे बढ़ कर चम्पा से कहा—"सखी! देखो तो सही फौवारे के पास मेरा रूमाल गिर पड़ा है॥"

चम्पा रूमाल लेने को फौवारे की तरफ चली गई, चन्द्रकान्ता ने चपला से पूछा, सखी! तैने बोलते बोलते यकायक मुझे क्यों रोका?

चपला ने कहा, मेरी प्यारी सखी! मुझको चम्पा पर शुबहा हुआ, उसकी बातों और चितवनों से मालूम होता है कि वह असली चम्पा नहीं है॥

इतने में चम्पा ने रूमाल ला कर चपला के हाथ में दिया। चपला ने चम्पा से पूछा, " सखी! कल रात को मैंने तुझसे जो कहा था तैने किया?" चम्पा बोली, "नहीं मैं तो भूल गई।" तब चपला ने कहा, "भला वह बात तो याद है या वह भी भूल गई?" तब चम्पा बोली, " बात तो याद है।" तब फिर चपला ने कहा, "भला दोहरा के मुझसे कह तो सही तब मैं जानूं कि तुझे याद है॥"

इस बात का जवाब न दे कर चम्पा ने दूसरी बात छेड़ दी जिससे शक की जगह यकीन हो गया कि यह चम्पा नहीं है। आखिर चपला यह कह कर कि मैं तुझसे एक बात कहूंगी चम्पा को एक किनारे ले गई और कुछ मामूली बातें कर के बोली, "देख तो मेरे कान से कुछ बदबू तो नहीं आती है? क्योंकि कल से कान में दर्द है।" नकली चम्पा चपला के फेर में पड़ गई और फौरन कान सूंघा। चपला ने चालाकी से बेहोशी की बुकनी अपने कान में रख कर नकली चम्पा को सुंघा दी जिसके सूंघते ही चम्पा बेहोश हो कर गिर पड़ी॥

चपला ने चन्द्रकान्ता को पुकार कर कहा, आओ सखी ! अपनी चम्पा का हाल देखो । चन्द्रकान्ता ने पास आ कर चम्पा को बेहोश पड़ी हुई देखा, चपला से कहा, सखी ! कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा धोखा धोखा ही निकले और चम्पा से पीछे शरमाना पड़े । "नहीं, ऐसा न होगा" यह कह कर चपला चम्पा को पीठ पर लाद फौवारे के पास ले गई और चन्द्रकान्ता से कहा तुम फौवारे में से चुल्लू भर भर कर पानी इसके मुंह पर डालो मैं धोती हूं । चन्द्रकान्ता ने ऐसा किया और चपला खूब रगड़ रगड़ कर उसका मुंह धोने लगी। थोड़ी देर में चम्पा की सूरत बदल गई और साफ नाजिम की सूरत निकल आई । देखते ही चन्द्रकान्ता का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और बोली, सखी इसने तो बड़ी ही बेअदबी की !!

"देखो तो अब मैं क्या करती हूं।" यह कह कर चपला नाजिम को फिर पीठ पर लाद बाग के एक कोने में ले गई जहां बुर्जी के नीचे छोटा सा तहखाना था। उसके अन्दर बेहोश नाजिम को ले जा कर लेटा दिया और अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर जलाई । एक रस्सी से नाजिम के पैर और दोनों हाथ पीठ की तरफ खूब कस कर बांधे और एक डिबिया में से लखलखा निकाल उसको सुंघा-या जिस से नाजिम ने एक छींक मारी और होश में आ कर अपने को कैद और बेबस देखा, चपला कोड़ा ले कर सामने खड़ी हो गई और मारना शुरू किया ॥

"माफ करो, मुझसे बड़ा कसूर हुआ, अब मैं ऐसा कभी न करूंगा बल्कि इस काम का नाम भी न लूंगा" यह कह कर नाजिम चिल्लाने और रोने लगा, मगर चपला कब सुनती थी कोड़ा जमाये गई और कहा, सब्र कर अभी तो तेरी पीठ की

खुजली भी न मिटी होगी, तू यहां क्यों आया था। क्या बाग की हवा अच्छी मालूम हुई थी? क्या बाग की सैर को जी चाहता था? क्या तू नहीं जानता था कि चपला यहां होगी? हरामजादे के बच्चे! बेईमान! अपने बाप के कहने से तैंने यह काम किया। देख मैं उसकी भी तबीयत खुश कर देती हूं। यह कह कर फिर मारना शुरू किया और पूछा कि सच सच बता तू यहां कैसे आया और चम्पा कहां गई?

मार के खौफ से नाजिम को असल हाल कहना ही पड़ा कि चम्पा को मैं ही ने बेहोश किया था, बेहोशी की दवा छिड़क कर फूल का गुच्छा चम्पा के रास्ते में मैंने रख दिया था जिसको सूंघ कर चम्पा बेहोश हो गई, तब मैंने उसे मालतीलता में डाल दिया और उसकी सूरत बन उसके कपड़े पहिर तुम्हारी तरफ चला आया, लो मैंने सब हाल कह दिया अब छोड़ दो॥

चपला ने कहा, ठहर छोड़ती हूं, फिर भी दस पांच खूबसूरत कोड़े और जमाये, यहां तक कि नाजिम बिलबिला उठा तब चपला ने चन्द्रकान्ता से कहा, सखी! तुम इसकी निगहबानी करो मैं चम्पा को ढूंढ लाती हूं कहीं यह पाजी झूठ न कहता हो।

चम्पा को खोजती हुई चपला मालतीलता के पास पहुंची और बत्ती बाल कर ढूंढने लगी। देखा कि सचमुच चम्पा एक झाड़ी में बेहोश पड़ी है बदन पर उसके एक लत्ता भी नहीं है। लखलखा सूंघा कर होश में लाई और पूछा, क्यों मिजाज कैसा है? खा न गई धोखा!!

चम्पा ने कहा, "मुझको क्या मालूम था कि इस समय यहां ऐयारी होगी उस जगह फूलों का एक गुच्छा था जिसको सूंघ

कर मैं बेहोश हो गई, फिर न मालूम क्या हुआ। हाय! हाय! किसने मुझे बेहोश किया! मेरे कपड़े भी उतार लिये! बड़ी लागत के कपड़े थे!!"

वहां पर नाजिम के कपड़े भी पड़े थे जिसमें से दो एक कपड़े ले कर चपला ने चम्पा का बदन ढांपा और यह कह के कि मेरे साथ आ मैं उसे दिखलाऊं जिसने तेरी ऐसी हालत की, चम्पा को साथ ले चपला उस जगह आई जहां चन्द्रकान्ता और नाजिम थे। नाजिम की तरफ इशारा करके चपला ने चम्पा से कहा, "देख इसी ने तेरे साथ भलाई की थी।" चम्पा को नाजिम की सूरत देख कर बड़ा गुस्सा आया और चपला से कहा, "बहिन! अगर इजाजत दो तो मैं भी दो चार कोड़े लगा कर अपना गुस्सा निकाल लूं?

चपला ने कहा, "हां हां, जितना जी चाहे इस मूये को जूतियां लगाओ।" बस फिर क्या था चम्पा ने मनमानते कोड़े नाजिम को लगाये। नाजिम घबड़ा उठा और जी में कहने लगा, "खुदा क्रूरसिंह को गारत करे जिसकी बदौलत मेरी यह हालत हुई॥"

नाजिम को उसी तहखाने में कैद कर तीनों महल की तरफ रवाना हुईं॥

यह छोटा सा बाग जिसमें ऊपर लिखी हुई सब बातें हुईं महल के सङ्ग सटा हुआ पिछवाड़े की तरफ था। यह चन्द्रकान्ता के टहलने वो हवा खाने के लिये बनवाया गया था, इसके चारो तरफ मुसल्मानों का पहरा होने के सबब अहमद और नाजिम को अपना काम करने मौका बखूबी मिल गया था॥

चौथा बयान ।

तेजसिंह बीरेन्द्रसिंह से रुखसत हो कर बिजयगढ़ पहुंचे और चन्द्रकान्ता से मिलने की कोशिश करने लगे, मगर कोई तरकीब न बैठी क्योंकि पहरे वाले बड़ी होशियारी से पहरा देते थे। तेजसिंह सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये ? रात चांदनी है अगर अँधेरी होती तो कमन्द लगा कर महल के ऊपर जाने की कोशिश की जाती ॥

आखिर तेजसिंह एकान्त में जा चोबदार की सूरत बन महल की ड्योढ़ी पर आये, देखा कि बहुत से चोबदार और प्यादे बैठे पहरा दे रहे हैं। एक चोबदार से कहा, "यार ! हम भी महाराज के नौकर हैं और चार महीने से महाराज ने हमको अपनी अरदली में नौकर रक्खा है, इस वक्त छुट्टी थी चांदनी रात का मजा देखते टहलते इस तरफ आ निकले, तुम लोगों को तम्बाकू पीते देख जी में आया कि चलो दो फूंक हम भी लगा लें। अफियून खाने वालों को तम्बाकू की महक जैसी मालूम होती है आपलोग भी जानते ही होंगे ॥"

हां हां, आइये बैठिये तम्बाकू पीजिये, यह कह कर चोबदार और प्यादों ने हुक्का तेजसिंह के आगे रक्खा। तेजसिंह ने कहा, "मैं हिन्दू हूं हुक्का तो नहीं पी सकता हां हाथ से जरूर पी लूंगा।" यह कह कर चिलम उतार ली और पीने लगे ॥

दो फूंक भी तम्बाकू के नहीं पीये थे कि खांसना शुरू किया इतना खांसा कि थोड़ा सा पानी भी मुंह से निकाल दिया और कहा, मियां ! तुम लोग अजब कड़वा तम्बाकू पीते हो, मैं तो हमेशे सरकारी तम्बाकू पीता हूं, महाराज के हुक्केबर्दार से दोस्ती हो गई है वह बराबर महाराज के पीने वाले तम्बाकू में से

मुझको दिया करता है, अब ऐसी आदत पड़ गई है कि सिवाय उस तम्बाकू के और कोई तम्बाकू हमें अच्छा ही नहीं लगता ॥"

आखिर तेजसिंह ने जो चोबदार बने हुए थे अपने बटुये में से एक चिलम तम्बाकू निकाल कर दिया और कहा, "लो तुम भी पी कर देख लो कि कैसा तम्बाकू है ॥"

भला चोबदारों ने महाराज के पीने का तम्बाकू कभी काहे को पीया होगा, सपने में भी न देखा होगा, झट से हाथ फैला दिया और कहा, "लाओ भाई! भला तुम्हारी बदौलत हम भी सरकारी तम्बाकू पी लें, तुम बड़े किस्मतवर हो कि महाराज के साथ रहते हो, तुम तो खूब चैन करते होगे।" यह कह कर नकली चोबदार (तेजसिंह) के हाथ से तम्बाकू ले लिया और खूब डबल जमा कर तेजसिंह के सामने लाये ॥

तेजसिंह ने कहा, "तुमलोग खूब सुलगाओ फिर मैं भी पी लूंगा ॥"

अब हुक्का भी गड़गड़ाने लगा और साथ ही साथ गप्पें भी उड़ने लगीं ॥

थोड़ी ही देर में सब चोबदार और प्यादों का सर घूमने लगा, यहां तक कि झुकते झुकते सब औंधे हो कर गिर पड़े और बेहोश हो गये ॥

अब क्या था! बड़ी आसानी से तेजसिंह फाटक के अन्दर घुस गये और नजरबाग में पहुंचे, देखा कि हाथ में रोशनी लिये सामने से एक लौंडी आ रही है। तेजसिंह ने फुर्ती से पास जा कर उसके गले में कमन्द डाली और ऐसा झोंका दिया कि वह चूं तक न कर सकी और धम्म से जमीन पर गिर पड़ी। तेजसिंह ने जबर्दस्ती बेहोशी की दवा उसको नाक में फूंक दी, जब वह बेहोश हो गई उसे वहां से उठा किनारे ले गये। बटुए

में से सामान निकाल मोमबत्ती जलाई और अपने सामनेआईना रख उसी की सूरत के मुताबिक अपनी सूरत बनाई, उसको उसी जगह छोड़ उसी का कपड़ा आप पहिन महल की तरफ रवाना हुए और वहां पहुंचे जहां चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा दस पांच लौंडियों के साथ बैठी हुई बातें कर रही थीं। तेज-सिंह भी लौंडो की सूरत बने हुए किनारे जा कर बैठ गये ॥

तेजसिंह को देख कर चपला बोली, "क्यों केतकी! जिस काम के लिये मैंने तुझको भेजा था क्या वह काम तू कर आई जो चुपचाप आ कर बैठ रही है?"

चपला की बात सुन कर कर तेजसिंह को मालूम हुआ कि जिस लौंड़ी को मैंने बेहोश किया है और जिसकी सूरत बन कर मैं आया हूं उसका नाम "केतकी" है ॥

नकली केतकी०। हां काम करने तो मैं गई ही थी मगर रास्ते में एक नया तमाशा देख तुमसे कुछ कहने के लिये लौट आई हूं ॥

चपला०। तैने क्या देखा कह ?

नकली केतकी०। सभों को हटा दो तो तुम्हारे और राज-कुमारी के सामने वह बात कह सुनाऊं ॥

सब लौंडियां हटा दी गईं, चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा रह गईं तब केतकी ने हँस के कहा कि "कुछ इनाम दो तो खुशखबरी सुनाऊं ॥"

चन्द्रकान्ता ने समझा कि शायद कुछ बीरेन्द्रसिंह की खबर लाई है, मगर हमने तो आज तक कभी बीरेन्द्रसिंह का नाम भी इसके सामने नहीं लिया यह मामला क्या है! कौन सी ऐसी खुशखबरी है जिस के सुनाने के लिये यह पहिले ही इनाम मांगती है!!

चन्द्रकान्ता ने केतकी से कहा, "हां हां, इनाम दूंगी तू

कह तो सही क्या खुशखबरी लाई है ?"

केतकी ने कहा कि "पहिले दे दे। तो कहूं नहीं तो जाती हूं।" यह कह कर उठ खड़ी हुई ॥

केतकी के नखरे को देख कर चपला से न रहा गया और कहा, "क्यों रे केतकी ! आज तुझको क्या होगया है कि ऐसी बढ़ बढ़ के बातें करती है ? लगाऊं दो लात उठ के !!"

केतकी ने कहा, "क्या मैं तुझ से कमजोर हूं जो तू लात लगावेगी और मैं छोड़ दूंगी ?"

अब तो चपला से न रहा गया और केतकी का झोंटा पकड़ने के लिये दौड़ी, यहां तक कि दोनों आपस में गुथ गईं ॥

चपला का हाथ इत्तिफाक से नकली केतकी की छाती पर जो पड़ा, वहां की सफाई देख घबड़ा उठी और झट अलग हो गई॥

नकली केतकी० । (हँस कर) क्यों भाग क्यों गईं आओ लड़ो ॥

चपला कमर से कटार निकाल सामने हुई और बोली, "अरे ऐयार ! सच बता तू कौन है ? नहीं अभी जान ले डालती हूं ॥"

इसका जवाब नकली केतकी ने चपला को कुछ न दिया और बीरेन्द्रसिंह की चीठी निकाल चन्द्रकान्ता के सामने रख दी । चपला की नजर भी उस चीठी पर पड़ी और खूब गौर से देखा, बीरेन्द्रसिंह के हाथ की लिखावट देख समझ गई कि यह तेजसिंह हैं क्योंकि सिवाय तेजसिंह के और किसी के हाथ बीरेन्द्रसिंह चीठी नहीं भेजेंगे ॥

यह सोच समझ कर चपला बहुत शर्माई और गर्दन नीची कर चुप हो रही मगर जी में तेजसिंह की सफाई और चालाकी की तारीफ करने लगी बल्कि तेजसिंह की मुहब्बत ने उसके दिल में जगह पकड़ ली ॥

चन्द्रकान्ता ने बड़ी मुहब्बत से वीरेन्द्रसिंह का पत्र पढ़ा, इसके बाद तेजसिंह से बातचीत करने लगी ॥

चन्द्रकान्ता० । क्यों मिजाज तो उनका अच्छा है ?

तेजसिंह० । मिजाज क्या खाक अच्छा होगा । खाना पीना सब छूट गया, रोते रोते आंखें सूज गईं, दिन रात तुम्हारा ध्यान है, बिना तुम्हारे मिले उनको कब आराम है, हजार समझाता हूं मगर कौन सुनता है, अभी कल ही तुम्हारी चीठी ले कर मैं गया था आज फिर उनकी हालत देख यहां आना पड़ा, कहते थे कि मैं खुद चलूंगा किसी तरह समझा कर यहां आने से रोका और कहा कि आज फिर मुझको जाने दो मैं जा कर वहां बन्दोवस्त कर आऊं तब तुमको ले चलूंगा, जिसमें किसी तरह का नुकसान न हो । खैर किसी तरह समझ गये और तुम्हारी चीठी का जवाब दे कर मुझे इधर विदा किया ॥

चन्द्रकान्ता० । अफसोस! तुम उनको अपने साथ न लाये । भला मैं उनका दर्शन तो कर लेती । देखो यहां क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों ने इतना ऊधम मचा रक्खा है कि कुछ कहा नहीं जाता, पिताजी को मैं कितना रोकती और समझाती हूं कि क्रूरसिंह के दोनों ऐयार मेरे दुश्मन हैं मगर महाराज कुछ नहीं सुनते क्योंकि क्रूरसिंह ने उनको अपने वश में कर रक्खा है । मेरी और कुमार की मुलाकात का हाल बहुत कुछ बना कर महाराज को न मालूम किस तरह पर समझा दिया है कि महाराज उसे सच्चों का बादशाह समझ गये हैं । वह हर दम महाराज का कान भरा करता है, अब वे मेरा कुछ भी नहीं सुनते, हां आज बहुत कुछ कहने का मौका मिला है क्योंकि आज मेरी प्यारी सखी चपला ने नाजिम को इस पिछवाड़े वाले बाग में

गिरफ़ार किया है। कल महाराज के सामने उसको ले जा कर तब कहूँगी कि आप अपने करसिंह की सचाई को देखिये, अगर मेरे पहरे पर मुकर्रर किया ही था तो बाग के अन्दर आने की इजाजत इसे किसने दी ?

यह कह कर चन्द्रकान्ता ने बिलकुल हाल नाजिम के गिरफ़ार होने का और बाग के तहखाने में कैद करने का तेजसिंह से कह सुनाया ॥

तेजसिंह चपला की चालाकी सुन कर हैरान हो गया और दिल में उसको प्यार करने लगा। कुछ सोचने के बाद बोला "चपला ने चालाकी तो खूब की मगर धोखा खा गई ॥"

यह सुन कर चपला हैरान हो गई कि या राम ! मैंने क्या धोखा खाया कुछ समझ में नहीं आता ! आखिर न रहा गया तेजसिंह से पूछा, "जल्दी बताओ मैंने क्या धोखा खाया ?" तेजसिंह ने कहा, "क्या तुम इस बात को नहीं जानती थीं कि नाजिम बाग में पहुंचा तो अहमद भी जरूर आया होगा ? फिर बाग ही में नाजिम को क्यों छोड़ दिया ? तुमको मुनासिब था कि जब उसको गिरफ्तार किया था तो महल में ला कर कैद करतीं या उसी वक्त महाराज के पास भेजवा देतीं, अब जरूर अहमद नाजिम को छुड़ा ले गया होगा ॥"

इतनी बात के सुनते ही चपला के होश उड़ गये और बहुत शरमिन्दा हो कर बोली, "सच है बड़ी भारी गलती हुई, इस का का किसी ने भी खयाल न किया ॥"

तेज० । और कोई क्यों खयाल करता ? तुम तो चालाक बनती हो, ऐयारा कहलाती हो, इसका खयाल तुमको होना चाहिये कि दूसरों को ? जा के देखो भी तो है या नहीं ॥

चपला दौड़ी हुई बाग की तरफ गई और तहखाने के पास

जा कर देखा तो दरवाजा खुला पड़ा है, बस फिर क्या था यकीन हो गया कि नाज़िम को अहमद छुड़ा ले गया। तहखाने के अन्दर जा कर देखा तो खाली पड़ा है। अपनी बेवक़ूफी पर अफसोस करती हुई लौट आई और बोली, "क्या कहूं सच-मुच अहमद नाजिम को छुड़ा ले गया।" तेजसिंह ने छेड़ना शुरू किया, "बड़ी ऐयारा बनी थीं, कहती है हम चालाक हैं, होशि-यार हैं, ये हैं, वो हैं, बस एक अदने ऐयार ने नाकों दम कर डाला॥"

चपला झुंझला उठी और चिढ़ कर बोली कि चपला नाम नहीं जो अबकी दोनों को गिरफ्तार कर इसी कमरे में ला कर बेहिसाब जूतियां न लगाऊं॥

तेजसिंह ने कहा, "बस तुम्हारी कारीगरी देखी गई, अब देखो मैं कैसे एक एक को गिरफ्तार कर अपने शहर में ले जा के कैद करता हूं॥"

इसके बाद तेजसिंह ने अपने आने का पूरा हाल चन्द्रकान्ता और चपला से कह सुनाया और यह भी बतला दिया कि फलानी जगह पर मैं केतकी को बेहोश कर के डाल आया हूं तुम जा कर उसे उठा लाना, उसके कपड़े मैं न दूंगा क्योंकि इसी सूरत से बाहर चला जाता हूं, और देखो सिवाय तुम तीनों आदमियों के यह सब हाल और किसी को न मालूम हो नहीं तो सब काम ही बिगड़ जायगा॥

चपला और चन्द्रकान्ता ने भी तेजसिंह से ताकीद की कि दूसरे तीसरे तुम जरूर यहां आया करो, तुम्हारे आने से ढाढ़स बनी रहती है॥

"बहुत अच्छा मैं ऐसा ही करूंगा" यह कह तेजसिंह चलने को तैयार हुए। चन्द्रकान्ता उन्हें जाते देख रोने लगी और बोली, "क्यों तेजसिंह क्या मेरी किस्मत में कुमार की मुला-

कात नहीं घड़ी है ?" इतना कहते ही गला भर आया और फूट फूट कर रोने लगी। तेजसिंह ने बहुत समझाया कि देखो यह सब बखेड़ा इसी वास्ते किया जाता है जिसमें तुम्हारे उनके हमेशे के लिये मुलाकात हो। अगर तुम ही घबड़ाओगी तो कैसे काम चलेगा? यह सब समझा बुझा कर चन्द्रकान्ता को चुप कराया और वहां से रवाना हो केतकी ही की सूरत में दर्वाजे पर आये, देखा कि दो चार प्यादे तो होश में आये हैं बाकी कोई चित्त पड़ा है, कोई औंधा पड़ा है, कोई उठा तो है मगर फिर भी झुका ही जाता है। नकली केतकी ने डपट कर दरबानों से कहा कि तुमलोग पहरा देते हो कि जमीन सूंघते हो? इतनी अफीम क्यों खाते हो कि आंखें नहीं खुलतीं और सोते हो तो मुर्दों से बाजी लगा कर। देखो तो मैं बड़ी रानी से कह कर तुम्हारी क्या दशा करवाती हूं॥

जो चोबदार होश में आ चुके थे केतकी की बात सुन कर सन्न हो गये और लगे खुशामद करने॥

"देखो केतकी! माफ करो आज एक नालायक सरकारी चोबदार ने आ कर धोखा दे ऐसा जहरीला तम्बाकू पिलाया कि हम लोगों की यह हालत हो गई। उस पाजी ने तो जान ही मारना चाहा था अल्लाह ने बचा दिया, नहीं तो मारने में क्या छोड़ा था, देखो रोज तो ऐसा नहीं होता था आज धोखा खा गये, हम हाथ जोड़ते हैं आगे कभी ऐसा देखना तो जो चाहे सजा देना॥"

नकली केतकी ने कहा, "आज तो मैं छोड़ देती हूं मगर खबरदार जो फिर कभी ऐसा हुआ है।" यह कहते हुए तेज-सिंह बाहर निकल गये। डर के मारे किसी ने यह भी न पूछा कि केतकी तू कहां जाती है॥

पांचवां बयान ।

अहमद ने जो बाग के एक पेड़ पर बैठा हुआ था देखा कि चपला ने नाजिम को गिरफ्तार कर लिया और महल में चली गई तो सोचने लगा कि चन्द्रकान्ता; चपला और चम्पा यही तीनों तो महल में गई हैं, नाजिम इन सभों के साथ नहीं गया, जरूर इसी बगीचे में कहीं कैद होगा । यह सोच कर अहमद पेड़ से उतर इधर उधर ढूँढने लगा, जब उस तहखाने के पास पहुंचा जिसमें नाजिम कैद था तो भीतर से चिल्लाने की आवाज़ आई जिसे सुन कर उसने पहिचान लिया कि नाजिम की आवाज़ है, तहखाने के किवाड़ खोल अन्दर गया, नाजिम को बँधा पा कर झट उसकी रस्सी खोल डाली और तहखाने से बाहर लाया और बोला, चलो जल्दी इस बगीचे के बाहर हो जावें तब सब हाल सुनें कि क्या हुआ ॥

नाजिम और अहमद बगीचे के बाहर आये और चलते २ आपुस में बातचीत करने लगे । नाजिम ने चपला के हाथ फँस जाने और कोड़ा खाने का पूरा पूरा हाल कहा ॥

अहमद० । भाई नाजिम ! पहिले जब तक चपला को हम लोग न पकड़ लेंगे तब तक कोई काम न होगा, क्योंकि चपला बडी चालाक है और धीरे २ चम्पा को भी इस काम में तेज़ कर रही है अगर वह गिरफ्तार न की जायगी तो थोडे दिनों में एक के दो हो जायंगे अर्थात् चम्पा भी इस काम में तेज हो कर चपला का साथ देने लायक हो जायगी ॥

नाजिम० । ठीक है, खैर आज तो कोई काम नहीं हो सकता मुश्किल २ जान बची, हां कलह पहिले यही काम करना है. अर्थात् जिस तरह बने चपला को पकड़ना और ऐसी जगह छिपाना कि

जहां पता ही न लगे और अपने ऊपर भी किसी को शक न हो॥

वे दोनों आपुस में धीरे २ बातें करते चले जाते थे, थोड़ी देर में महल के अगले दरवाजे के पास पहुंचे, देखा कि केतकी जो चन्द्रकान्ता की लौंडी है चली आती है॥

तेजसिंह ने जो केतकी के भेष में चले जाते थे नाजिम और अहमद को देखते ही पहिचान लिया और सोचने लगे कि भले मौके पर ये दोनों मिल गये हैं और अपनी भी सूरत अच्छी है इस समय इन दोनों से कुछ खेल करना चाहिये, बन पड़े तो तो दोनों को, नहीं तो एक को जरूर पकड़ना चाहिये॥

तेजसिंह जानबूझ कर इन दोनों के पास से हो कर निकले। नाजिम और अहमद ने केतकी को देखा कि कहीं चली जाती है, ये दोनों भी यह सोच कर उसके पीछे २ चले कि देखें कहां जाती है। नकली केतकी (तेजसिंह) ने फिर कर देखा और कहा, तुम लोग हमारे पीछे क्यों चले आते हो? जिस काम पर मुकर्रर हो उस काम को करो। अहमद ने कहा, "किस काम पर मुकर्रर हैं? क्या काम करें, तुम क्या जानती हो?" केतकी ने कहा कि मैं सब जानती हूं तुम वही काम करो जिसमें चपला के हाथ की जूतियां नसीब हों। जिस जगह तुम्हारी मददगार एक लौंडी तक नहीं है वहां तुम्हारे किये क्या होगा?

नाजिम और अहमद केतकी की बात सुन कर दङ्ग हो गये और सोचने लगे कि यह बड़ी चालाक लौंडी है अगर हमलोगों के मेल में आ जाय तो बड़ा काम निकले और इसकी बातों से मालूम होता है कि कुछ लालच देने पर जरूर हम लोगों का साथ देगी॥

नाजिम ने कहा, सुनो केतकी! हमलोगों का काम ही चालाकी करने का है, हमलोग अगर पकड़ जाने और मरने

मारने से डरें तो कभी काम न चले, और इसी की पैदा खाते हैं, बात बात में हजारों रुपये इनाम मिलते हैं, 'खुदा की मेहरबानी से तुम्हारे ऐसे मददगार भी मिल जाते हैं, जैसे आज तुम मिल गईं, अब तुमको मुनासिब है कि हमारी मदद करो। जो कुछ हमको मिलेगा उसमें हम तुम को भी हिस्सा देंगे॥

केतकी ने कहा "सुनो जी मैं उम्मीद के ऊपर जान देने वाली नहीं हूं वे कोई दूसरे होंगे, मैं तो पहिले ले कर काम करती हूं, हां इस वक्त अगर कुछ मुझको दो तो मैं अभी तेजसिंह को तुम्हारे हाथ गिरफ्तार करा देती हूं, नहीं तो जाओ जो तुम करते हो करो॥"

तेजसिंह की गिरफ्तारी का नाम सुनते ही इन दोनों की तबीयत खुश हो गई।नाजिम ने कहा, अगर आज तेजसिंह को पकड़ा दो तो जो कहो हम तुमको दें॥

केतकी०। एक हजार रुपये से कम मैं हरगिज न लूंगी। अगर मन्जूर हो तो लाओ रुपये मेरे सामने रक्खो॥

नाजिम०। अब इस वक्त आधी रात को मैं रुपये कहां से लाऊं, हां कल जरूर दे दूंगा॥

केतकी०। ऐसी बातें मुझसे न करो। मैं पहिले ही कह चुकी हूं कि मैं उधार सौदा नहीं करती, लो मैं जाती हूं॥

नाजिम०। (आगे से रोक कर) सुनो तो, तुम खफा क्यों होती हो? अगर तुमको हमलोगों का यातबार न हो तो तुम इसी जगह ठहरो हम लोग जा कर रुपये ले आते हैं॥

केतकी०। अच्छा एक आदमी यहां मेरे पास रहो और एक आदमी जाकर रुपये ले आओ॥

नाजिम०। अच्छा अहमद यहां तुम्हारे पास ठहरता है मैं जा कर रुपये ले आता हूं॥

यह कह कर नाजिम ने अहमद को तो उसी जगह छोड़ा और आप खुशी खुशी क्रूरसिंह की तरफ रुपये लेने को चला॥

नाजिम के चले जाने के थोड़ी देर बाद तक केतकी और अहमद इधर उधर की बातें करते रहे, बात करते करते केतकी ने दो चार इलायची बटुए में से निका कर अहमद को दीं और आप भी खाईं। अहमद को तेजसिंह के पकड़े जाने की उम्मीद में इतनी खुशी थी कि कुछ न सोच सका और इलायची खा गया, थोड़ी ही देर बाद उसका सर घूमने लगा, तब तो अहमद समझ गया कि बेशक यह कोई ऐयार (चालाक) है इसने धोखा दिया, झट कमर से खञ्जर खींच बिना कुछ कहे केतकी को मारा। केतकी तो पहिले ही से होशियार थी दांव बचा कर अहमद की कलाई पकड़ ली, अहमद कुछ न कर सका बल्कि बेहोश हो कर गिर पड़ा। तेजसिंह ने उस की मुश्कें बांध एक चादर में गठड़ी कस पीठ पर लाद नौगढ़ का रास्ता लिया। खुशी के मारे जल्दी जल्दी कदम बढ़ाता चला गया और यह भी खयाल था कि कहीं ऐसा न हो कि नाजिम आ जाय और पीछा करे॥

इधर नाजिम रुपये लेने के लिये गया तो सीधे क्रूरसिंह के मकान पर पहुंचा, उस वक्त क्रूरसिंह खूब गहरी नींद में सो रहा था। जाते ही नाजिम ने उसको जगाया, क्रूरसिंह ने पूछा, "क्या है जो इस वक्त तुमने आ कर मुझे उठाया?"

नाजिम ने क्रूरसिंह से अपनी पूरी कैफियत यानी चन्द्रकान्ता के बाग में जाना और गिरफ्तार हो कर कोड़े खाना, अहमद का छुड़ा लाना, फिर वहां से रवाना होना, रास्ते में केतकी से मिलना और हजार रुपये पर तेजसिंह को पकड़वा देने की बातचीत तै करना, सब खुलासा कह सुनाया। क्रूर-

सिंह ने नाजिम के पकड़े जाने का हाल सुन कर कुछ अफ-सोस तो किया मगर पीछे तेजसिंह के गिरफ्तार होने की उम्मीद सुन कर उछल पड़ा और बोला, "हजार रुपये देता हूं बल्कि मैं खुद तुम्हारे साथ चलता हूं।" यह कह कर हजार रुपये सन्दूक में से निकाल लिये और नाजिम के साथ हो लिया॥

जब नाजिम क्रूरसिंह को साथ ले कर वहां पहुंचा जहां अहमद और केतकी को छोड़ गया था, तो दोनों में से कोई भी न मिला, बस नाजिम तो सन्न होगया और उसके मुंह से झट यही बात निकल पड़ी कि "धोखा हुआ !!"

क्रूरसिंह। कहो नाजिम क्या हुआ ?

नाजिम०। क्या कहें केतकी नहीं कोई ऐयार था जिसने पूरा धोखा दिया और अहमद को तो ले ही गया॥

क्रूरसिंह०। खूब, तुम तो बाग में चपला के हाथ से पिट-ही चुके थे अहमद बाकी था सो वह भी इस वक्त कहीं जूते खाता होगा, चलो छुट्टी हुई॥

नाजिम ने शक मिटाने के लिये थोड़ी देर इधर उधर खोज की आखिर रोते पीटते दोनों ने घर का रास्ता लिया॥

छठवां बयान।

तेजसिंह को विजयगढ़ की तरफ विदा कर बीरेन्द्रसिंह अपने महल में आये, मगर किसी काम में उनका दिल न लगता था। हर दम चन्द्रकान्ता की याद में सर झुकाये बैठे रहना, कभी कभी जब निराला पाना तो चन्द्रकान्ता की तस्वीर अपने सामने रख कर बातें किया करना या पलङ्ग पर लेट

मुंह ढांप खूब रोना यही उनका काम था, अगर कोई कुछ पूछता तो बातें बना देते। बीरेन्द्रसिंह के बाप सुरेन्द्रसिंह को बीरेन्द्रसिंह का सब हाल मालूम था मगर क्या करते कुछ बस नहीं चलता था क्योंकि विजयगढ़ का राजा इन से बहुत जबर्दस्त और हमेशे इन पर हुकूमत रखता था॥

बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह को विजयगढ़ जाती दफे कह दिया था कि तुम आज ही लौट आना। रात बारह बजे तक बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की राह देखी, जब वह न आये इनकी घबराहट और भी ज्यादे हो गई, आखिर किसी तरह अपने को संभाला और मसहरी पर लेटे २ दर्वाजे की तरफ देखने लगे। सवेरा हुआ ही चाहता था कि तेजसिंह पीठ पर गट्ठर लादे आ पहुँचे, पहरे वाले इस हालत में तेजसिंह को देख हैरान थे मगर खौफ से कुछ कह नहीं सकते थे। तेजसिंह ने बीरेन्द्रसिंह के कमरे में पहुंच कर देखा कि अभी तक वह जाग रहे हैं। बीरेन्द्रसिंह तेजसिंह को देखते ही उठ खड़े हुए और बोले कि "भाई क्या खबर लाये?"

तेजसिंह ने वहां का सब हाल सुनाया, चन्द्रकान्ता की चीठी हाथ पर रख दी, अहमद की गठड़ी खोल के दिखा दिया और कहा, "यह चीठी है और यह सौगात॥"

बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और चीठी को कई मरतबे पढ़ कर आंखों से लगाने बाद फिर तेजसिंह से कहा, "सुनो भाई इस अहमद को ऐसी जगह रक्खो जहां किसी को मालूम न हो अगर जयसिंह को खबर लगेगी तो फसाद बढ़ जायगा॥"

तेजसिंह०। इस बातको भी मैं पहिले से सोच चुका हूं। मैं इस को एक पहाड़ की खोह में रख आता हूं जिसको मैं ही जानता हूं॥

यह कह कर तेजसिंह ने फिर अहमद की गठरी बांधी और एक प्यादे को भेज कर देवीसिंह नामी एक ऐयार को बुलवाया जो तेजसिंह का शागिर्द, दिली दोस्त और रिस्ते में साला भी था, ऐयारी के फन में तेजसिंह से किसी तरह कम न था। जब देवीसिंह आ गये तेजसिंह ने अहमद की गठड़ी अपनी पीठ पर लादी और देवीसिंह से कहा, "आओ हमारे साथ चलो तुमसे एक काम है।" देवीसिंह ने कहा, "गुरूजी यह गठड़ी मुझको दो मैं ले चलूं मेरे रहते यह काम आप को अच्छा नहीं लगता।" आखिर देवीसिंह ने वह गठड़ी अपनी पीठ पर लाद ली और तेजसिंह के पीछे पीछे चल निकला॥

ये दोनों शहर के बाहर हो जङ्गल पहाड़ियों में घूम घूमौवे पेचीले रास्तों से जाते २ दो कोस के करीब पहुंच कर एक अंधेरी खोह में घुसे, थोड़ी दूर चले जाने के बाद फिर रोशनी मिली। वहां जा कर तेजसिंह ठहर गये और देवीसिंह से बोले, "गठड़ी रख दो॥"

देवीसिंह०। (गठड़ी रख कर) गुरूजी यह तो अजीब जगह है! आज तक मैं कभी इस तरफ नहीं आया और कोई आ भी नहीं सकता, अगर कोई आवे भी तो यहां से जाना मुश्किल हो जाय॥

तेजसिंह०। सुनो देवीसिंह! इस जगह को सिवाय हमारे कोई नहीं जानता, तुमको अपना दिली दोस्त समझ कर ले आया हूं, तुम्हें अभी बहुत काम करना होगा॥

देवीसिंह०। मैं तुम्हारा ताबेदार हूं, तुम गुरू हो क्योंकि ऐयारी तुम्हीं ने मुझको सिखाई है अगर मेरी जान की भी जरूरत पड़े तो मैं देने को तैयार हूं॥

तेजसिंह ने कहा, "सुनो मैं जो बातें तुम से कहता हूं

उसको अच्छी तरह खयाल रक्खो। यह सामने जो पत्थर का दर्वाजा देखते हो इसका खोलना सिवाय मेरे कोई भी नहीं जानता या मेरे ओस्ताद जिन्होंने मुझको ऐयारी सिखाई है जानते थे। अब तो वे हैं नहीं मर गये, इस समय सिवाय मेरे कोई नहीं जानता और मैं तुमको इसका खोलना बतला देता हूं। जिस जिस को मैं पकड़ के लाया करूंगा इसी में ला कर कैद किया करना जिसमें किसी को मालूम न हो और कोई छुड़ा के भी न ले जा सके। इसमें कैद करने से कैदियों के हाथ पैर बांधने की भी कोई जरूरत नहीं रहेगी, सिर्फ हिफाजत के लिये एक खुलासी बेड़ी उनके पैर में डाल देनी पड़ेगी जिसमें धीरे धीरे चल फिर भी सकें। कैदियों के खाने पीने की भी फिक्र तुमको नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि इसके अन्दर एक छोटी सी नहर कुदरती है जिसमें बराबर पानी रहता है और मेवों के दरख्त भी बहुत हैं। इस कैदी को इसी में कैद करते हैं बाद इसके तुम महाराज से यह बहाना करके कि आज कल मैं बीमार रहता हूँ अगर एक महीने की छुट्टी मिले तो आबोहवा बदल आऊं महीने भर की छुट्टी लो। मैं तुम्हें कोशिश कर के छुट्टी दिला दूंगा तब तुम भेष बदल कर विजयगढ़ जाओ और बराबर वहां रह कर इधर उधर की खबर लिया करो, जो कुछ हाल हो मुझ से कहा करो, जब मौका देखो तो बदमाशों को गिरफ्तार कर के इसी जगह उनको ला कर कैद कर दिया करो।” और भी बहुत सी बातें देवीसिंह को समझाने बाद तेजसिंह दर्वाजा खोलने चले॥

दरवाजे के ऊपर एक बड़ा सा चेहरा शेर का बना हुआ था जिसके मुंह में हाथ बखूबी जा सकता था, तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा कि इस चेहरे के ंह में हाथ डाल कर इसकी

जुबान बाहर खींचो, देवीसिंह ने वैसा ही किया और हाथ भर जुबान खैंच लिया, उसके खैंचते ही एक आवाज हुई और दरवाजा खुल गया। अहमद की गठड़ी लिये हुए दोनों अन्दर गये। देवीसिंह ने देखा कि खूब खुलासी जगह बल्कि कोस भर का साफ मैदान, चारों तरफ ऊंची २ पहाड़ियां जिन पर किसी तरह आदमी चढ़ नहीं सकता, बीच में एक छोटा सा झरना पानी का बह रहा है और बहुत से जङ्गली मेवों के दरख्तों से अजब सोहावनी जगह मालूम होती है, चारों तरफ की पहाड़ियां नीचे से ऊपर तक छोटे २ करजनी (घुमची) बेर, मकोइचे और चिरौंजी वगैरह के घने दरख्तों और लताओं से भरी हुई हैं। बड़े २ ढोंके पत्थर के मस्त हाथी की तरह दिखाई देते हैं ऊपर से भी पानी गिर रहा है जिसकी आवाज बहुत ही भली मालूम होती है, हवा चलने से पेड़ों की घनघनाहट और पानी की आवाज़, बीच बीच में मोरों का शोर और भी दिल को खींचे लेता है। नीचे जो चश्मा पानी का पश्चिम से पूरब की तरफ घूमता हुआ बह रहा है उसके दोनों तरफ जामुन के पेड़ लगे हुए हैं और पक्के पक्के जामुन उस चश्मे के पानी में गिर रहे हैं। पानी भी चश्मे का इतना साफ है कि जमीन दिखाई देती है, कहीं हाथ भर कहीं कमर बराबर कहीं इससे भी ज्यादे था। कहीं २ पहाड़ों में कुदरती खोह बने हैं जिनके देखने से मालूम होता है कि ईश्वर ने यहां सैलानियों के रहने के लिये कोठड़ियां बना दी हैं। पहाड़ियां खुलासी हैं चारों तरफ की ढालवीं बनिस्बत नीचे के ऊपर से ज्यादे और उन पर बादल के टुकड़े छोटे छोटे शामियानों का मजा दे रहे थे। यह जगह ऐसी सुहावनी थी कि वर्षों रहने पर भी किसी की तबीयत कभी न घबड़ाते बल्कि खुशी मालूम हो॥

सुबह हो गई सूरज निकल आया। तेजसिंह ने अहमद की गठड़ी खोली और उसका बटुआ ऐयारी का और खञ्जर जो कमर में बंधा था ले लिया और एक बेड़ी उसके पैर में डालने बाद होशियार किया, जब अहमद होश में आया और अपने को अजब दिलचस्प मैदान में देखा तो उसको यकीन हो गया कि मैं मर गया हूं और फिरिश्ते मुझको यहां ले आये हैं। लगा कलमा पढ़ने। तेजसिंह को उसके कलमा पढ़ने पर हंसी आई बोले, "मियां साहब! आप हमारे कैदी हैं इधर देखिये।" अहमद ने तेजसिंह की तरफ देखा पहिचानते ही जान सूख गई, समझ गया कि तब न मरे थे तो अब मरे, बीबी केतकी की सूरत आंखों के सामने फिर गई, खौफ ने उसका गला ऐसा दबाया कि एक हर्फ भी मुंह से निकलने न दिया॥

अहमद को उसी मैदान में चश्मे के किनारे छोड़ दोनों ऐयार बाहर आये, तेजसिंह ने देवीसिंह से कहा कि "इस शेर की जुबान जो तुमने बाहर खींच ली है उसी के मुंह में डाल दो।" देवीसिंह ने वैसा ही किया। जुबान उसके मुंह में डालते ही बड़े जोर से दरवाजा बन्द हो गया और दोनों आदमी उस पेचीली राह से घर की तरफ रवाना हुए॥

पहर भर दिन चढ़ा होगा जब कि ये दोनों लौट कर बीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचे, बीरेन्द्रसिंह ने पूछा कि अहमद को कहां कैद करने ले गये थे जो इतनी देर लगी! तेजसिंह ने जवाब दिया कि एक पहाड़ी की खोह में कैद कर आया हूं आज आप को भी वह जगह दिखाऊंगा, अब मेरी राय है कि देवीसिंह थोड़े दिन भेष बदल कर बिजयगढ़ में रहें, ऐसा करने से मुझको बड़ी मदद मिलेगी, इसके बाद वे सब बातें भी बीरेन्द्रसिंह को कह सुनाईं जो खोह में देवीसिंह को समझाई

थीं और राय ठहरी थी, बीरेन्द्रसिंह ने उसे बहुत पसन्द किया॥

स्नान पूजा और मामूली कामों से फुरसत पा देवीसिंह को साथ लिये राजदर्बार में गये, देवीसिंह ने छुट्टी के लिये अर्ज किया, राजा देवीसिंह को चाहते थे छुट्टी देना मन्जूर न था; कहने लगे—'यहां ही हम तुम्हारी दवा करावेंगे।" आखिर बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह की सिफारिश से छुट्टी दी। दर्बार बर्खास्त होने पर बीरेन्द्रसिंह राजा के साथ महल में चले गये और तेजसिंह अपने बाप जीतसिंह के साथ घर आये, देवीसिंह को भी लाये और सफर की तैयारी करा के उनको रवाना कर दिया, जाती दफे और भी कई बातें समझा दीं॥

दूसरे दिन तेजसिंह अपने साथ बीरेन्द्रसिंह को उस घाटी में ले गये जहां अहमद को कैद किया था, कुमार उस जगह को देख कर बहुत ही खुश हुए और बोले, "भाई इस जगह को देख कर मेरे दिल में बहुत सी बातें पैदा होती हैं।" तेजसिंह ने कहा, "हां मैं आप से भी ज्यादा हैरान था मगर गुरूजी ने कुछ हाल यहां का समझा कर मेरी दिलजमई कर दी थी जो किसी दूसरे वक्त आपसे कहूंगा॥"

बीरेन्द्रसिंह इस बात को सुन कर और भी हैरान हुए और उस घाटी की कैफियत जानने के लिये जिद्द करने लगे आखिर तेजसिंह ने वहां का हाल जो कुछ अपने गुरू से सुना था कहा जिसे सुन बीरेन्द्रसिंह बहुत प्रसन्न हुए॥

तेजसिंह ने बीरेन्द्रसिंह से क्या कहा? वे इतने खुश क्यों हुए और वह घाटी कैसी थी! यह दूसरे वक्त मौके पर बयान किया जायगा॥

वे दोनों वहां से रवाना हो अपने मकान पर आये, कुमार ने कहा, "भाई अब तो मेरा हौसला बहुत बढ़ गया और यही जी

में आता है कि जयसिंह से लड़ जाइये।” तेजसिंह ने कहा, “हां तुम्हारा हौसला ठीक है मगर जल्दी करने से चन्द्रकान्ता की जान का खौफ है। क्यों घबड़ाते हो, देखो तो क्या होता है, कल मैं फिर जाऊंगा और मालूम करूंगा कि अहमद के पकड़ जाने से दुश्मनों की क्या कैफियत हुई, फिर दूसरी दफे आपको ले चलूंगा। बीरेन्द्रसिंह ने कहा “चाहे जो हो अबकी मैं जरूर चलूंगा इस तरह एकदम से डरपोक हो कर बैठ रहना मर्दों का काम नहीं है॥

तेजसिंह ने कहा, “ अच्छा चलिये हर्ज क्या है मगर एक काम होना जरूरी है, वह यह कि महाराज से पांच चार रोज के लिये शिकार की छुट्टी लीजिये और अपने सरहद पर खेमा डेरा डाल दीजिये वहां से कुल ढाई कोस चन्द्रकान्ता का महल रह जायगा तब बहुत तरह का सुबीता होगा।” इस बात को बीरेन्द्रसिंह ने भी पसन्द किया और वही राय पक्की ठहरी॥

कई दिन बाद बीरेन्द्रसिंह ने अपने बाप राजा सुरेन्द्रसिंह से शिकार के लिये आठ दिन की छुट्टी लेली और थोड़े से अपने दिली आदमियों को जो खास उन्हीं के खिदमती थे और उनको जान से ज्यादे चाहते थे साथले रवाना हुए। थोड़ा सा दिन बाकी था जब नौगढ़ और विजयगढ़ के सिवाने पर इन लोगों का डेरा पड़ गया, रात भर वहां मुकाम रहा और यह राय ठहरी कि पहिले तेजसिंह जा कर हाल चाल ले आवें॥

सातवां बयान ।

अहमद के पकड़े जाने से नाजिम बहुत उदास हो गया क्रूरसिंह को तो अपनी ही फिक्र पड़ गई कि कहीं तेजसिंह मुझको भी न पकड़ ले जाय, इस खौफ से वह हरदम चौकन्ना रहता था। महाराज जयसिंह के दर्बार में रोज जाता और बीरेन्द्रसिंह की तरफ से उनको भड़काया करता ॥

एक दिन नाजिम ने क्रूरसिंह को यह सलाह दी कि जिस तरह हो सके अपने बाप कुपथसिंह को मार डालो, उसके मरने बाद जयसिंह जरूर तुमको मन्त्री (वजीर) बनावेगा, उस वक्त तुम्हारी हुकूमत हो जाने से काम बहुत जल्द होगा। आखिर क्रूरसिंह ने जहर दिलवा कर अपने बाप को मरवा ही डाला। महाराज ने कुपथसिंह के मरने पर अफसोस किया और कई दिन दरबार में न आये, शहर में भी कुपथसिंह मन्त्री के मरने का गम छा गया ॥

क्रूरसिंह ने जाहिर में अपने बाप के मरने का बड़ा भारी मातम (गम) किया और बारह रोज के वास्ते अलग बिस्तरा जमाया, दिन भर तो अपने बाप को रोता मगर रात को अहमद के साथ बैठ कर चन्द्रकान्ता के मिलने व तेजसिंह और बीरेन्द्रसिंह के गिरफ्तार होने की फिक्र करता। इन्हीं दिनों बीरेन्द्रसिंह ने भी शिकार के बहाने विजयगढ़ की सरहद पर खेमा डाल दिया था, जिसकी खबर नाजिम ने क्रूरसिंह को पहुंचाई और कहा कि बीरेन्द्रसिंह जरूर चन्द्रकान्ता की फिक्र में आया है, अफसोस ! इस समय अहमद न हुआ नहीं तो बड़ा काम निकलता ! खैर देखा जायगा यह कह कर क्रूरसिंह

से बिदा हो बालादवी * के वास्ते चला गया ॥

तेजसिंह बीरेन्द्रसिंह से रुखसत हो बिजयगढ़ पहुंचे, मन्त्री के मरने और शहर भर में गम छाने का हाल ले कर बीरेन्द्रसिंह के पास लौट आये और यह भी खबर लाये कि दो रोज में सूतक निकल जाने पर महाराज जयसिंह क्रूर को अपना दीवान बनावेंगे ॥

बीरेन्द्रसिंह०। देखो क्रूर ने चन्द्रकान्ता के लिये अपने बाप को मार डाला, अगर राजा को भी मार डाले तो ऐसे आदमी का क्या ठिकाना है ॥

तेजसिंह०। सच है, वह नालायक जहां तक होगा राजा पर भी बहुत जल्द हाथ फेरेगा, अब हम भी दो तीन दिन चन्द्रकान्ता के महल में न जाकर दरबार ही का हाल चाल लेंगे, हां इस बीच में अगर मौका मिल जायगा तो देखा जायगा ॥

बीरेन्द्रसिंह०। चाहे जो हो आज तो हम ज़रूर चन्द्रकान्ता से मुलाकात करेंगे ॥

तेजसिंह०। आप जल्दी न करें, जल्दी ही सब कामों को बिगाड़ती है ॥

बीरेन्द्रसिंह०। चाहे जो हो मैं जरूर जाऊंगा ॥

तेजसिंह ने बहुत समझाया मगर चन्द्रकान्ता की जुदाई में उन को भला बुरा क्या सूझता था एक न माना और चलने को तैयार हो गये। तेजसिंह ने कहा, "चलिये जब आप की ऐसी ही मर्जी है तो हम क्या करें देखा जायगा ॥"

शाम के वक्त ये दोनों टहलने के लिये खेमे से बाहर निकले और अपने प्यादों से कह गये कि "अगर हमलोगों के आने में

---

* भेद लेने के लिये गश्त करना ॥

देर हो तो घबराना मत।" टहलते हुए दोनों विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए, कुछ रात गई होगी जब चन्द्रकान्ता के नजरबाग के पास पहुंचे जिस का हाल पहिले लिख चुके हैं॥

रात अँधेरी थी इस लिये इन दोनों को बाग में जाने के लिये कोई तरद्दुद न करना पड़ा, पहरे वालों को बचा कर कमन्द फेंका और दोनों उसके जरिये से बाग के अन्दर जा एक घने पेड़ के नीचे खड़े हो इधर उधर निगाह दौड़ा कर देखने लगे॥

बाग के बीचोबीच एक सङ्गमर्मर के साफ चिकने चबूतरे पर मोमी शमादान जल रहा है। चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा बैठी बातें कर रही हैं, चपला बातें भी करती जाती है और इधर उधर तेजी के साथ निगाह भी दौड़ा रही है॥

चन्द्रकान्ता को देख के बीरेन्द्रसिंह का अजब हाल हो गया, बदन में कपकपी होने लगी और बेहाश हो कर गिर पड़े। बीरेन्द्रसिंह के बेहोश हो कर गिर पड़ने से तेजसिंह को कोई तरद्दुद न हुआ, झट अपने ऐयारी के बटुये में से लखलखा निकाल सुंघा दिया और होश मे ला कर कहा, "देखिये दूसरे के मकान में आ कर आप को इस तरह बेसुध न होना चाहिये, अब आप अपने को सम्हालिये और इसी जगह ठहरिये मैं जा कर बातें कर आऊं तब आपको ले चलूं।" यह कह उनको उसी पेड़ के नीचे छोड़ उस जगह गये जहां चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा बैठी थीं। तेजसिंह को देखतेही चन्द्रकान्ता बोली, "क्यों जी इतने दिन कहां रहे? क्या इसी का नाम मुरौवत है, अबकी भी आये तो अकेले ही आये, वाह! ऐसा ही था तो चूड़ी पहिर लेते जवांमर्दी की डींग क्यों मारते हैं। जब उनकी मुहब्बत का यही हाल है तो मैं जी कर क्या करूंगी?"

यह कह कर चन्द्रकान्ता रोने लगी, हिचकी बंध गई। तेज-सिंह उसकी यह हालत देख बहुत घबड़ाये और बोले, "बस इसी को नादानी कहते हैं अच्छी तरह हाल भी न पूछा और लगीं रोने, ऐसाही है तो लो मैं अभी उन को ले आता हूं॥"

यह कह तेजसिंह वहां गये जहां बीरेन्द्रसिंह को छोड़ा था और उनको अपने साथ ले फिर चन्द्रकान्ता के पास आये। चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह के मिलने से बड़ी खुशी हुई, दोनों मिल कर खूब रोये यहां तक कि बेहोश हो गये, थोड़ी देर के बाद होश में आये और आपुस में शिकायत मिली मुहब्बत की बातें करने लगे॥

अब जमाने का उलट फेर देखिये—घूमता टोह लगाता नाजिम भी उसी बाग में पहुंचा और दूर से इन सभों की खुशी भरी हुई मजलिस देख जल मरा। तुरत ही लौट कर क्रूरसिंह के पास पहुंचा। क्रूरसिंह ने नाज़िम को घबड़ाया हुआ देख पूछा, "क्यों क्या है जो तुम इतने घबड़ाये हुए हो?"

नाजिम०। है क्या जो मैं सोचता था वही हुआ, यही वक्त चालाकी का है अगर अब भी कुछ न बन पड़ा तो बस तुम्हारी किस्मत फूट गई ऐसा ही समझना पड़ेगा॥

क्रूरसिंह०। तुम्हारी बातें तो कुछ समझ में नहीं आती खुलासा कहो क्या है?

नाजिम०। बस खुलासा यही है कि बीरेन्द्रसिंह बाग में चन्द्रकान्ता के पास पहुंच गये और इस समय हँसी खुशी के चहचहे उड़ रहे हैं॥

यह सुनते ही क्रूरसिंह की आंखों के आगे अँधेरा सा छा गया, दुनिया उदास मालूम होने लगी, बाप के जाहिरी गम में सर मुड़ाये बरसाती मेंडक बना बैठा था, तेरह रोज तक

कहीं बाहर जाना हो ही नहीं सकता था मगर इस खबर ने उसको अपने आपे में न रहने दिया, फौरन उठ खड़ा हुआ और उसी तरह नङ्गधड़ङ्ग औंधी हांड़ी सा सर ले महाराज जयसिंह के पास गया जयसिंह क्रूरसिंह को इस तरह आते देख हैरान हो बोले, "क्रूर! सूतक और बाप का गम छोड़ कर तुम्हारा इस तरह आना मुझको हैरानी में डाल रहा है॥"

क्रूरसिंह ने कहा, "महाराज हमारे बाप तो आप हैं, उन्होंने तो पैदा किया, परवरिश आपही की बदौलत होती है, जब आपही की इज्जत में बट्टा लगा तो मेरी जिन्दगी किस काम की है और मैं किस लायक गिना जाऊंगा॥

जयसिंह०। (गुस्से में आ कर) क्रूर! ऐसा कौन है जो हमारी इज्जत बिगाड़े?

क्रूर०। एक अदना आदमी॥

जयसिंह०। (दांत पीस कर) जल्द बताओ वह कौन है जिसके सिर पर मौत सवार है?

क्रूर०। बीरेन्द्रसिंह॥

जयसिंह०। उसकी क्या मजाल जो मेरा मुकाबला करे, इज्जत बिगाड़ना तो दूसरी बात है। तुम्हारी बात समझ में नहीं आती साफ साफ जल्द बताओ क्या है, बीरेन्द्रसिंह कहां है?

क्रूर०। आपके खास महल के बाग में॥

यह सुन महाराज का बदन मारे गुस्से के कांपने लगा, हुक्म दिया कि जल्द जा कर बाग को घेर लो मैं कोट की राह से वहां जाता हूं॥
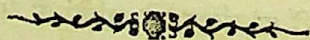
आठवां बयान ।

बीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता से मीठी मीठी बातें कर रहे हैं, चपला से तेजसिंह उलझ रहे हैं, चम्पा बेचारी इन लोगों का मुंह ताक रही है। अचानक एक काला कलूटा आदमी सिर से पैर तक आबनूस का कुन्दा, लाल लाल आखें, लँगोटा कसे उछलता कूदता बीच में आ खड़ा हुआ, पहिले ते ऊपर नीचे के दांत खोल तेजसिंह की तरफ दिखाया फिर बोला, "खबर भई राजा को तुमरी सुनो गुरुजी मेरे।" इसके बाद उछलता कूदता चला गया, जाती दफे चम्पा की टांग पकड़ थोड़ी दूर घसीटता ले गया, आखिर छोड़ दिया। यह हाल देख सब हैरान हो गये और डरे कि कहां से यह पिशाच आ गया, चम्पा बेचारी तो चिल्ला उठी, तेजसिंह उठ खड़े हुए और बीरेन्द्रसिंह का हाथ पकड़ के कहा, "चलो जल्दी उठो अब मौका बैठने का नहीं है।" चन्द्रकान्ता की तरफ देख कर बोले, "हमलोगों के जल्दी चले जाने का रञ्ज तुम मत करना और जब तक महाराज यहां न आवें इसी तरह सब को सब बैठी रहना॥"

चन्द्रकान्ता०। इतनी जल्दी करने का सबब क्या है? और यह कौन था जिसकी बात सुन कर भागना पड़ा?

तेज०। अब बात करने का मौका नहीं रहा॥

यह कह कर बीरेन्द्रसिंह को जबर्दस्ती उठाया और साथ ले कमन्द के जरिये बाग के बाहर हो गये॥

चन्द्रकान्ता को इस तरह बीरेन्द्रसिंह का चले जाना बहुत बुरा मालूम हुआ, आंखों में आंसू भर चपला से पूछा, "यह क्या तमाशा सा हो गया कुछ समझ में नहीं आता? उस

पिशाच को देख कर मैं कैसी डरी, मेरे कलेजे पर हाथ रखकर देखो, अभी तक धड़धड़ा रहा है, तुमने क्या खयाल किया ?"

चपला ने कहा, "कुछ समझ में नहीं आता, इतना जरूर है कि इस समय बीरेन्द्रसिंह के यहां आने की खबर महाराज को हो गई, वह जरूर आते होंगे।" चम्पा बोली, "न मालूम मुए को मुझ से क्या दुश्मनी थी !!"

चम्पा की बात पर चपला को हंसी आई है मगर रान थी कि यह क्या खेल हो गया ! थोड़ी देर तक इसी तरह की ताज्जुब भरी बातें होती रहीं इतने में चारो तरफ आदमियों के शोर गुल की आवाज आने लगी। चपला ने कहा, "रङ्ग बुरे नजर आने लगे, मालूम होता है कि यह बाग सिपाहियों से घेर लिया गया।" बात पूरी भी न करने पाई थी कि सामने से महाराज आते हुए दिखाई पड़े॥

देखते ही सब उठ खड़ी हुईं, चन्द्रकान्ता ने बढ़ कर पिता के आगे सिर झुकाया और कहा, "इस समय आपके यकायक आने से..." इतना कह चुप हो रही। जयसिंह ने कहा, "कुछ नहीं तुम्हारे देखने को जी चाहा चले आये, अब तुम लोग भी महल में जाओ यहां क्यों बैठी हैं, ओस पड़ती है तबीयत तुम्हारी खराब हो जयगी।" यह कह कर महल की तरफ रवाना हुए॥

चन्द्रकान्ता, चपला और चम्पा भी महाराज के पीछे पीछे महल में गईं। जयसिंह अपने कमरे में आये और जी में बहुत शरमिन्दः होकर कहने लगे, "देखो हमारी भोलीभाली लड़की को क्रूरसिंह झूठमूठ बदनाम करता है, न मालूम इस नालायक के जी में क्या समाई है ! वेधड़क उस बेचारी को ऐब लगा दिया, अगर लड़की सुनेगी तो क्या कहेगी ? ऐसे

शैतान का तो मुंह न देखना चाहिये, बल्कि सजा देनी चाहिये जिसमें फिर ऐसा कमीनापन न करे।" यह सोच हरीसिंह नामी एक चोबदार को हुक्म दिया कि बहुत जल्द क्रूर को हाजिर करो॥

हरीसिंह उसको खोजता पता लगाता हुआ बाग के पास पहुंचा जहां वह बहुत से आदमियों के साथ खुशी खुशी बाग को घेरे हुए था। हरीसिंह ने कहा, चलो महाराज ने आपको बुलाया है क्रूरसिंह घबड़ा उठा कि महाराज ने क्यों बुलाया! क्या चोर नहीं मिला! महाराज तो मेरे सामने महल में चले गये थे! हरीसिंह से पूछा, महाराज क्या करते हैं? उसने कहा कि अभी महल में से आये हैं गुस्से में भरे बैठे हैं आपको जल्दी बुलाया है। यह सुनते ही क्रूरसिंह की तो नानी मर गई, डरता कांपता हरीसिंह के साथ महाराज के पास आया॥

महाराज ने क्रूर को देखते ही कहा, "क्यों बे क्रूर! बेचारी चन्द्रकान्ता को इस तरह झूठमूठ बदनाम करना और हमारी इज्जत में बट्टा लगाना यही तेरा काम है? यह इतने आदमी जो बाग को घेरे हुए हैं अपने जी क्या कहते होंगे? नालायक, गदहा, पाजी, कैसे तैने कहा कि महल में बीरेन्द्र है?

मारे गुस्से के जयसिंह के होंठ कांप रहे थे, आखें लाल हो रही थीं, यह कैफियत देख कर क्रूरसिंह की जान सूख गई, घबड़ा के बोला मुझको तो नाज़िम ने खबर पहुंचाई थी जो आजकल महल के पहरे पर मुकर्रर है। यह सुन महाराज ने हुक्म दिया बुलाओ नाज़िम को। थोड़ीही देर में नाज़िम भी हाजिर किया गया, गुस्से में भरे हुए महाराज के मुंह से साफ आवाज नहीं निकलती थी, टूटे फूटे शब्दों में नाज़िम से पूछा, क्यों बे! तैने कैसी खबर पहुँचाई? उस वक्त डर के

मारे उसकी क्या हालत थी वही जानता होगा, जान से नाउम्मीद हो चुका था, डरता हुआ बोला, "मैंने तो आंख से देखा था, शायद किसी तरह भाग गया हो॥"

अब जयसिंह से गुस्सा बर्दाश्त न हो सका हुक्म दिया कि पचास कोड़े क्रूर को और दो सौ कोड़े नाज़िम को लगाये जायं। बस इतने ही पर छोड़ देता हूँ आगे फिर कभी ऐसा होगा तो सिर उतार लिया जायगा। क्रूर! तू वज़ीर होने लायक नहीं है॥

अब क्या था लगे दो तरफी कोड़े पड़ने, उन दोनों के चिल्लाने से मकान गूंज उठा मगर राजा का गुस्सा न गया। जब दोनों पर कोड़े पड़ चुके उनको महल के बाहर निकलवा दिया और महाराज आराम करने चले गये मगर मारे गुस्से के रात भर नींद न आई। क्रूरसिंह और नाजिम घर पर आये दोनों एक जगह बैठ कर लगे झगड़ने। क्रूर नाजिम से कहने लगा कि "तेरी बदौलत आज मेरी इज्ज़त मिट्टी में मिल गई, कल हम दीवान होते वह भी अब उम्मीद नहीं, मार खाई उसकी तकलीफ तो मैं ही जानता हूं यह सब तेरी ही बदौलत हुआ।" नाजिम कहता था "मैं तुम्हारी बदौलत मारा गया नहीं तो मुझको क्या काम था; जहन्नुम में जाती चन्द्रकान्ता और बीरेन्द्र, मुझे क्या पड़ी थी जो जूते खाता।" वे दोनों आपुस में पहरों झगड़ते रहे॥

इसी तरह क्रूरसिंह ने कहा, "हम तुम दोनों को लानत है अगर इतनी सजा पाने पर भी बीरेन्द्र को गिरफ्तार न किया॥"

नाजिम ने कहा, "इसमें कोई शक नहीं कि बीरेन्द्र अब रोज महल में आया करेगा क्योंकि इसी वास्ते वह अपना

डेरा सरहद पर ले आया है मगर अब कोई काम करने का हौसला नहीं पड़ता। कहीं फिर मैं देखूं और खबर करने पर वह निकल जाय तो अबकी जरूर ही जान से मारा जाऊंगा॥"

क्रूरसिंह ने कहा. "फिर कोई ऐसी तर्कीब करनी चाहिये जिसमें जान भी बचे और बीरेन्द्रसिंह को अपनी आंखों से महाराज जयसिंह महल में देख भी लें॥"

बहुत देर सोचने के बाद नाजिम ने कहा कि "चुनारगढ़ के महाराज शिवदत्तसिंह के दर्बार में एक पण्डित जगन्नाथ नामी ज्योतिषी हैं और वह रमल भी बहुत अच्छा जानते हैं। उनके रमल फेकने में इतनी तेजी है कि जब चाहो पूछ लो कि फलाना आदमी इस समय कहां है क्या करता है, कैसे पकड़ा जायगा, वह सब बतला देते हैं। अगर उनको मिलाया जाय और वह यहां आ कर और कुछ दिन रह कर तुम्हारी मदद करें तो सब काम ठीक हो जाय और चुनारगढ़ यहां से बहुत दूर भी नहीं है कुल तेईस ही कोस है, चलो हम तुम दोनों चलें और जिस तरह बन पड़े उन्हें ले आवें॥

आखिर क्रूरसिंह बहुत कुछ जवाहिरात अपने कमरमें बांध दो चालाक घोड़े मंगवा नाजिम के साथ उसी समय सवार हो चुनार* की तरफ रवाना हो गया और घर में सब-से कह गया कि अगर महाराज के यहां से कोई बुलाने आवे तो कह देना कि वह बहुत बीमार है॥

---

* इसका पुराना नाम चर्णादि या चर्णाद्रि है॥

नौवां बयान।

वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह बाग से बाहर हो अपने खेमे की तरफ रवाना हुए, जब खेमे में पहुंच गये मालूम हुआ कि आधी रात बीत गई है। तेजसिंह को कब चैन पड़ता था वीरेन्द्रसिंह को पहुंचा कर फिर लौटे और अहमद की सूरत बन क्रूरसिंह के मकान पर गये, क्रूरसिंह चुनारगढ़ की तरफ रवाना हो चुका था। जिन आदमियों को घर में हिफाजत के लिये छोड़ गया था और कह गया था कि अगर महाराज पूछें तो कह देना बीमार हैं, उन लोगों ने एकायक अहमद को देख कर कहा, "कहो अहमद तुम कहाँ थे?" नकली अहमद ने कहा, "मैं जहन्नुम की सैर करने गया या अब लौट आया हूँ, यह बताओ कि क्रूरसिंह कहां हैं?" सभों ने उसका पूरा पूरा हाल कह सुनाया और कहा कि अब चुनार गये हैं तुम भी जाते तो अच्छा होता॥

अहमद ने कहा, "हां मैं भी जाता हूं अब घर न जाऊंगा सीधे चुनार ही पहुंचता हूं।" यह कह वहां से रवाना हो अपने खेमे में आये और वीरेन्द्रसिंह से सब हाल कहा, बाकी रात आराम किया सवेरा होते ही नहा धो कुछ भोजन कर सूरत बदल विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। नङ्गे सिर, हाथ पैर मुंह पर धूल डाले रोते पीटते महाराज जयसिंह के दर्बार में पहुंचे, जिसे देख सब हैरान हो गये, महाराज ने मुंशी से से कहा, "पूछो कौन है और क्या चाहता है?"

तेजसिंह ने कहा, "मैं क्रूरसिंह का नौकर हूं मेरा नाम रामलाल है महाराज से बागी होकर क्रूरसिंह चुनारगढ़ के राजा के पास चला गया है मैंने मना किया था कि महाराज

का नमक खाकर ऐसा न करना चाहिये तिस पर मुझको खूब मारा और जो कुछ मेरे पास था छीन लिया! हाय रे! मैं बिल्कुल लुट गया, एक कौड़ी भी नहीं रही, मैं क्या खाऊंगा, घर कैसे पहुंचूंगा, लड़के बाले तीन बरस की कमाई खोजेंगे कि रजवाड़े की कमाई क्या लाये हो, मैं उनको क्या दूंगा! दोहाई महाराज की दोहाई दोहाई दोहाई!!"

मुश्किल से सभों ने चुप कराया। महाराजको बड़ा गुस्सा आया हुक्म दिया कि देखो क्रूरसिंह कहां है, चोवदार खबर लाया कि बहुत बीमार हैं उठ नहीं सकते। रामलाल (तेजसिंह) बोला, "दोहाई महाराज को! यह भी उन्हीं की तरफ मिल गया है झूठ बोलता है, मुसलमान सब उसके दोस्त हैं दोहाई महाराज की! खूब तहकीकात की जाय।" महाराज ने मुन्शी से कहा, "तुम खुद जाकर पता लगाओ यह क्या मामला है" थोड़ी देर बाद मुन्शीजी वापस आये और बोले महाराज, क्रूरसिंह घर में तो नहीं है घर वाले पता नहीं बताते कि कहां गया है। महाराज ने कहा, जरूर चुनारगढ़ गया होगा अच्छा उसके यहां से किसी प्यादे को बुलाओ। हुक्म पाते ही चोबदार गया और एक बदकिस्मत प्यादे को पकड़ लाया। महाराज ने पूछा कि क्रूर कहां गया है? प्यादे ने ठीक पता नहीं दिया। रामलाल ने कहा कि "दोहाई महाराज की बिना मार खाये यह न बतावेगा।" महोराज ने मारने का हुक्म दिया, पिटने के पहिले ही उस बदनसीब ने बतला दिया कि चुनार गया है॥

महाराज जयसिंह को क्रूर का हाल सुन कर जितना गुस्सा आया बयान से बाहर है, हुक्म दिया:—

(१) क्रूरसिंह के घर के सब औरत मर्द घण्टे भर के

अन्दर जान बचा हमारी सरहद के बाहर चले जायं ॥

(२) उसका मकान लूट लिया जाय ॥

(३) उसकी दौलत में से जितना रुपया अकेला रामलाल उठा लेजा सके लेजाय, बाकी सरकारी खजाने में दाखिल किया जाय ॥

(४) रामलाल अगर नौकरी क़बूल करे तो दी जाय ॥

हुक्म होतेही सब के पहिले रामलाल कूरसिंह के घर पहुंचा और महाराज के मुंशी से जो हुक्म की तामील करने गया था रामलाल ने कहा, "पहिले मुझको रुपये देदो कि उठा ले जाऊं और महाराज को आशीर्वाद करूं, बस जल्दी दो मुझ गरीब को मत सताओ।" मुंशी ने कहा, अजब आदमी है इसको अपनी ही पड़ी है ठहर जा जल्दी क्यों करता है। नकली रामलाल ने चिल्ला कर कहना शुरू किया, "दोहाई महाराज की मेरे रुपये मुन्शी नहीं देता।" यह कहता हुआ महाराज की तरफ चला। मुन्शी ने कहा, "लेओ कहां जाते हो, भाई पहिले इसको दे दो ॥"

रामलालने कहा, "हत्तेरे की मैं चिल्लाता नहीं तो सभी रुपै डिकार जाता।" इस पर सब हंस पड़े, मुंशी ने दो हजार रुपै आगे रखवा दिये और कहा, "ले ले जा।" रामलाल ने कहा, "वाह वाह कुछ याद है ? महाराज ने क्या हुक्म दिया है इतना तो मेरे जेब में आजायगा, मैं उठा के क्या लेजाऊंगा।" मुंशी झुंझला उठा और नकली रामलाल को खजाने के सन्दूक के पास लेजा कर खड़ा कर दिया और कहा, "उठा देखें कितना उठाता है!" देखते देखते उसने दस हजार रुपै उठा लिये, सिर पर, बटुये में, कमर में, कुछ जेब में यहाँ तक कि मुंह में भी रुपै भर लिये और रास्ता लिया, सब हंसने लगे, "आदमी

नहीं इसे राक्षस समझना चाहिये ॥"

महाराज के हुक्म की तामील होगई, घर लूट लिया गया, औरत मर्द सभों ने रोते पीटते चुनार का रास्ता पकड़ा ॥

तेजसिंह रुपया लिये हुए बीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचे और बोले, "भाई आज तो मुनाफा कर लाये, मगर यार माल शैतान का है इसमें कुछ आप भी मिला दीजिये जिसमें पाक हो जाय।" बीरेन्द्रसिंह ने पूछा, "यह तो बताओ कि कहां से लाये हो?" उन्होंने सब हाल कहा। बीरेन्द्रसिंह ने कहा, जो मेरे पास यहां है मैंने सब दिया, तेजसिंह ने कहा, "मगर शर्त यह है कि इससे कम न हो क्योंकि आपका मरतबा उससे कहीं ज्यादे है।" बीरेन्द्रसिंह ने कहा, "इस वक्त कहां से लावें?" तेजसिंह ने जवाब दिया, "तमस्सुक लिख दो।" कुमार हंस पड़े और उंगली से हीरे की अंगूठी उतार के दे दी। तेजसिंह ने खुश होकर ले ली और कहा, "परमेश्वर आपकी मुराद पूरी करे। अब हम लोगों को भी यहाँ से अपने घर चलना चाहिये क्योंकि अब मैं भी चुनार जाऊंगा, देखूं शैतान का बच्चा वहां जा कर क्या बन्दोबस्त करता है॥"

दसवां बयान।

क्रूरसिंह की तबाही का हाल शहर भर में फैल गया, महारानी रत्नगर्भा तथा चन्द्रकान्ता ने भी सुना, कुमारी और चपला को बड़ी खुशी हुई, जब महाराज महल में गये हंसी हंसी में महारानी ने क्रूरसिंह का हाल पूछा। महाराज ने कहा, "वह बड़ा बदमाश और झूठा था मुफ्त में लड़की को बदनाम किया॥"

महारानी ने कहा, "आपने क्या सोच कर बीरेन्द्र का आना

जाना बन्द कर दिया ? देखिये यह वही बीरेन्द्र है जो लड़कपन से जब चन्द्रकान्ता पैदा भी नहीं हुई थी यहां आता रहा और कई दिनों तक रहा करता था, जब यह पैदा भई तो दोनों बराबर खेला करते और इसी सबब से इस दोनों की आपुस में मुहब्बत भी बढ़ गई, सिवाय इसके यह भी नहीं मालूम होता था कि आप और राजा सुरेन्द्रसिंह कोई दो हैं वो नौगढ़ या विजयगढ़ दो राजबाड़ा है, सुरेन्द्रसिंह भी बराबर आप ही के कहे मुताबिक चला करते थे, कई दफे आप कह चुके हैं कि 'चन्द्रकान्ता की शादी वीरेन्द्र के साथ कर देनी चाहिये।' ऐसे मेल मुहब्बत और आपुस के बनाव को इस दुष्ट क्रूर ने बिगाड़ दिया और दोनों के चित्त में रञ्ज पैदा कर दिया ॥"

महाराज ने कहा, "मैं आप हैरान हूं कि मेरी बुद्धि को क्या हो गया था । मेरी समझ पर पत्थर पड़ गये, कौन सी बात ऐसी थी जिसके सबब से मेरे दिल से बीरेन्द्र की मुहब्बत जाती रही हाय ! इस क्रूर ने तो गजब ही किया इसके निकल जाने पर अब मुझको मालूम होता है ।" महारानी ने कहा, "देखें अब वह चुनार में जा कर क्या करता है ! जरूर महाराज शिवदत्त को उभाड़ेगा और एक नया बखेड़ा पैदा करेगा ।" महाराज ने कहा, "खैर देखा जायगा, परमेश्वर मालिक है, उस नालायक ने तो अपने भरसक बुराई में कुछ कमी नहीं की॥"

यह कह महाराज महल के बाहर चले गये, अब यह फिक्र हुई कि किसी को दीवान बनाना चाहिये नहीं तो काम न चलेगा, कई दिन तक सोच कर हरदयालसिंह नामी नायब दीवान को मन्त्री की पदवी और खिलअत दी गई । यह शख्स बड़ा ईमानदार, नेकबख्त, रहमदिल और साफ तबीयत का था, कभी किसी का दिल इसने नहीं दुखाया था ॥

ग्यारहवां बयान ।

क्रूरसिंह को यही फिक्र थी जिस तरह बने वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को मार डालना चाहिये बल्कि नौगढ़ का राज्य ही गारत कर देना चाहिये। नाजिम को साथ लिये हुए चुनार पहुँचा और महाराज शिवदत्तसिंह के दरबार में हाजिर होकर नजर दिया। महाराज इसे बखूबी जानते थे इसलिये नजर ले कर हाल पूछा। क्रूरसिंह ने कहा, "महाराज जो कुछ हाल है मैं एकान्त में कहूंगा ॥"

दरबार बर्खास्त हुआ, शाम को तखलिये (एकान्त) में महाराज ने क्रूर को बुलाया और हाल पूछा। उसने जितनी शिकायत महाराज जयसिंह की करते बनी की और यह भी कहा कि लश्कर का इन्तजाम आज कल बहुत खराब है, मुसलमान सब हमारे मेल में हैं अगर आप चाहें तो इस समय बिजयगढ़ का फतह कर लेना कोई मुश्किल बात नहीं है। चन्द्रकान्ता महाराज जयसिंह की लड़की भी जो खूबसूरती में अपना सानी नहीं रखती आप ही के हाथ लगेगी।

ऐसी ऐसी बहुत सी बातें कर उसने महाराज शिवदत्त को पूरे तौर से भड़काया, महाराज ने कहा, "हमको लड़ने की अभी कोई जरूरत नहीं पहिले हम अपने ऐयारों से काम लेंगे फिर जैसा होगा देखा जायगा, मेरे यहां छः ऐयार हैं जिनमें से चार ऐयार और पंडित जगन्नाथ ज्योतिषी को तुम्हारे साथ कर देते हैं, उन सभों को ले कर तुम जाओ देखो तो ये लोग क्या खेल करते हैं पीछे जब मौका होगा हम भी लश्कर ले कर पहुँच जायंगे ॥"

उन ऐयारों के नाम ये थे। भगवानदत्त, रामनारायण,

पन्नालाल, पण्डित बद्रीनाथ, चुन्नीलाल, और घसीटासिंह। महाराज ने भगवानदत्त, पण्डित बद्रीनाथ, पन्नालाल, राम नारायण इन चारों को जो मुनासिब था कहा और इन लोगों को क्रूरसिंह के हवाले किया। अभी ये लोग बैठे ही थे कि एक चोबदार ने आ कर अर्ज किया, "महाराज ड्योढी पर का आदमी फरियादी खड़े हैं और कहते हैं कि हम क्रूरसिंह के रिश्तेदार हैं, उनके चुनार जाने का हाल सुन कर महाराज जयसिंह ने घरबार लूट लिया और हम लोगों को निकाल दिया। उन लोगों के लिये क्या हुक्म होता है ?"

यह सुन क्रूरसिंह के तो होश उड़ गये, महाराज शिवदत्त ने सभों को अन्दर बुलाया और हाल पूछा, जो कुछ हुआ था उन्होंने बयान किया। क्रूरसिंह और नाजिम की तरफ देख कर कहा, "अहमद भी तो आपके पास आया है!" नाजिम ने पूछा कि अहमद कहां है यहां तो नहीं आया। सभों ने कहा, "वाह ! वहां तो घर पर गया था और यह कह कर चला आया कि मैं भी चुनार जाता हूं॥"

नाजिम ने कहा, " बस बस मैं समझ गया वह जरूर तेजसिंह होगा इसमें कोई शक नहीं उसी ने महाराज को भी खबर पहुंचाई होगी, यह सब फसाद उसी का है।" यह सुन क्रूरसिंह रोने लगा, महाराज शिवदत्त ने कहा, "जो होना था सो हो गया, तुम सोच मत करो देखो इसका बदला जयसिंह से मैं लेता हूं तुम इसी शहर में रहो, हम्माम के सामने वाला मकान तुमको दिया जाता है उसी में अपने कुटुम्ब को रक्खो, रुपये की मदद सर्कार से हो जायगी॥"

क्रूरसिंह ने महाराज के हुक्म मुताबिक उसी मकान में अपना डेरा जमाया। कई दिन बाद दरबार में हाजिर होकर

महाराज से बिजयगढ़ जाने के लिये अर्ज किया, इन्तजाम तो हो ही चुका था महाराज ने मय चारों ऐयारों और पण्डित जगन्नाथ के क्रूर और नाजिम को बिदा किया। ऐयार लोग भी अपने अपने सामान से लैस होगये, कई तरह के कपड़े लिये बटुआ ऐयारी का अपने अपने गले में लटका लिया, खञ्जर बगल में लिया, ज्योतिषी जी ने भी पोथी पत्रा रमल पटड़ी और कुछ ऐयारी का सामान ले लिया क्योंकि यह थोड़ी बहुत ऐयारी भी जानते थे। अब यह शैतानों का झुन्ड बिजयगढ़ को तरफ रवाना हुआ, इन लोगों का इरादा नौगढ़ जाने का भी था देखिये कहां जाते हैं और क्या करते हैं॥

बारहवां बयान

बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह नौगढ़ के किले से बाहर निकल बहुत आदमियों को साथ लिये चन्द्रप्रभा नदी के किनारे बैठे शोभा देख रहे हैं। एक तरफ से चन्द्रप्रभा दूसरी तरफ से करमनाशा नदी बहती हुई आई है और किले के नीचे दोनों का सङ्गम होगया है जहाँ कुमार और तेजसिंह बैठे हैं। नदी बहुत चौड़ी नहीं है, उस पार साखू का बड़ा भारी घना जङ्गल है जिसमें हजारों मोर लंगूर अपनी २ बोलियों और किलकारियों से जंगल की शोभा बढ़ा रहे हैं, कुंअर बीरेन्द्रसिंह उदास बैठे हैं, चन्द्रकान्ता के बिरह में मोरों की आवाज तीर सी लगती है, लंगूरों की किलकारी बज्र सी मालूम होती है धीमी धीमी शाम की ठण्ढी ठण्ढी हवा लू का काम करती है, तेजसिंह का धीरे धीरे समझाना मानों जख्म पर नमक छिड़कता है। चुपचाप बैठे नदी की तरफ देख उसासें ले रहे

हैं। इतने में एक साधू रामरज से रंगी हुई कफनी पहरे रामानन्दी तिलक लगाये, हाथ में खंजरी लिये कुछ दूर नदी के किनारे यह गाता हुआ दिखाई पड़ाः—

"गए चुनार क्रूर बहुरङ्गी लाये चार चितारी* ।
सङ्ग में उनके पण्डित देवता, जो हैं सगुन बिचारी ॥
इनसे रहना बहुत सम्हल के, रमत चले अतिकारी ।
क्या बैठे हौ तुम बेफिकरे, काम करो कोई भारी ॥

यह आवाज कान में पड़ते ही तेजसिंह ने गौर के साथ उस तरफ देखा, वह साधू भी इन्हीं की तरफ मुंह कर के गा रहा था। तेजसिंह को अपनी तरफ देखते देख दाँत निकाल कर दिखला दिया और उठ के चलता बना। बीरेन्द्रसिंह अपनी चन्द्रकान्ता के ध्यान में डूबे हैं, इन सब बातों का कोई खबर नहीं जानते कि कौन गा रहा है किधर से आवाज आ रही है, एक टक नदी की तरफ देख रहे हैं। तेजसिंह ने बाजू पकड़ कर हिलाया,कुमार चौंक पड़े, तेजसिंह ने धीरे से पूछा, "कुछ सुना?" कुमार ने कहा, "क्या? नहीं कहो।" तेजसिंह ने कहा, "उठिये अपनी जगह पर चलिये जो कुछ कहना है एकान्त में कहेंगे।" बीरेन्द्रसिंह सम्हल गये और उठ खड़े हुए। दोनों आदमी धीरे धीरे किले में आये और अपने कमरे में जा कर बैठे ॥

अब निराला है सिवाय इन दोनों के इस समय इस कमरे में कोई नहीं है, बीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से पूछा, "कहो क्या कहने को थे?" तेजसिंह ने कहा, "सुनिये यह तो आपको

---

* चितारी-ऐयार।

मालूम ही हो चुका है कि क्रूरसिंह महाराज शिवदत्त से मदद लेने चुनार गया है उसके वहां जाने का क्या नतीजा निकला वह भी सुनिये, वहां से महाराज शिवदत्त ने चार ऐयार और एक ज्योतिषी को उसके साथ कर दिया है, वह ज्योतिषी बहुत अच्छा रमल फेकता है। नाजिम पहिले ही से उनके साथ है अब इन लोगों की मण्डली भारी हो गई, ये लोग कम फसाद नहीं करेंगे, इसलिये मैं अर्ज करता हूं कि आप सम्हले रहिये मैं अब काम की फिक्र में जाता हूं, मुझे यकीन है कि उन ऐयारों में से कोई इस तरफ भी आवेगा और आपके फंसाने की फिक्र करेगा। आप होशियार रहिये, सिवाय मेरे और किसी के साथ आप कहीं न जाइयेगा, किसी का दिया हुआ कुछ न खाइयेगा, बल्कि इत्र फूल वगैरह भी कुछ कोई दे तो न सूंघियेगा और इस बात का भी खयाल रखियेगा कि मेरी सूरत बन के भी वे लोग आवें तो ताज्जुब नहीं। इस तरह आप उनको पहिचान लीजियेगा, देखिये मेरी आंख के अन्दर यह नीचे की तरफ एक तिल है जिसको कोई नहीं जानता आज से ले कर दिन में चाहे जै दफे हो जब मैं आप के पास आया करूंगा इसी तिल को छिपे तौर से दिखला कर मैं अपना परिचय आपको दिया करूंगा अगर यह काम मैं न करूं तो समझ लीजियेगा कि धोखा है॥"

और भी बहुत सी बातें समझाईं जिनको खूब गौर के साथ कुंवर ने सुना और पूछा, "तुमको कैसे मालूम हुआ कि चुनार से इतनी मदद उसको मिली?" तेजसिंह ने कहा, "किसी तरह मुझको मालूम हो गया इसका हाल भी कभी आप पर जाहिर हो जायगा, अब मैं रुखसत होता हूं। राजा साहब या मेरे पिता मुझे पूछें तो जो मुनासिब हो सो कह

दीजियेगा।" पहर रात रहे तेजसिंह ऐयारी के सामान से लैस हो रवाना हुए॥

तेरहवां बयान।

चपला बालादवी के लिये मरदाने भेष में शहर के बाहर निकली, आधी रात बीत गई थी। साफ छिटकी हुई चांदनी देख यकायक जी में आया कि नौगढ़ चलूं और तेजसिंह से मुलाकात करूं, इसी खयाल में वह नौगढ़ की तरफ कदम बढ़ा कर चली। तेजसिंह अपनी असली सूरत से ऐयारी के सामान से सजे हुए विजयगढ़ की तरफ चले जाते थे इत्तफाक से दोनों की रास्ते ही में मुलाकात हो गई। चपला ने पहिचान लिया और नजदीक जा कर अपनी असली बोली में पूछा, "कहिये आप कहां जाते हैं?"

तेजसिंह ने बोली से चपला को पहिचाना और कहा, "वाह वाह क्या मौके पर मिल गई, नहीं तो मुझे बड़ी तरद्दुद तुम्हारे मिलने के लिये करनी पड़ती क्योंकि बहुत सी बातें जरूरी कहनी थीं आओ इसी जगह बैठें॥"

एक साफ पत्थर की चट्टान पर दोनों बैठे गये, चपला ने कहा, कहो वह कौन सी बात है? तेजसिंह ने कहा, "सुनो यह तो तुम जानती ही हो कि क्रूर चुनार गया है, अब वहां का हाल सुनो कि चार ऐयार और एक पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी को महाराज ने मदद के लिये उसके सङ्ग कर दिया है, वे लोग यहां पहुँच गये हैं, उनकी मण्डली भारी हो गई और इधर हम तुम दो ही हैं, इस लिये अब हम दोनों को भी होशियारी करनी पड़ेगी, ये ऐयार लोग महाराज जयसिंह को

भी पकड़ ले जायं तो ताज्जुब नहीं और चन्द्रकान्ता के वास्ते तो आये ही हैं इन्हीं सब बातों से तुम्हें होशियार करने मैं चला था।" चपला ने पूछा, "फिर अब क्या करना चाहिये? जो कहो सो करें।" तेजसिंह ने कहा, "एक काम करो, मैं हरदयालसिंह नये दीवान को पकड़ता हूँ और उसकी सूरत बन कर दीवानी का काम करूंगा। ऐसा करने से फौज और सब नौकर प्यादे मेरे हुक्म में रहेंगे और मैं बहुत कुछ कर सकूंगा, तुम भी महल में होशियारी के साथ रहा करना और जहां तक हो सके एक दफे रोज मुझसे मिला करना, मैं दीवान तो बना ही रहूँगा मिलना कुछ मुश्किल न होगा बराबर असली सूरत में मेरे घर पर अर्थात् हरदयाल के यहां मिला करना मैं उसके घर में भी उसी की तरह रहा करूंगा। इसके अलावे और भी बहुत सी बातें समझाईं॥"

थोड़ी देर तक चुहल रही, इसके बाद चपला अपने महल की तरफ रुखसत हुई, तेजसिंह ने बाकी रात उसी जङ्गल में काटी सुबह होते ही अपनी सूरत एक गन्धी की बना कई शीशी इत्र की कमर में और दो एक हाथ में ले विजयगढ़ की गलियों में घूमने लगे, दिन भर इधर उधर फिरते रहे, शाम के वक्त मौका देख हरदयालसिंह के मकान पर पहुँचे, देखा कि दीवान साहब लेटे हैं और दो चार दोस्त सामने बैठे गप्पें उड़ा रहे हैं। बाहर भीतर खूब सन्नाटा है॥

तेजसिंह इत्र की शीशियां लिये सामने जा खड़े हुए, सलाम कर बैठ गये और कहा, "मैं लखनऊ का रहने वाला गन्धी हूं, आपका नाम सुन कर आप ही के लायक अच्छे २ इत्र लाया हूं।" यह कह शीशी खोल फाहा बना २ देने लगे। हरदयालसिंह बहुत रहमदिल आदमी थे इत्र सूंघने लगे और फाहा

सूंघ २ अपने दोस्तों को भी देने लगे, थोड़ी ही देर में हरदयालसिंह और उनके दोस्त बेहोश हो कर जमीन पर लेट गये। तेजसिंह ने सभों को उसी तरह छोड़ हरदयालसिंह की गठड़ी बांध पीठ पर लादी और मुंह पर कपड़ा ओढ़ नौगढ़ का रास्ता लिया, राह में अगर कोई मिला भी तो धोबी समझ कर कुछ न बोला॥

शहर के बाहर निकल गए और बहुत तेजी के साथ चल कर उस खोह में पहुंचे जहां अहमद को कैद किया था, किवाड़ खोल अन्दर गये और उसी तरह बेहोश दीवान साहब को वहां रख अंगूठी मोहर की उनकी उंगली से निकाल ली, कपड़े भी उतार लिये और बाहर चले आये। बेड़ी डालने और होश में लाने की कोई जरूरत नहीं देखी। तुरत लौटे और बिजयगढ़ आ हरदयालसिंह की सूरत बन उन के घर पहुंचे, इधर दीवान साहब के भोजन करने का वक्त आ पहुंचा, लौंडी बुलाने आई देखा कि दीवान साहब तो हैं नहीं उनके पांच चार दोस्त गाफिल पड़े हैं, उसे बड़ा ताज्जुब हुआ और चिल्ला उठी, उस की चिल्लाहट सुन नौकर प्यादे आ पहुँचे और यह तमाशा देख सब हैरान हो गये, दीवान साहब को इधर उधर ढूंढा मगर कहीं पता न लगा॥

तीन पहर रात गुजर गई उनके दोस्त सब जो बेहोश पड़े थे वह भी होश में आये मगर अपनी हालत देख २ हैरान थे, लोगों ने पूछा, आपलोग कैसे बेहोश हो गये और दीवान साहब कहां हैं? उन्होंने कहा, एक गन्धी इत्र बेचने आया था जिसका इत्र सूंघते २ हमलोग बेहोश हो गये अपनी ही खबर न रही क्या जाने दीवान साहब कहां हैं, इसी से कहते हैं कि 'अमीरों की दोस्ती में हमेशः जान जोखम रहती है।" अब कान उमेठते

हैं कभी अमीरों का सङ्ग न करेंगे ॥

ऐसी ऐसी ताज्जुब भरी बातें हो ही रही थीं और सवेरा हुआ ही चाहता था कि सामने से दीवान हरदयालसिंह बहादुर आते दिखाई पड़े जो दरअसल श्रीतेजसिंह बहादुर थे, दीवान साहब को आते देख सभों ने घेर लिया और पूछने लगे कि आप कहां गये थे ? दोस्तों ने पूछा, वह नालायक गन्धी कहां गया और हम लोग कैसे बेहोश हो गये ? दीवान साहब ने कहा, वह चोर था मैंने पहिचान लिया और अच्छी तरह से उसका इत्र नहीं सूंघा अगर सूंघता तो तुम्हारी तरह मैं भी बेहोश हो जाता, जब मैंने उसको पहिचान कर पकड़ने का इरादा किया तो वह भागा, मैं भी गुस्से में उसी के पीछे चला गया था लेकिन वह निकल ही गया, अफसोस !!

इतने में लौंडी ने अर्ज किया, कुछ भोजन कर लीजिये सब के सब घर में भूखे बैठे हैं इस वक्त तक सभों को रोते ही गुजरा। दीवान साहब ने कहा, अब तो सवेरा हो गया भोजन क्या करूं? मैं थक भी गया हूं सोने को जी चाहता है। यह कह पलङ्ग पर जा लेटे, उनके दोस्त भी अपने अपने घर चले गये ॥

सबेरे मामूली वक्त पर दर्बारी पौशाक पहिन गुप्त रीति से बटुआ ऐयारी का कमर में बांध दरबार की तरफ चले, दीवान साहब को देख रास्ते में बराबर दो पट्टी लोगों के हाथ उठने लगे, यह भी जरा जरा सिर हिला सभों के सलामों का जबाब देते हुए कचहरी में पहुंचे, महाराज अभी नहीं आये थे तेजसिंह हरदयालसिंह की खसलत से वाकिफ थे उन्हीं के मामूल के मुताबिक यह भी दरबार में दिवान की जगह बैठ काम करने लगे, थोड़ी देर में महाराज भी आये ॥

दरबार में मौका पा कर हरदयालसिंह धीरे २ महाराज से

अर्ज करने लगे—महाराजाधिराज ! तावेदार को पक्की खबर मिली है कि चुनार के राजा शिवदत्तसिंह ने क्रूरसिंह की मदद की है और पांच ऐयार साथ कर के सर्कार से बेअदबी करने के लिये इधर रवाना किया है बल्कि यह भी कहा है कि पीछे हम भी लश्कर ले कर आवेंगे। इस वक्त बड़े तरद्दुद का सामना है क्योंकि सर्कार में आजकल कोई ऐयार नहीं नाज़िम और अहमद थे सो भी क्रूर के साथ हैं बल्कि सर्कार के यहाँ वाले सब मुसल्मान उसकी तरफ मिले हुए हैं, आज कल ऐयार लोग जरूर सूरत बदल बदल कर शहर में घूमते और बदमाशी की फिक्र करते होंगे ॥

महाराज जयसिंह ने कहा, "ठीक है मुसल्मानों का रङ्ग हम भी बेढब देखते हैं, फिर तुमने क्या बन्दोबस्त किया ?" धीरे २ महाराज और दीवान से बातें हो रही थीं कि इतने में दीवान साहब की निगाह एक चोबदार पर पड़ी जो दर्बार में खड़ा २ छिपी निगाहों से चारों तरफ देख रहा था, वे गौर से उसकी तरफ देखने लगे। दीवान साहब को गौर से देखते हुए देख वह चोबदार चौकन्ना हो गया और कुछ समझ गया। बात छोड़ कड़क के दीवान साहब ने कहा, " पकड़ो उस चोबदार को।" हुक्म पाते ही लोग उसकी तरफ झुके लेकिन वह सिर पर पैर रख के ऐसा भागा कि किसी के हाथ न लगा ! तेजसिंह चाहते तो उस ऐयार को जो चोबदार बन के आया था पकड़ लेते मगर इनको तो सब काम बल्कि उठना बैठना भी उसी तरह से करना था जैसा हरदयालसिंह करते थे, इसलिये वह अपनी जगह से न उठे, वह ऐयार भाग गया जो चोबदार बना हुआ था, पकड़ने के लिये जो गये थे वापस आये ॥

दीवान साहब ने कहा, "महाराज देखिये जो मैंने अर्ज

किया था और जिस बात का मुझको डर था वह ठीक निकला।" महाराज को यह तमाशा देख कर खौफ हुआ और बहुत जल्दी दरबार बर्खास्त कर तखलिये में दीवान को साथ ले चले गये, जब बैठे तो हरदयालसिंह से पूछा, क्यों जी ! अब क्या करना चाहिये ? इस दुष्ट क्रूर ने तो एक बड़े भारी को हमारा दुश्मन बना कर उभाड़ा है, महाराज शिवदत्त की बराबरी हम नहीं कर सकते ॥

दीवान साहब ने कहा, "महाराज मैं फिर अर्ज करता हूं कि हमारे सरकार में इस समय कोई ऐयार नहीं, नाजिम और अहमद थे सो क्रूर ही की तरफ जा मिले हैं, ऐयारों का जवाब बिना ऐयार के कोई नहीं दे सकता, वे लोग बड़े चालाक और फसादी होते हैं, हजार पांच सौ की जान ले लेना उन लोगों के आगे कोई बात नहीं है, इस लिये जरूर कोई ईमानदार ऐयार मुकर्रर करना चाहिये, यह भी यकायक नहीं हो सकता, सुना है कि राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान का लड़का तेजसिंह बड़ा भारी ऐयार निकला है, मैं उम्मीद करता हूं कि अगर महाराज चाहेंगे और तेजसिंह को मदद के लिये मांगेंगे तो राजा सुरेन्द्रसिंह को देने में उज्र न होगा क्योंकि वह महाराज को दिल से चाहते हैं, क्या हुआ अगर महाराज ने बीरेन्द्रसिंह का आना बन्द कर दिया अब भी राजा सुरेन्द्रसिंह का दिल महाराज की तरफ से वैसा ही है जैसा पहिले था ॥"

हरदयालसिंह की बात सुन के थोड़ी देर तक महाराज गौर करते रहे फिर बोले—तुम्हारा कहना ठीक है सुरेन्द्रसिंह और उनका लड़का बीरेन्द्रसिंह दोनों बड़े लायक हैं। इसमें कुछ शक नहीं कि बीरेन्द्र बीर है और राजनीति भी अच्छी तरह जानता है, हजार सेना लेकर दस हजार से लड़ने वाला

है और तेजसिंह की चालाकी में भी कोई फर्क नहीं जैसा तुम कहते हो वैसा ही है मगर मुझसे उन लोगों के साथ बड़ी ही बेमुरौवती होगई है जिसके लिये मैं बहुत शरमिन्दः हूं मुझ को मदद मांगते शर्म मालूम होती है, अलावा इसके क्या जाने उनको भी मेरी तरफ से रञ्ज हो गया हो, हां तुम जाओ और उनसे मिलो अगर मेरी तरफ से कुछ मलाल उनके दिल में हो तो उसको मिटा दो और तेजसिंह को लाओ तो काम चले। हरदयालसिंह ने कहा, बहुत अच्छा महाराज मैं खुद ही जाऊंगा और इस काम को करूंगा महाराज अपनी मोहर करके एक मुख्तसर चीठी सुरेन्द्रसिंह के नाम लिख दें फिर मैं बना लूंगा और और किसी को साथ न लेजा कर अकेला ही जाऊंगा। महाराज ने हरदयालसिंह की बात पसन्द की और एक चीठी अपने हाथ से लिख अपनी अंगूठी की मोहर कर उनके हवाले की॥

हरदयालसिंह महाराज से बिदा हो अपने घर आये मगर अन्दर जनाने में न जा कर बाहर ही रहे, खाने को भी वहां ही मंगवाया। खा पी कर बैठे और सोचने लगे कि चपला से मिल के सब हाल कह लें तो जायं। थोड़ा दिन बाकी था जब चपला आई, एकान्त में ले जा कर हरदयालसिंह ने सब हाल कहा और वह चीठी भी दिखाई जो महाराज ने लिख दी थी, चपला बहुत ही खुश हुई और बोली, हरदयालसिंह तुम्हारे मेल में आ जायगा, वह बहुत लायक है, खैर अब तुम जाओ इस काम को जल्दी करो। चपला तेजसिंह की चालाकी की तारीफ करने लगी। अब बीरेन्द्रसिंह से मुलाकात होगी यह उम्मीद दिल में हुई। हरदयालसिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हुए रास्ते में अपनी सूरत असली बना ली॥

चौदहवां बयान ।

नौगढ़ और विजयगढ़ का राज पहाड़ी है, जंगल भी बहुत भारी और घना है नदियां चन्द्रप्रभा और करमनाशा घूमती हुई इन पहाड़ों पर बहती हैं। जाबजा खोह और दर्रे पहाड़ों में बड़े खूबसूरत खूबसूरत कुदरती बने हुए हैं, पेड़ों में साखू, तेंद विजयसार, सलई, कोरैया धौ, खाजा, पेयार, जिगना, आसन, सानन वगैरह और सिवाय इस के जंगली पेड़ों में पारिजात के पेड़ भी बहुत हैं। यह पहाड़ी अजब दिलचस्प है, अभी तो आप गांव में पड़े हैं, मील भर इधर उधर जाइये घने जंगल में फंस जाइये, कहीं रास्ता न मालूम हो कहां से आये और किधर जायँगे, बरसात के मौसिम में तो अजब ही कैफियत रहती है, कोस भर जाइये रास्ते में दस नाले मिलेंगे, जंगली जानवरों में सावर, बारहसिंघा, चीतर, भालू, तेंदुआ, चिकारा, लंगूर, बन्दर वगैरह के अलावे कभी २ शेर भी दिखाई देते हैं, मगर बर्सात में नहीं क्योंकि नदी नाले में पानी ज्यादे हो जाने से उनके रहने की जगह खराब हो जाती है तब वे ऊंची पहाड़ियों पर चले जाते हैं। इस पहाड़ पर हरिन नहीं होते पहाड़ के नीचे बहुत से देख पड़ते हैं, परिन्दों में सिवाय तीतर, बटेर, चिनिक वगैरह के मोर ज्यादे होते हैं। गरज कि यह सुहावना पहाड़ अभी तक लिखे मुताबिक मौजूद है और हर तरह से काबिल देखने के है। उन ऐयारों ने जो चुनार से क्रूर वो नाजिम के संग आये थे शहर में न जा कर इसी दिलचस्प जंगल में मय क्रूर के अपना डेरा जमाया और आपुस में यह राय हो गई कि सब कोई अलग अलग जा कर ऐयारी करें जब जरूरत हो जंगल

में जफील बजा कर इकट्ठे हो जाया करें। बद्रीनाथ ने जो इन ऐयारों में सब से ज्यादे चालाक और होशियार था यह राय निकाली कि एक दफे सब कोई अलग अलग भेष बदल कर शहर में घुस कर दर्बार वो महल के सब आदमियों तथा लौंडियों बल्कि रानी तक को देख वो पहिचान आवें, चाल-चलन तजबीज कर नाम भी याद कर लें जिसमें वक्त वक्त पर ऐयारी करने के लिये सूरत बदलने वो बातचीत करने में फर्क न पड़े। इस राय को सभों ने पसन्द किया, नाज़िम ने सभों का नाम बताया और जहां तक हो सका पहिचनवा भी दिया वे ऐयार लोग तरह तरह के भेष बदल कर महल में घुस गये और सब कुछ देख भाल आये मगर मौका ऐयारी का चपला की होशियारी से किसी को न मिला और न उनको ऐयारी करनी ही मञ्जूर थी जब तक हर तरह से देख भाल न लेते॥

जब वे लोग हर तरह से होशियार और वाकिफ हो गये तब ऐयारी करना शुरू कर दिया। भगवानदत्त तो चपला की सूरत बन नौगढ़ में बीरेन्द्रसिंह को फांसने के लिये चला, वहां पहुँच कर जिस कमरे में बीरेन्द्रसिंह थे उसके दर्वाजे पर पहुंच पहरे वाले से कहा, "जा कर कुमार से कह दो कि विजयगढ़ से चपला आई है।" उस प्यादे ने जाकर खबर दी। कुछ रात गुजर गई थी, कुंअर बीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता की याद में बैठे तबीयत से हजारों तर्कीबें निकाल रहे थे, बीच बीच में ऊंची सांसें भी लेते जाते थे, इसी वक्त चोबदार ने आ कर अर्ज किया, "पृथ्वीनाथ! विजयगढ़ से चपला आई है और ड्योढ़ी पर खड़ी है क्या हुक्म होता है।" कुमार चपला का नाम सुनते ही चौंक उठे और खुश हो बोले, "उसे जल्दी अन्दर लाओ।" बमूजिब हुक्म के चपला हाजिर हुई,

कुमार चपला को देख कर उठ खड़े हुए और हाथ पकड़ अपने पास बैठा बातचीत करने लगे, चन्द्रकान्ता का हाल पूछा। चपला ने कहा, "अच्छी हैं सिवाय आपकी याद के और किसी तरह की तकलीफ नहीं है हमेशः कहा करती हैं कि बड़े वेमुरौवत हैं कभी खबर भी नहीं लेते कि जीती है या मर गई, आज घबरा कर मुझको भेजा है और यह दो नासपातियां अपने हाथ से छील काट कर आपके वास्ते भेजा हैं, अपने सर की कसम दी है कि इसे जरूर खाइये। बीरेन्द्रसिंह चपला की बातें सुन बहुत खुश हुए, चन्द्रकान्ता का इश्क पूरे दरजे पर था धोखे में आ गये, भले बुरे की कुछ तमीज न रही, चन्द्रकान्ता की कसम कैसे टालते, झट नासपाती का टुकड़ा उठा लिया और मुंह से लगाया ही था कि सामने से आते हुए तेजसिंह दिखाई पड़े। तेजसिंह ने देखा कि बीरेन्द्रसिंह बैठे हैं सामने चपला भी बैठी है आगे नासपाती के टुकड़े भी रक्खे हैं एक टुकड़ा हाथ में है। बस देखते ही आग हो गये, ललकार कर बोले, "खबरदार मुंह में मत डालना।" इतना सुनते ही बीरेन्द्रसिंह रुक गये और बोले, "क्यों क्या है?" तेजसिंह ने कहा कि मैं जाती दफे हजार समझा गया अपना सर मार गया मगर आपको खयाल न हुआ। कभी आगे भी चपला यहां आई थी? आपने क्या खाक पहिचाना कि यह चपला है या कोई ऐयार! बस सामने रण्डी को देख मीठी मीठी बातें सुन मजे में आ गये॥

तेजसिंह की घुड़की सुन बीरेन्द्रसिंह तो शर्मा गये और चपला के मुंह की तरफ देखने लगे। नकली चपला से न रहा गया फंस तो चुकी ही थी झट खञ्जर निकाल कर तेजसिंह पर दौड़ी, बीरेन्द्रसिंह भी जान गये कि यह ऐयार है, उसको

खञ्जर ले तेजसिंह पर दौड़ते देख लपक कर एक हाथ से तो उसकी कलाई पकड़ी जिसमें खञ्जर था और दूसरा हाथ कमर में डाल उठा लिया और सिर से ऊंचा कर चाहते थे कि फेकें जिसमें हड्डी पसली सब चूर चूर हो जाय कि तेजसिंह ने आवाज दी, "हां हां हां, पटकना मत मर जायगा, ऐयार लोगों का काम ही यह है छोड़ दो मेरे हवाले करो।" यह सुन कुमार ने धीरे से जमीन पर पटक मुश्कें बांध तेजसिंह के हवाले किया, तेजसिंह ने जबर्दस्ती उसके नाक में दवा फूक बेहोश किया और एक गठड़ी में बांध किनारे रख बातें करने लगे॥

तेजसिंह ने कुमार को बहुत कुछ समझाया और कहा, "देखिये जो हो गया सो हो गया मगर अब धोखा मत खाइयेगा।" कुमार बहुत शरमिन्दः थे इसका कुछ जवाब न दे विजयगढ़ का हाल पूछने लगे, तेजसिंह ने सब खुला सा ब्योरा कहा और चीठी भी दिखलाई जो महाराज जयसिंह ने राजा सुरेन्द्रसिंह के नाम लिखी थी, कुमार यह सब हाल सुन और चीठी देख उछल पड़े मारे खुशी के तेजसिंह को गले से लगा लिया और बोले कि, "अब जो कुछ तुम्हें करना है जल्दी कर डालो।" तेजसिंह ने कहा, "हां देखो सब कुछ हो जाता है घबड़ाओ मत।" इसी तरह दोनों की बातें करते करते तमाम रात गुजर गई, सवेरा हुआ ही चाहता था कि तेजसिंह उस ऐयार की गठड़ी पीठ पर लादे उसी तहखाने की तरफ रवाना हुए जिसमें अहमद को कैद कर आये थे। तहखाने का दर्वाजा खोल अन्दर गये, टहलते २ चश्मे के पास जा निकले देखा कि अहमद नहर के किनारे सोता है और हरदयालसिंह एक पेड़ के नीचे पत्थर की चट्टान पर सिर झुकाये

बैठे हैं। तेजसिंह को देख कर हरदयालसिंह उठ खड़ हुए और बोले, "क्यों तेजसिंह! मैंने क्या कसूर किया था जो मुझ को कैद कर रक्खा है?" तेजसिंह ने हंस कर जवाब दिया, अगर कोई कसूर किया होता तो पैर में बेड़ी पड़ी होती जैसा कि अहमद को आपने देखा होगा, आपने कोई कसूर नहीं किया सिर्फ एक दिन आपको कैद करने से मेरा बहुत सा काम निकलता था इस लिये मैंने ऐसी बेअदबी की माफ कीजियेगा, आज आपको अख्तियार है चाहे जहां जायँ मैं तावेदार हूं। बिजयगढ़ में नेक ईमानदार और इन्साफपसन्द सिवाय आपके और कोई नहीं है, इसी सबब से मैं भी आप से मदद का उम्मीदवार हूं।"

हरदयालसिंह ने कहा, "सुनो तेजसिंह तुम खुद जानते हो कि मैं हमेशः से तुम्हारा और कुंवर बीरेन्द्रसिंह का दोस्त हूं मुझको तुम लोगों की खिदमत करने में कोई उज्र नहीं मैं तो आप हैरान था कि दोस्त आदमी को तेजसिंह ने क्यों कैद किया! पहिले तो मुझ को यह भी नहीं मालूम हुआ कि मैं यहां कैसे आया, मर के आया हूं या जीते जी! अहमद को जब मैंने देखा तो समझ गया कि यह आप ही की करामात है, भला यह तो कहो मुझको यहां रख कर तुमने क्या कार्रवाई की और अब मैं तुम्हारा क्या काम कर सकता हूं?

तेज०। मैं आपकी सूरत बन कर आपके जनाने में नहीं गया इस से आप खातिर जमा रखिये॥

हर०। तुमको तो मैं अपने लड़के से ज्यादा समझता हूं अगर अन्दर जनाने में जाते ही तो क्या था! खैर हाल कहो॥

तेजसिंह ने महाराज जयसिंह की चीठी दिखाई, हरदयालसिंह के कपड़े जो पहिने हुए थे उनको सब दे दिये और

सब हाल खुलासा कह कर बोले कि अब आप अपने कपड़े सहेज लीजिये और यह चीठी ले कर दर्बार में जाइये और राजा से मुझको मांग लीजिये जिसमें मैं आप के साथ चलूं नहीं तो वे ऐयार जो चुनार से आये हैं बिजयगढ़ को गारत कर डालेंगे और महाराज शिवदत्तसिंह अपना कब्ज़ा बिजयगढ़ में कर लेंगे। मैं आप के सङ्ग चल कर उन ऐयारों को गिरफ़ार करूंगा। आप दो बातों का ज्यादे खयाल रखियेगा एक यह कि जहां तक बने मुसलमानों को बाहर कीजिये और हिन्दुओं को रखिये, दूसरे यह कि कुंअर बीरेन्द्रसिंह का हमेशः ध्यान रखियेगा और महाराज से बराबर उनकी तारीफ किया कीजियेगा जिस में महाराज मदद के वास्ते उनको भी बुलावें ॥

हरदयालसिंह ने कसम खाकर कहा, मैं हमेशः से तुमलोगों का खैरखाह हूं जो जो तुमने कहा है उससे ज्यादे कर दिखाऊंगा ॥

तेजसिंह ने उस ऐयार की गठड़ी खोली और एक खुलासी बेड़ी उसे पैर में डाल दी और बटुआ ऐयारी का मय खञ्जर के उसके कमर से निकालने बाद उसे होश में लाये। उसके चेहरे को साफ किया तो मालूम हुआ कि भगवानदत्त है ॥

बसबब ऐयार होने के चुनारगढ़ के सब ऐयारों को तेजसिंह पहिचानते थे और वे लोग भी इनको बखूबी जानते थे। तेजसिंह ने भगवानदत्त को नहर के किनारे छोड़ा और हरदयालसिंह को साथ ले खोह के बाहर चले जब दरवाजे के पास आये हरदयालसिंह से कहा कि आप मेहरबानी करके मुझे इजाजत दें कि मैं थोड़ी देर के लिये आपको फिर बेहोश करूं तहखाने के बाहर होश में ले आऊंगा। हरदयालसिंह ने कहा, "इसमें मुझको कुछ उज्र नहीं है, मैं यह नहीं चाहता कि इस तहखाने में आने का रास्ता देख लूं, यह तुमहीं लोगों का काम है मैं देख क्या करूंगा?"

तेजसिंह हरदयालसिंह को वेहोश कर के बाहर लाये और होश में ला कर वोले," अब आप कपड़े पहिन लीजिये और मेरे साथ चलिये।" उन्होंने वैसा ही किया॥

शहर में आकर बमूजिब कहने तेजसिंह के हरदयालसिंह अलग होकर अकेले राजा सुरेन्द्रसिंह के दर्बार में गये, राजा ने उनकी बड़ी खातिर की और पूछा, उन्होंने बहुत कुछ कहने के बाद महाराजजयसिंह की चीठी दी जिसको राजा ने इज्जत के साथ लेकर अपने वजीर जीतसिंह को पढ़ने के लिये दिया, जीत-सिंह ने जोर से वह खत पढ़ा। राजा सुरेन्द्रसिंह चीठी सुनकर बहुत खुश हुए और हरदयालसिह की तरफ देखकर बोले, मेरा राजा महाराजा जयसिंह का है जो चाहें बुला लें मुझे कुछ उज्र नहीं, तेजसिंह आपके साथ जायगा।" यह कह अपने वजीर जीतसिंह को हरदयालसिंन की मेहमानी करने के लिये हुक्म दिया और दरवार बर्खास्त किया॥

दीवान दरदयालसिंह की मेहमानी तीन दीन तक बहुत अच्छी तरह से की गई, जिससे वे बहुत ही खुश हुए। चौथे दिन दीवान साहज ने राजा से रुखसत मांगी, राजा ने बहुत कुछ दौलत और जवाहिरात से उनकी बिदाई की और तेज-सिंह को बुला कर बहुत कुछ समझा बुझाकर दिवान साहब के सङ्ग बिदा किया॥

बड़े साज व सामान के साथ वे दोनों विजयगढ़ पहुंचे और शाम के दर्बार में महाराज के पास हाजिर हुए। हरद-यालसिंह ने महाराज की चीठी का जवाब दिया और सब हाल कह कर सुरेन्द्रसिंह की बड़ी तारीफ की जिससे महा-राज बहुत ही खुश हुए और तेजसिंह को उसी वक्त खिलअत दे कर हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि इनके रहने के लिये

मकान का बन्दोबस्त कर दो और इनकी खातिरदारी और मेहमानी का बोझ अपने ऊपर समझो ॥

दर्बार उठने पर दीवान साहब तेजसिंह को साथ ले बिदा हुए और एक बहुत अच्छे कमरे में उनका डेरा दिलवाया। नौकर और पहरे वाले प्यादों का भी बहुत अच्छा इन्तजाम कर दिया जो सब हिन्दू ही थे, दूसरे दिन तेजसिंह महाराज के दर्बार में हाजिर हुए, दीवान हरदयालसिंह के बगल में एक कुर्सी उनके वास्ते मुकर्रर की गई ॥

पन्द्रहवां बयान।

हम पहिले यह लिख चुके हैं कि महाराज शिवदत्त के यहां जितने ऐयार हैं सभों को तेजसिंह पहिचानते हैं, अब तेजसिंह को यह जानने की जरूरत हुई कि उनमें से कौन कौन चार आये हैं, इसलिये दुसरे दिन शाम के वक्त तेजसिंह ने अपनी सूरत भगवानदत्त की बनाई जिसको तहखाने में बन्द कर आये थे और शहर से निकल जंगल में इधर उधर घूमने लगे, कहीं कुछ पता न लगा, बरसात का दिन आ चुका था रात अंधेरी और बदली छाई हुई थी तेजसिंह ने एक टीले पर खड़े हो कर जफील बजाई ॥

थोड़ी देर में तीनों ऐयार मय पण्डित जगन्नाथ ज्यौतिषी के उसी जगह पर आये और भगवानदत्त को खड़े देख कर बोले, "क्यों जी तुम नौगढ़ गये थे वहां क्या किया, खाली क्यों चले आये?"

तेजसिंह ने सभों को पहिचानने बाद जवाब दिया कि

वहां तेजसिंह की बदौलत कोई कार्रवाई न चली, तुम लोगों में से कोई एक आदमी हमारे साथ चलो तो काम चले॥

पन्ना०। अच्छा कल हम तुम्हारे साथ चलेंगे, आज चलो महल में कोई कार्रवाई करें॥

तेज०। अच्छा चलो मगर मुझको इस वक्त भूख बड़े जोर की लगी है कुछ खा लूं तो काम में जी लगे, तुम लोगों के पास कुछ हो तो लाओ॥

जगन्नाथ०। पास में तो जो कुछ है वेहोशी मिली हुई है बाजार से जाकर कुछ लाओ तो सब कोई खा पी कर छुट्टी करें॥

भगवान०। अच्छा एक आदमी साथ चलो॥

पन्नालाल साथ हुए, दोनों शहर की तरफ चले, रास्ते में पन्नालाल ने कहा कि हम लोगों को अपनी सूरत बदल लेनी चाहिये क्योंकि तेजसिंह कल से इसी शहर में आया हुआ है और हम सभों को पहिचानता भी है शायद घूमता फिरता कहीं मिल जाय॥

भगवानदत्त ने यह सोच कर कि सूरत बदलेंगे तो रोगन लगाते वक्त यह पहिचान लेगा, जवाब दिया कि कोई जरूरत नहीं, कौन रात को मिलता है। भगवानदत्त के इनकार करने से पन्नालाल को शक हो गया और गौर से इनकी सूरत देखने लगा मगर रात अंधेरी थी पहिचान न सका, आखिर को जोर से जफील बजाई। शहर के पास आ चुके थे ऐयार लोग दूर थे जफील न सुन सके, तेजसिंह भी समझ गये कि इस को शक होगया अब देर करने की कुछ जरूरत नहीं झट उस के गले में हाथ डाल दिया, पन्नालाल ने भी खञ्जर निकाल लिया, दोनों में खूब हो गई आखिर को तेजसिंह ने पन्नालाल को उठा के दे मारा और मुश्कें कस बेहोश कर के गठड़ी बांध

ली और पीठ पर लाद शहर की तरफ रवाना हुए ॥

अपनी असली सूरत बनाये हुए डेरे पर पहुंचे और एक कोठली में पन्नालाल को बन्द कर दिया और पहरे वालों को खूब ताकीद कर आप उसी कोठड़ी के दर्वाजे पर पलंग बिछवा सो रहे, सवेरे पन्नालाल को साथ ले दर्बार की तरफ चले ॥

इधर रामनारायण, बद्रीनाथ और ज्यौतिषी जी देख रहे थे कि अब दोनों आदमी खाने को लाते होंगे मगर कुछ नहीं यहां तो मामला ही दूसरा था। उन लोगों को यह शक हो गया कि कहीं दोनों गिरफ्तार हो गये मगर यह खयाल में न आया कि भगवानदत्त असल में दूसरे कृपानिधान थे ॥

उस रात तो कुछ न कर सके सवेरे सूरत बदल कर खोज में निकले, पहिले महाराज के दर्बार की तरफ चले, देखा कि तेजसिंह दर्बार में जा रहे हैं पीछे पीछे उनके दस पन्द्रह सिपाही कैदी की तरह पन्नालाल को लिये जाते हैं। उन ऐयारों ने भी साथ ही साथ दरबार का रास्ता पकड़ा ॥

तेजसिंह पन्नालाल को साथ लिये दर्बार में पहुंचे, देखा कि कचहरी खूब लगी हुई है महाराज बैठे हैं; यह भी सलाम कर अपनी कुर्सी पर जा बैठे। कैदी को सामने खड़ा कर दिया। महाराज ने पूछा, "क्यों तेजसिंह किसको लाये हो ?" तेजसिंह ने जवाब दिया, "महाराज उन पांच ऐयारों में से जो चुनार से आये हैं एक गिरफ्तार हुआ है जिसको सर्कार में लाया हूं, जो इसके लिये मुनासिब हो हुक्म दिया जाय ॥"

महाराज गौर के साथ खुशी भरी निगाहों से उसकी तरफ देखने लगे और पूछा कि तेरा नाम क्या है ? उसने कहा, मक्कार खां उर्फ ऐयार खां।" महाराज उसकी ढिठाई और बात पर हंस पड़े हुक्म दिया कि बस इससे ज्यादे

पूछने की कोई जरूरत नहीं सीधे कैदखाने में ले जा कर इसको बन्द करो और सख्त पहरा बैठा दो। हुक्म पाते ही प्यादों ने उस ऐयार के हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी डाल दी और कैदखाने की तरफ ले गये। महाराज ने खुश हो कर तेजसिंह को सौ अशर्फी इनाम दी। तेजसिंह ने खड़े हो कर महाराज को सलाम किया और अशर्फियां बटुए में रख लीं॥

रामनारायण, बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी भेष बदले हुए दर्बार में खड़े यह सब तमाशा देख रहे थे। जब पन्नालाल को कैदखाने का हुक्म हुआ वे लोग भी बाहर चले आये और आपुस में सलाह कर एक भारी चालाकी की। किनारे जा कर बद्रीनाथ ने तो तेजसिंह की सूरत बनाई और रामनारायण और ज्योतिषी जी प्यादे बन कर तेजी के साथ उन सिपाहियों की तरफ चले जो पन्नालाल को कैदखाने में ले जा रहे थे। वहां पहुंच कर बोले, ठहरो ठहरो इस नालायक ऐयार के लिये महाराज ने दूसरा हुक्म दिया है क्योंकि मैंने अर्ज किया था कि कैदखाने में से उसके संगी साथी इसको किसी न किसी तरह छुड़ा ले जायंगे अगर हम इसको अपनी हिफाजत में रक्खेंगे तो बेहतर होगा क्योंकि हम ही ने इसको पकड़ा है, हमारी ही हिफाजत में यह रह भी सकेगा, सो तुम लोग इसको मेरे हवाले करो॥

प्यादे तो जानते ही थे कि इसको तेजसिंह ने पकड़ा है, कुछ इन्कार न किया और उसे उसके हवाले कर दिया। नकली तेजसिंह ने पन्नालाल को ले जङ्गल का रास्ता लिया। उसके चले जाने पर उसका हाल अर्ज करने के लिये प्यादे फिर दर्बार में लौट आये दर्बार उसी तरह से लगा हुआ था तेजसिंह भी अपनी जगह बैठे हुए थे। इनको देख प्यादे के होश उड़ गये

और अर्ज करते करते रुक गये। तेजसिंह ने उनकी तरफ देख कर पूछा, "क्यों क्या है? उस ऐयार को कैद कर आये?" प्यादों ने डरते डरते कहा, "जी उसको तो आपही ने हम लोगों से ले लिया।" तेजसिंह उनकी बात सुन कर चौंक पड़े और बोले, "हमने क्या किया हम तो तब से इसी जगह बैठे हैं॥"

प्यादों की जान डर और ताज्जुब से सूख गई। कुछ जवाब न दे सके पत्थर की तस्वीर की तरह जैसे के तैसे खड़े रहे। महाराज ने तेजसिंह की तरफ देख कर पूछा, क्यों क्या हुआ? तेजसिंह ने कहा, महाराज ऐयार चालाकी खेल गये मेरी सूरत बन उस कैदी को इन लोगों के हाथ से छुड़ा ले गये। यह सुन महाराज को बड़ा रञ्ज हुआ और उन प्यादों पर बहुत खफा हुए। तेजसिंह ने अर्ज किया, महाराज इन लोगों का कुछ कसूर नहीं ऐयार लोग ऐसे होते ही हैं, बड़ों बड़ों को धोखा दे जाते हैं इन लोगों की क्या हकीकत है॥

तेजसिंह के कहने से महाराज ने उन प्यादों का कसूर माफ किया मगर उस ऐयार के निकल जाने का रञ्ज देर तक रहा॥

बद्रीनाथ वगैरह पन्नालाल को लिये हुए जंगल में पहुँचे, एक पेड़ के नीचे बैठ कर उसका हाल पूछा, उसने सब हाल कहा। अब इन लोगों को मालूम हुआ कि भगवानदत्त को भी तेजसिंह ने पकड़ के कहीं छिपाया है, यह सोच कर पण्डित जगन्नाथ से कहा कि आप रमल के जरिये दरियाफ़ कीजिये कि भगवानदत्त कहां है। ज्योतिषी जी ने रमल फेंका और कुछ गिन गिना कर कहा कि बेशक भगवानदत्त को भी तेजसिंह ने पकड़ा है और यहां से दो कोस उत्तर की तरफ एक खोह में कैद कर रक्खा है। यह सुन सभों ने उस खोह को तरफ का रास्ता लिया। ज्योतिषी जी बार २ रमल फेंकते और

सोचते हुए उस खोह तक पहुंचे और अन्दर गये, जब उजाला नजर आया तो देखा कि सामने एक फाटक है मगर यह नहीं मालूम होता कि किस तरह खुलेगा, ज्योतिषीजी ने फिर रमल फेंका और कुछ सोच कर कहा कि यह दरवाजा एक तिलिस्म के साथ मिला हुआ है और रमल तिलिस्म में कुछ काम नहीं कर सकता, इसके खुलने की कोई दूसरी तरकीब निकाली जाय तो काम चले । लाचार वे सब उस खोह के बाहर निकल आये और ऐयारी की फिक्र करने लगे ॥

सोल्हवां बयान ।

एक दिन तेजसिंह बालादवी के लिये बिजयगढ़ से बाहर निकले पहर दिन बाकी था जब घूमते फिरते बहुत दूर निकल गये देखा कि एक पेड़ के नीचे कुंअर बीरेन्दसिंह बैठे हैं, उनकी सवारी का घोड़ा दूसरे पेड़ से बेधा हुआ है, सामने एक ब ारहसिंघा मरा पड़ा है, उस के एक तरफ आग सुलग रही है और पास जा के देखा कि कुंअर के सामने पत्तों पर कु छ टुकड़े गोश्त के भी पड़े हैं ॥

तेजसिंह को देख कर कुमार ने जोर से कहा, "आओ भाई ते जसिंह ! तुम तो बिजयगढ़ ऐसा गये कि फिर के खबर भी न ली, क्या हमको एकदम भूल गये ?"

तेजसिंह०। (हंस के) बिजयगढ़ में मैं आपही का काम कर रहा हूं कि अपने बाप का ?

बीरेन्द्रसिंह० । अपने बाप का ॥

यह क ह कर हंस पड़े, तेजसिंह ने इस बात का कुछ जबाब

न दिया और हंसते हुए पास जा बैठे। कुँअर ने पूछा, "कहो चन्द्रकान्ता से मुलाकात हुई थी ? क्या हाल है ? कभी मुझको याद भी करती है ? तेजसिंह ने जवाब दिया, इधर जब से मैं गया हूं चन्द्रकान्ता से मुलाकात नहीं हुई, मैं अपने काम के खयाल में पड़ा रहता हूँ इसी बीच में एक ऐयार को पकड़ा था, महाराज ने उसको कैद करने का हुक्म दिया मगर कैदखाने तक पहुंचने न पाया था कि रास्ते ही में मेरी सूरत बन उसके साथी ऐयारों ने उसे छुड़ा लिया, फिर अभी तक कोई गिरफ़्तार नहीं हुआ ॥

कुमार०। वे लोग भी बड़े शैतान हैं ॥

तेजसिंह०। और तो जो हैं हई हैं बद्रीनाथ भी चुनार से इन लोगों के साथ आया है वह बड़ा भारी चालाक है मुझको अगर खौफ रहता है तो उसी का, खैर देखा जायगा क्या हर्ज है, वह तो बताइये आप यहां क्या कर रहे हैं ? कोई आदमी भी साथ नहीं है ॥

कुमार०। आज मैं कई आदमियों को साथ ले सवेरे ही शिकार के लिये निकला दो पहर तक हैरान रहा कुछ हाथ न लगा, आखिर को यह बारहसिंघा सामने से निकला और मैंने इसके पीछे घोड़ा फेंका, इसने मुझको बहुत हैरान किया, संग के सब आदमी छूट गये अब इस वक्त तीर खाकर गिरा है, मुझको भूख बड़े जोर की लगी थी इससे यह जी में आया कि कुछ गोश्त भून के खाऊं इसी फिक्र में बैठा था कि सामने से तुम दिखाई पड़े अब लो तुम ही इसको भूनो। मेरे पास कुछ मसाला था उसको मैंने धो धा कर इन टुकड़ों में लगा दिया है अब तैयार करो तुम भी खाओ मैं भी खाऊँ मगर जल्दी करो आज दिन भर से कुछ नहीं खाया ॥

तेजसिंह ने बहुत जल्द गोश्त तैयार किया और एक सोते के किनारे जहां साफ पानी निकल रहा था दोनों बैठ कर खाने लगे। बीरेन्द्रसिंह मसाला पोछ पोछ कर खाते थे, तेजसिंह ने पूछा, आप मसाला क्यों पोंछ रहे हैं? कुमार ने जबाब दिया, फीका अच्छा मालूम होता है। दो तीन टुकड़े खा कर बीरेन्द्रसिंह ने सोते में से चिल्लू भर भर के खूब पानी पिया और कहा बस भाई हमारी तबीयत तो भर गई, दिन भर भूखे रहने पर कुछ नहीं खाया जाता। तेजसिंह ने कहा, आप है खाइये चाहे न खाइये मैं तो छोड़ता नहीं बड़े मजे का बना। आखिर जहां तक बन पड़ा खूब खाया, हाथ मुंह धो कर बोले चलिये अब आपको नौगढ़ पहुंचा कर तब फिरेंगे। बीरेन्द्रसिंह 'चलो' कह कह कर घोड़े पर सवार हुए और तेजसिंह पैदल साथ चले॥

थोड़ी दूर जा कर तेजसिंह बोले, न मालूम क्यों मेरा सिर घूमता है। कुमार ने कहा तुम मांस ज्यादे खा गये हो उसने गर्मी की है। थोड़ी दूर और गये थे कि तेजसिंह चक्कर खा कर जमीन पर गिर पड़े और बीरेन्द्रसिंह ने झट घोड़े पर से कूद उनके हाथ पैर खूब कस गठड़ी में बांध पीठ पर लाद लिया और घोड़े की बाग थाम विजयगढ़ का रास्ता लिया, थोड़ी दूर जा कर जोर से जफील (सीटी) बजाई जिसकी आवाज दूर तक जङ्गल में गूंज गई। थोड़ी ही देर में क्रूरसिंह, पन्नालाल, रामनारायण और ज्योतिषी जी आ पहुंचे। पन्नालाल ने खुश हो कर कहा, "वाह जी बद्रीनाथ! तुमने तो बड़ा भारी काम किया, बड़े जबर्दस्त को फांसा अब क्या है ले लिया!!" क्रूरसिंह तो मारे खुशी के उछल पड़ा। बद्रीनाथ ने जो अभी तक कुंअर बीरेन्द्रसिंह बना हुआ था गठरी पीठ

से उतार के जमीन पर रख दी और रामनारायण से कहा कि तुम इस घोड़े को नौगढ़ पहुंचा दो, जिस अस्तबल से चुरा लाये थे उसी के पास छोड़ आओ आप ही लोग बांध लगे। यह सुन रामनारायण घोड़े पर सवार हो नौगढ़ चला गया। बद्रीनाथ ने तेजसिंह की गठड़ी फिर अपनी पीठ पर लाद ली और ऐयारों को कुछ समझा कर चुनार का रास्ता लिया॥

तेजसिंह का मामूल था कि रोज महाराज जयसिंह के दर्बार में जाते और सलाम कर के अपनी कुर्सी पर, बैठ जाते। दो एक दिन महाराज ने तेजसिंह की कुर्सी खाली देखी, हरदयालसिंह से पूछा कि आज कल तेजसिंह नजर नहीं आते क्या तुमसे मुलाकात हुई थी? दीवान साहब ने अर्ज किया, नहीं मुझसे भी मुलाकात नहीं हुई आज दरियाफ़ कर के अर्ज करूंगा। दर्बार बर्खास्त होने के बाद दीवान साहब तेजसिंह के डेरे पर गये, मुलाकात न होने पर नौकरों से दरियाफ़ किया, सभों ने कहा, कई दिन से वह यहां नहीं हैं हम लोगों ने बहुत खोज किया मगर पता न लगा॥

दीवान हरदयालसिंह यह सुन कर हैरान हो गये अपने मकान पर जा कर सोचने लगे कि अब क्या किया जाय अगर तेजसिंह का पता न लगेगा तो बड़ी बदनामी होगी जहां से हो खोज लगाना चाहिये। आखिर बहुत से आदमियों को इधर उधर पता लगाने के लिये रवाना किया और अपनी तरफ से एक चीठी नौगढ़ के दीवान जीतसिंह के पास भी भेजी और उसको ताकीद कर दी कि कल दरबार के पहिले इसका जवाब ले कर आ जाना। वह आदमी खत लिये हुए शाम को नौगढ़ पहुंचा और दीवान जीतसिंह के मकान पर जा कर उसने अपने आने की इत्तला करवाई, दीवान साहब

ने अपने सामने बुलवा कर हाल पूछा, उसने सलाम कर के खत दिया जिसको दीवान साहब ने बखूबी पढ़ा, दिल में यकीन हो गया कि तेजसिंह जरूर ऐयारों के हाथ पकड़ गया। यह जवाब लिख कर कि वह यहां नहीं है आदमी को तो बिदा कर दिया और अपने कई जासूसों को बुला कर पता लगाने के लिये इधर उधर रवाना किया। दूसरे दिन दर्बार में दीवान जीतसिंह ने राजा सुरेन्द्रसिंह से अर्ज किया कि महाराज कल बिजयगढ़ से दीवान हरदयालसिंह का पत्र ले कर एक आदमी आया था, यह दरियाफ़ किया था कि तेजसिंह नौगढ़ में है कि नहीं, क्योंकि कई दिनों से वह बिजयगढ़ में नहीं है। मैंने जवाब में लिख दिया है कि यहां नहीं है॥

राजा को यह सुन ताज्जुब हुआ और दीवान से पूछा कि तेजसिंह वहां भी नहीं हैं और यहां भी नहीं आया तो कहां चला गया? कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि ऐयारों के हाथ पड़ गया हो क्योंकि महाराज शिवदत्त के कई ऐयार बिजयगढ़ में पहुंचे हुए हैं और उनसे मुकाबला करने के लिये अकेला तेजसिंह गया था! दीवान साहब ने कहा कि यहां तक मैं समझता हूं वह ऐयारों ही के हाथ में गिरफ़ार हो गया होगा, खैर जो कुछ हो दो चार दिन में मालूम हो जायगा॥

कुंअर बीरेन्द्रसिंह भी दर्बार में राजा के दाहिने तरफ कुर्सी पर बैठे यह बात सुन रहे थे, उन्होंने अर्ज किया कि अगर हुक्म हो तो मैं तेजसिंह का पता लगाने जाऊं? दीवान जीतसिंह ने यह सुन कर कुमार की तरफ देखा और हंस कर जवाब दिया कि आपकी हिम्मत वो जवांमर्दी में कोई शक नहीं मगर इस बात को सोचना चाहिये कि तेजसिंह के

वास्ते जिसका काम ही ऐयारी है और वह ऐयारों के हाथ फँस गया है, आप हैरान होने जायँ इसकी क्या जरूरत ? यह तो आप जानते ही हैं कि अगर किसी ऐयार को कोई ऐयार पकड़ता है तो सिवाय कैद रखने के जान से नहीं मारता, अगर तेजसिंह उन लोगों के हाथ में पड़ गया है तो कैद होगा किसी न किसी तरह छूट ही आवेगा क्योंकि वह अपने फन में बड़ा होशियार है, सिवाय इसके जो ऐयारी का काम करेगा चाहे वह कितना ही चालाक क्यों न हो कभी न कभी फँस ही जायगा, फिर इसके लिये सोचना क्या ? दस पांच दिन सब्र कीजिये देखिये क्या होता है, इस बीच में अगर वह न आया तो आपको जो कुछ करना हो कीजियेगा ॥

वीरेन्द्रसिंह ने जवाब दिया, हां आपका कहना ठीक है, मगर पता लगाना भी जरूर है, यह सोच कर कि वह खुद चालाक है छूट आवेगा खोज न करना बेहतर नहीं । जीतसिंह ने कहा सच है आप को मुहब्बत के सबब से उसका ज्यादे खयाल है खैर देखा जायगा । यह सुन राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा कि और कुछ नहीं तो किसी दूसरे ही को पता लगाने के लिये भेज दो । इसके जवाब में दीवान साहब ने कहा कि कई जासूसों को पता लगाने के लिये मैं भेज चुका हूं । राजा और कुंअर बीरेन्द्रसिंह चुप हो रहे मगर खयाल उसका किसी के दिल से न गया ॥

विजयगढ़ में दूसरे दिन दर्बार में महाराज जतसिंह ने फिर हरदयालसिंह से पूछा कि कहीं तेजसिंह का पता लगा ? दीवान साहब ने कहा, यहां तो तेजसिंह का पता नहीं लगता शायद नौगढ़ में हो मैंने वहां भी आदमी भेजा है अब आता ही होगा जो कुछ है मालूम हो जायगा । ये बातें हो ही रही थीं

कि खत का जवाब लिये हुए वह आदमी आ पहुंचा जो-नौगढ़ गया था, हरदयालसिंह ने जवाब पढ़ा और बड़े। अफसोस के साथ महाराज से अर्ज किया कि नौगढ़ में भी तेजसिंह नहीं हैं, यह उनके बाप जीतसिंह के हाथ का खत मेरे खत के जवाब में आया है। महाराज ने कहा, फिर उसके पता लगाने की कुछ फिक्र की गई है या नहीं? हरदयालसिंह ने कहा-हां कई जासूस मैंने इधर उधर भेजे हैं॥

महाराज को तेजसिंह का बहुत अफसोस रहा, दर्बार बर्खास्त कर के महल में चले गये, बात ही बात में महाराज ने तेजसिंह का जिक्र महारानी से किया और कहा, देखो किस्मत का फेर इसे कहते हैं! क्रूरसिंह ने तो हलचल मचा ही रक्खा है मदद के वास्ते एक तेजसिंह आया था कई दिन से उसका भी पता नहीं लगता, अब मुझे उसके लिये सुरेन्द्रसिंह से भी शरमिन्दगी उठानी पड़ेगी। तेजसिंह की चाल-चलन, बातचीत, इल्म और चालाकी पर जब खयाल करता हूं तबीयत उमड़ आती है। बड़ा ही लायक लड़का है उसके चेहरे पर कभी उदासी नहीं देखी। महारानी ने भी तेजसिंह के हाल पर बहुत अफसोस किया। इत्तफाक से चपला उस वक्त वहीं खड़ी थी, यह हाल सुन वहां से चली गई और चन्द्रकान्ता के पास पहुंची, तेजसिंह का हाल जब कहना चाहती जी उमड़ आता था कुछ कह न सकती थी, चन्द्रकान्ता ने उसकी ऐसी दशा देख पूछा, क्यों क्या है! इस वक्त तेरी अजब हालत हो रही है कुछ मुंह से तो कह? इस बात का जवाब देने के लिये चपला ने मुंह खोला ही था कि गला भर आया, आखों से आंसू टपक पड़े कुछ जवाब न दे सकी। चन्द्रकान्ता को और भी ताज्जुब हुआ पूछा, "तू

रोती क्यों है कुछ बोल भी तो ?"

आखिर चपला ने अपने को बहुत सम्हाला और मुश्किल से कहा, महाराज की जुबानी सुना है कि "तेजसिंह को महाराज शिवदत्त के ऐयारों ने गिरफ्तार कर लिया।" अब बीरेन्द्रसिंह का आना भी मुश्किल से होगा क्योंकि उनका भी एक बड़ा भारी सहारा था। इतना कहा ही था कि पूरे तौर से आंसू भर आये और खूब खुल के रोने लगी। इसकी हालत से चन्द्रकान्ता समझ गई कि चपला भी तेजसिंह को चाहती है, चलो अच्छा है इसमें भी हमारा भला है, मगर तेजसिंह के हाल और चपला की हालत पर बहुत अफसोस किया फिर चपला से कहा कि उनके छुड़ाने की यही फिक्र हो रही है ? क्या तेरे रोने से वे छूट जायंगे? तुझसे कुछ नहीं हो सकता तो मैं ही कुछ करूं। चम्पा भी वहां बैठी यह अफसोस भरी बातें सुन रही थी, बोली कि "अगर हुक्म हो तो मैं तेजसिंह की खोज में जाऊं।" चपला ने कहा, "अभी तू इस लायक नहीं हुई है।" चम्पा बोली, "क्यों अब मेरे में क्या कसर है ? क्या मैं ऐयारी नहीं कर सकती ?" चपला ने कहा, "हां ऐयारी तो कर सकती है मगर उन लोगों का मुकाबला नहीं कर सकती जिन लोगों ने तेजसिंह ऐसे चालाक को पकड़ रक्खा है, हां मुझको राजकुमारी हुक्म दें तो खोज में जाऊं। चन्द्रकान्ता ने कहा, "इसमें भी हुक्म की जरूरत है ! तेरी मेहनत से अगर वे छूटेंगे तो जन्म भर तू उनको कहने लायक रहेगी। अब तू जाने में देर मत कर जा। चपला ने चम्पा से कहा, देख मैं तो जाती हूं ऐयार लोग आये हुए हैं ऐसा न हो कि मेरे जाने बाद कुछ नया बखेड़ा मचे। खैर और तो जो होगा देखा जायगा तू राजकुमारी से होशियार रहियो। अगर

तुझसे कुछ भूल हुई या राजकुमारी पर किसी तरह की आफत आई तो मैं जन्म भर तेरा मुंह न देखूंगी। चम्पा ने कहा "यहां से आप खातिर जमा रक्खें मैं बराबर होशियार रहा करूंगी॥

चपला अपने ऐयारी के सामान से लैस हो और कुछ दक्षिणी ढङ्ग के जेवर वो कपड़े ले तेजसिंह की खोज में निकली॥

सत्रहवां बयान।

चपला कोई ऐसी साधारण औरत न थी, खूबसूरती और नजाकत के सिवाय वह ताकतवर भी थी, दो चार आदमियों से लड़ जाना और उनको पकड़ लेना उसका एक अदना काम था, शस्त्र विद्या को पूरे तौर से जानती थी, ऐयारी के फन के अलावे कई बातें उसमें थीं। गाने और बजाने में उस्ताद, नाचने में कारीगर, आतिशबाजी बनाने का बड़ा शौक, कहां तक लिखें कोई फन ऐसा न था जिसको चपला न जानती हो, रङ्ग उसका गोरा, बदन हर जगह से सुडौल, उसके नाजुक २ हाथ पांव की तरफ खयाल करने से यही मालूम होता था कि इसे एक फूल से भी मारना खून करना है। उसको जब कहीं बाहर जाने की जरूरत पड़ती थी तो अपनी खूबसूरती जान बूझ कर बिगाड़ डालती या भेष बदल लेती थी। अब इस वक्त शाम हो गई बल्कि कुछ रात भी जा चुकी है, चन्द्रमा अपनी पूरी किरणों से निकला हुआ है, चपला अपनी असली सूरत से चली जा रही है, बटुआ ऐयारी का बगल में लटकाये, कमन्द कमर से कसे और खञ्जर भी लगाये हुए जङ्गल ही जंगल कदम बढ़ाये जा रही है, तेजसिंह की याद ने उसको

ऐसा बेसुध कर दिया है कि अपने बदन की खबर नहीं है, उसको यह नहीं मालूम कि वह किस काम के लिये बाहर निकली है, कहां जा रही है, रास्ता कौन है, आगे पत्थर है या गढ़हा, नदी है या नाला, खाली पैर बढ़ाये चले जाना यही उसका काम है, आंखों से आंसू की बूंदें गिर रही हैं, सारा कुरता आगे से भीज गया है थोड़ी २ दूर पर ठोकरें खाती है, उंगलियों से खून निकल रहा है मगर उसको उसको इसका कुछ खयाल नहीं। आगे एक नाला आया जिस पर चपला ने कुछ ध्यान न दिया और धम्मं से उस नाले में गिर पड़ी, सिर फट गया खून निकलने लगा कपड़े बदन के सब भींज गये, अब उसको इस बात का खयाल हुआ कि मैं तेजसिंह को छुड़ाने वा खोजने चली हूं। उसके मुंह से झट यह बात निकली, "हाय प्यारे! मैं तुमको बिलकुल भूल गई! तुम्हारे छुड़ाने की फिक्र मुझको जरा भी न रही उसी की यह सजा मिली।" अब चपला सम्हल गई और सोचने लगी कि मैं किधर जाती हूं। खूब गौर करने से उसे मालूम हुआ कि रास्ता बिलकुल भूल गई और एक भयानक्क जंगल में आ फँसी एक दफे तो डर गई मगर फिर दिल को सम्हाला और उस खतरनाक नाले से पीछे फिरी और सोचने लगी, इसमें तो कोई शक नहीं कि तेजसिंह को महाराज शिवदत्त के ऐयारों ने पकड़ लिया है जरूर चुनार ले गये होंगे, अब पहिले वहां खोज करनी चाहिये जब न मिलेंगे तो दूसरी जगह पता लगाऊंगी। यह विचार कर चुनार का रास्ता ढूंढ़ने लगी। हजार खराबी से आधी रात गुजर जाने के बाद रास्ता मिला, अब सीधे चुनार की तरफ पहाड़ ही पहाड़ चल निकली। जब सुबह करीब हुई, उसने अपनी सूरत मर्द सिपाही की बना ली। नहाने धोने खाने

पीने की कुछ फिक्र नहीं सिर्फ रास्ता तय करने की उसको धुन थी। आखिर भूखी प्यासी शाम होते २ चुनार में पहुंची, दिल में ठान लिया था कि जब तक तेजसिंह का पता न लगेगा अन्न जल न करूंगी, वहां भी आराम न लिया इधर उधर ढूंढ़ने और तलाश करने लगी, यकायक उसे कुछ चालाकी सूझी यानी अपनी सूरत पन्नालाल की बना।ली और घसीटासिंह ऐयार के डेरे पर पहुँची॥

हम पहिले लिख चुके हैं कि छः ऐयारों में से चार ऐयार विजयगढ़ गये हैं और घसीटासिंह और चुन्नीलाल चुनार ही में रह गये हैं। घसीटासिंह पन्नालाल को देख कर उठ खड़े हुए, साहब सलामत के बाद पूछा, कहो पन्नालाल अबकी किसको लाये ?

पन्ना०। अबकी लाये तो किसी को नहीं सिर्फ इतना पूछने आये हैं कि नाजिम यहां आया है या नहीं, दो रोज से उसका पता नहीं लगता॥

घसीटा०। यहां तो नहीं आया॥

पन्ना०। फिर उसका पकड़ा किसने ? वहां तो अब कोई ऐयार नहीं है।॥

घसीटा०। यह मैं नहीं कह सकता कि वहां कोई ऐयार है या नहीं, फिर्फ तेजसिंह का नाम तो मशहूर था सो कैद ही हो गये इस वक्त किले में बन्द पड़े रोते होंगे॥

पन्ना०। खैर कोई हर्ज नहीं पता लग ही जायगा, अब जाता हूं रुक नहीं सकता॥

यह कह नकली पन्नालाल वहां से रवाने हुए॥

अब चपला का जी ठिकाने हुआ। यह सोच कर कि तेज-सिंह का पता लग ही गया और वह यहां मौजूद ही हैं कोई हर्ज

नहीं जिस तरह होगा छुड़ा ही लूंगी, मैदान में निकल गई और गंगाजी जी के किनारे बैठ अपने बटुए में से कुछ निकाल के खाया गंगा जल पी के निश्चिंत हुई और अपनी सूरत एक गाने वाली औरत की बनाई। चपला को खूबसूरत बनने की कोई जरूरत न थी, वह खुद ऐसी थी कि हजार खूबसूरतों का मुकाबला मारे, मगर इस सबब से कि कोई पहिचान न ले अपनी सूरत उसको बदलनी पड़ी। जब हर तरह से लैस हो गई एक बन्सी हाथ में ले राजमहल के पिछवाड़े की तरफ जा एक साफ जगह देख बैठ गई और चढ़ी आवाज में बिगहा गाने लगी, एक दफे गा कर फिर उसी गत को बन्शी में बजतो॥

रात आधी से ज्यादे बीत चुकी थी, महाराज शिवदत्तसिंह महल की छत पर महारानी के साथ मीठी २ बातें कर रहे थे, यकायक गाने की आवाज उनके कान में गई। महारानी ने भी सुनी दोनों ने बात करना छोड़ दिया और काम लगा कर गौर से सुनने लगे। थोड़ी देर बाद बन्सी की आवाज आने लगी जिसका बोल साफ मालूम पड़ता था। महाराज की तबीयत बेचैन हो गई झट लौंडी को बुला कर हुक्म दिया कि किसी को कहो अभी जा कर उसको इस महल के नीचे ले आवे जिसके गाने की आवाज आ रही है॥

हुक्म पाते ही पहरेदार दौड़े गए, देखा कि एक नाजुक बदन बैठी गा रही है, उसकी सूरत देख कर उन लोगों के हवास ठिकाने न रहे, बहुत देर के बाद बोले कि "महाराज ने महल के करीब आपको बुलाया है और आपका गाना सुनने के बहुत मुश्ताक हैं।" चपला ने कुछ इन्कार न किया उन लोगों के साथ २ महल के नीचे चली आई और गाने लगी। उसके गाने ने महाराज को बेताब कर दिया, दिल को न रोक

सके हुक्म दिया कि इसको दीवानखाने में ले जा कर बैठाया जाय और रोशनी का बन्दोबस्त हो हम आते हैं। महारानी ने कहा, आवाज से यह औरत मालूम होती है क्या हर्ज है अगर महल में बुला ली जाय। महाराज ने कहा, पहिले इसको देख समझ लें तो फिर जैसा होगा किया जायगा अगर यहां आने लायक होगी तो तुम्हारी खातिर भी कर दी जायगी॥

हुक्म की देर थी सब सामान लैस हो गया, महाराज दीवानखाने में जा विराजे, बीबी चपला ने झुक कर सलाम किया, महाराज ने देखा कि एक औरत निहायत हसीन, रंग गोरा, सुरमई रंग की साड़ी वो धानी बूटेदार चोली दक्षिणी ढंग पर पहिरे पीछे से लांग बांधे खुला सिर गड़ाडीदार जूड़ा कांटे से बांधे जिस पर एक छोटा सा सोने का फूल, माथे पर एक बड़ा सा रोली का टीका लगाये, कानों में निहायत खूबसूरत जड़ाऊ सोने की बालियां पहरे, नाक में सरजा की नथ, एक टीक सोने का घुंघरूदार, पटड़ी गूथन की गले में पहिरे, हाथ में बिना घुण्डी का कड़ा वो छन्देली जिसके ऊपर काली चूड़ियां, कमर में लच्छेदार कर्धनी पैर में सांकड़ा पहरे अजब आनबान से सामने खड़ी है। गहना तो मुख्तसर ही है मगर बदन की सफाई वो सुडौली पर इतना ही आफत ढा रहा है। गौर से निगाह करने पर एक छोटा सा तिल ठुड्डी के बगल में देखा जो चेहरे को और भी रौनक दे रहा था। महाराज के तो होश जाते रहे अपनी महारानी साहबा को भूल गये जिन पर रीझे हुए थे, झट मुंह से निकल पड़ा, "वाह क्या कहना है।" टकटकी बंध गई, महाराज ने कहा, आओ यहां बैठो। बीबी चपला कमर को बल देती हुई अठखे-लियों के साथ कुछ नजदीक जा सलाम करके बैठ गई! महा-

राज उसके हुस्न के रोआब में आ गये ज्यादे कुछ कह न सके एक टक सूरत देखने लगे, फिर पूछा, "तुम्हारा मकान कहां है, कौन हो, नाम क्या है ? तुम्हारी सी औरत का अकेले रात के समय घूमना ताज्जुब में डालता है।" उसने जवाब दिया मैं ग्वालियर की रहनेवाली परलापा कत्थक की लड़की हूं रम्भा मेरा नाम है, मेरा बाप बड़ाही नामी गवैया था एक आदमी पर मेरा जी आ गया बात ही बात में वह मुझसे रञ्ज हो के चला गया उसी की तलाश में मारी मारी फिरती हूं। क्या करूं अक्सर दर्बारों में जाती हूं शायद मिल जाये क्योंकि वह भी बड़ा भारी गवैया है ताज्जुब नहीं किसी दरबार में हो, इस वक्त तबीयत की उदासी में योंही कुछ गा रही थी सर्कार ने याद किया हाजिर हुई।" महाराज ने कहा, तुम्हारी आवाज बहुत भली है अच्छा गाती हो अब कुछ गाओ कि अच्छी तरह सुनूं। चपला ने कहा, महाराज ने इस नाचीज पर बड़ी मेहरबानी की जो नजदीक बुला कर बैठाया और लौंडी को इज्जत दी, अगर आप मेरा गाना सुना चाहते हैं तो अपने मुलाजिम सफरदाओं को तलब करें, वे लोग साथ दें तो कुछ गाने का लुत्फ आये ऐसे तो मैं हर तरह से गाने को तैयार हूं। यह सुन महाराज बहुत खुश हुए और हुक्म दिया कि" सफर्दा हाजिर किये जायं।" प्यादे दौड़े गये, सफर्दाओं को सरकारी हुक्म सुनाया, वे सब हैरान हो गये कि यह तीन पहर रात गुजरे महाराज को क्या सूझी है! आखिर लाचार हो कर आना ही पड़ा, आ कर एक चांद के टुकड़े को सामने देखा। तबीयत खुश हो गई, कुढ़े हुए आये थे मगर अब खिल गये, झट साजबाज मिला करीने से बैठे, चपला ने गाना शुरू किया। अब क्या था साज व समान के साथ गाना, पिछली

रात का सम्मा, महाराज को बुत्त बना दिया, सफर्दा भी दङ्ग हो गये, तमाम इल्म आज खर्च करना पड़ा, बेवक्त की महफिल थी तिस पर भी बहुत से आदमी जमा हो गये। दो चीज दर-बारी की गाई थीं कि सुबह हो गई, एक भैरवी गाने बाद चपला ने गाना बन्द कर के अर्ज किया, महाराज अब सुबह हो गई मैं भी कल की थकी हुई हूं क्योंकि दूर से आई थी अब हुक्म हो तो रुखसत होऊँ। चपला की बात सुन कर महाराज चौंक पड़े देखा तो सचमुच सवेरा ही हो गया है, अपने गले से मोती की माला उतार कर इनाम दिया और बोले, "अभी हमारा जी तुम्हारे गाने से बिल्कुल नहीं भरा है, कुछ रोज यहां ठहरो फिर जाना।" रम्भा ने कहा, "अगर महाराज की इतनी मेहरबानी इस लौंडी के हाल पर है तो मुझको कोई उज्र रहने में नहीं॥

महाराज ने हुक्म दिया कि रम्भा के रहने का पूरा बन्दो-बस्त हो और आज रात को आम मेहफिल का सामान किया जाय। हुक्म होते ही सब सरंजाम हो गया, एक सुन्दर मकान में रम्भा का डेरा पड़ गया, नौकर मजदूरनी सब तैनात कर दिय गये॥

आज रात को आम महफिल थी। अच्छे २ आदमी सब इकट्ठे हुए, रम्भा भी हाजिर हुई, सलाम कर के बैठ गई, महफिल में कोई ऐसा न था जिसकी निगाह रम्भा की तरफ न हो, जिसको देखिये लम्बी सांसें भर रहा है, आपुस में सब यही कहते हैं कि "वाह! क्या भोली सूरत है! क्यों! कभी आज तक ऐसी हसीन तुमने देखी थी?"

रम्भा ने गाना शुरू किया, अब जिसको देखिये मिट्टी की सूरत हो रहा है। एक गीत गा कर उसने अर्ज किया कि "एक दफे नौगढ़ में राजा सुरेन्द्रसिंह की महफिल में लौंडी ने गाया

था वैसा गाना आज तक मेरा फिर न जमा, वजह यह थी कि उनके दीवान के लड़के तेजसिंह ने मेरी आवाज के साथ मिला के बीन बजाई थी। हाय, मुझको वह महफिल न भूलेगी दो चार रोज हुआ कि मैं फिर नौगढ़ में गई थी मालूम हुआ कि वह नहीं है कहीं गायब हो गया, तब मैं भी वहां न ठहरी तुरत वापस चली आई।" इतना कह रम्भा अटक गई। महाराज तो उस पर दिलोजान दे बैठे थे, बोले, "आज कल तो वह मेरे यहां कैद है, मुश्किल तो यह है कि मैं उसको छोड़ूंगा नहीं और कैद की हालत में वह कभी बीन न बजावेगा— रम्भा ने कहा, "महाराज जब वह मेरा नाम सुनेगा जरूर इस बात को कबूल करेगा, मगर उसको एक तरीके से बुलवाया जाय तो वह अलबत्ते मेरा सङ्ग देगा नहीं तो मेरी भी न सुनेगा क्योंकि वह बड़ा ही जिद्दी है।" महाराज ने पूछा, "वह कौन सा तरीका है?" रम्भा ने कहा, "एक तो उसके बुलाने के लिये ब्राह्मण जाय और वह उम्र में २० वर्ष से ज्यादे न हो, दूसरे जब वह उसको लावे दूसरा कोई सङ्ग न हो अगर भागने का खौफ हो तो बेड़ी उसके पैर में पड़ी रहे इसका कोई मुजायका नहीं, तीसरे यह कि बीन कोई उम्दा होनी चाहिये। महाराज ने कहा, यह कौन बड़ी बात है, इधर उधर देखा तो एक ब्राह्मण का लड़का चेतराम नामी उस उम्र का नजर आया, उसे हुक्म दिया कि तू जा कर तेजसिंह को ले आ और मीर मुन्शी से कहा कि तुम पहरे वालों को समझा दो कि तेजसिंह के अकेले आने में कोई रोक टोक न करे, हां एक बेड़ी उसके पैर में रहे॥

हुक्म पाकर चेतराम तेजसिंह को लेने गया और मीर मुन्शी ने भी पहरे वालों को महाराज का हुक्म सुनाया, उन लोगों को

क्या उज्र था, तेजसिंह को अकेले रवाना कर दिया। तेजसिंह तो समझ गया कि मेरा कोई दोस्त जरूर यहां आ पहुंचा, तभी उसने ऐसी चालाकी और शर्त से मुझको बुलाया है। खुशी खुशी चेतराम के साथ रवाना हुआ, जब महफिल में आया अजब तमाशा देखा कि एक बहुत ही खूबसूरत औरत बैठी है और सब उसी की तरफ देख रहे हैं, जब तेजसिंह महफिल के बीच में पहुंचा, रम्भा ने आवाज दी—आओ तेजसिंह! रम्भा कब से आपकी राह देख रही है, भला वह बीन कब भूलेगी जो आपने नौगढ़ में बजाई थी। यह कहते हुए रम्भा ने तेजसिंह की तरफ देख कर कई दफे बाई आंख बन्द की तेजसिंह समझ गये कि यह चपला है, बोले कि "रम्भा तू आ गई! अगर मौत भी सामने नजर आती हो तब भी तेरे साथ बीन बजा के मरूंगा क्योंकि तेरी सी गाने वाली भला काहे को मिलेगी। तेजसिंह और रम्भा की बात सुन कर महाराज को बड़ा ताज्जुब हुआ मगर धुन तो यह थी कि कब बीन बजे और रम्भा गावे। एक बहुत उम्दी बीन तेजसिंह के सामने रक्खी गई और उन्होंने बजाना शुरू किया, रम्भा भी गाने लगी। अब जो समां बंधा है उसकी क्या तारीफ की जाय, महाराज तो सकते की हालत में हो गये, औरों की कैफियत दूसरी हो गई। एक ही गीत का साथ देकर तेजसिंह ने बीन हाथ से रख दी। महाराज ने कहा, "क्यों! और बजाओ।" तेजसिंह ने कहा, "बस मैं एक रोज में एक ही गत या बोल बजाता हूं इससे ज्यादा नहीं, अगर आप को सुनने का शौक हो तो कल फिर सुन लीजियेगा।" रम्भाने भी कहा, "हां महाराज यही तो इनमें ऐब है, राजा सुरेन्द्रसिंह जिनके यह नौकर थे वे कहते कहते थक गये मगर एक न मानी एक ही बोल बजा कर रह गये,

क्या हर्ज है कल फिर सुन लीजियेगा।" महराज सोचने लगे कि यह अजब आदमी है, भला इसमें इसने क्या फायदा सोचा है। अफसोस! मेरे दर्बार में यह न हुआ !! रम्भा ने भी बहुत कुछ उज्र कर के गाना मौकूफ किया, सभों के दिल में हसरत बनी ही रह गई, महाराज ने भी अफसोस के साथ मजलिस बरखास्त की। तेजसिंह फिर उसी चेतराम ब्राह्मण के साथ जेल में भेज दिये गये, महाराज को तो अब इश्क हो गया कि तेजसिंह की बीन के साथ रम्भा का गाना सुनें। फिर दूसरे रोज महफिल हुई और उसी चेतराम ब्राह्मण को भेज कर तेजसिंह बुलाये गये। उस रोज भी एक ही बोल बजा कर उन्होंने बीन रख दी। महाराज का दिल न भरा हुक्म दिया, कल पूरी २ महफिल हो। दूसरे दिन फिर महफिल का सामान हुआ, सब कोई आ कर पहिले ही से जमा हो गये. मगर रम्भा महफिल में जाने के वक्त से घण्टे भर पहिले ही दांव बचा चेतराम की सूरत बन जेल में पहुंच पहरे वालों से बोली, "निकालो तेजसिंह को मेरे हवाले करो।" पहरे वाले तो जानते ही थे कि चेतराम अकेला ही तेजसिंह को ले जायगा, महाराज का हुक्म ही ऐसा है, उन्होंने ताला खोल कर तेजसिंह को निकाला और पैर में बेड़ी डाल चेतराम के हवाले कर दिया। चेतराम (चपला) उनको ले कर चलते हुए। थोड़ी दूर जा कर चेतराम ने तेजसिंह की बेड़ी खोल दी, अब क्या था दोनों ने जंगल का रास्ता लिया। कुछ दूर जा कर चपला ने अपनी सूरत बदल ली और असली सूरत में हो गई, तब तेजसिंह उसकी तारीफ करने लगे। चपला ने कहा कि आप मुझको शर्मिन्दा न करें क्योंकि मैं अपने को इतना चालाक नहीं समझती जितनी आप तारीफ करते हैं, मुझको आप के छुड़ाने की कोई

गरज भी न थी सिर्फ चन्द्रकान्ता की मुरौवत से मैंने यह काम किया। तेजसिंह ने कहा, ठीक है तुम को मेरी गरज काहे को होगी, गरजी तो मैं ठहरा कि तुम्हारे साथ सफरदा बना, जो काम मेरे बाप दादों ने न किया था सो करना पड़ो। यह सुन चपला हंस पड़ी और बोली, "बस माफ कीजिये ऐसी बातें न करिये।" तेजसिंह ने कहा, "वाह माफ क्या करना है मैं बगैर मजदूरी लिये न छोड़ूंगा!" चपला ने कहा, "मेरे पास क्या है जो मैं दूं?" उन्होंने कहा, "जो कुछ तुम्हारे पास है मेरे लिये वही बहुत है।" चपला ने कहा, "खैर इन बातों को जाने दीजिये यह तो कहिये कि यहां से खाली ही खाली चलियेगा वा महाराज शिवदत्त को कुछ और भी दिखाइयेगा?" तेजसिंह ने कहा, "इरादा तो मेरा यही था, आगे तुम जैसा कहो।" चपला ने कहा. "जरूर कुछ करना चाहिये।" अब आपुस में इन दोनों ने बहुत देर तक सोच विचार कर एक चालाकी ठहराई जिसे करने के लिये ये लोग उस जगह से दूसरे घने जङ्गल में चले गये॥

अठारहवां बयान।

अब महाराज शिवदत्त के महफिल का हाल सुनिये। महाराज शिवदत्तसिंह महफिल में आ बिराजे, जब रम्भा के आने में देर हुई तो एक चोबदार को कहा कि जा कर उसको बुला लावे और चेतराम ब्राह्मण को तेजसिंह के लाने के लिये भेजा थोड़ी देर बाद चोबदार ने आ कर अर्ज किया कि—महाराज रम्भा तो अपने डेरे में नहीं है; कहीं चली गई। महाराज को

बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि उसको जी से चाहते थे, दिल में रम्भा के लिये अफसोस करने लगे और हुक्म दिया कि बहुत से आदमी उसको तलाश करने के लिये भेजे जायं। इतने ही में चेतराम ने आकर दूसरी खबर सुनाई कि जेल में तेजसिंह नहीं है। अब महाराज के होश उड़ गये सारी महफिल दङ्ग हो गई कि अच्छी गाने वाली आई जो सभों को बेवकूफ बना कर चली गई। घसीटासिंह और चुन्नीलाल ऐयार ने अर्ज किया, महाराज! बेशक वह कोई ऐयार था जो इस तरह आ कर तेजसिंह को छुड़ा ले गया। महाराज ने कहा, "ठीक है, काम तो उसने काबिल इनाम के किया, चालाकों ने भी तो उसका गाना सुना था महफिल में मौजूद ही थे, इन लोगों की अक्ल पर क्या पत्थर पड़ गये थे कि उसको न पहिचाना! लानत है तुम लोगों के ऐयार कहलाने पर।" यह कह महाराज गम और गुस्से से भरे हुए उठ कर महल में चले गये। महफिल में जो लोग बैठे थे उन लोगों ने अपने घर का रास्ता लिया। तमाम शहर में यह बात फैल गई जिधर देखिये यही चर्चा था॥

दूसरे दिन जब गुस्से में भरे हुए महाराज दरबार में आये एक चोबदार ने अर्ज किया, "महाराज वह जो गाने वाली आई थी असल में वह औरत ही थी, वह चेतराम मिश्र की सूरत बन तेजसिंह को छुड़ा ले गई, मैंने अभी उन दोनों को उस सलई वाले जङ्गल में देखा है।" यह सुन कर महाराज को और भी ताज्जुब हुआ, हुक्म दिया कि बहुत से आदमी जायं और उनको पकड़ लावें। चोबदार ने अर्ज किया–महाराज इस तरह वे कभी गिरफ़ार न होंगे, भाग जायंगे, हां घसीटासिंह और चुन्नीलाल मेरे साथ चलें तो मैं दूर से इन लोगों को दिखला दूं, ये लोग कोई चालाकी कर के उन्हें पकड़ लें। महाराज ने इस

तर्कीब को पसन्द कर के दोनें ऐयारें को चोबदार के साथ जाने के लिये हुक्म दिया। चोबदार उन दोनें ऐयारें को लिये हुए उस जगह पहुंचा जिस जगह उसने तेजसिंह का निशान दिया था, देखा कि वहां कोई भी नहीं है, तब घसीटासिंह ने चोबदार से पूछा, अब किधर देखें? उसने कहा, क्या जरूर है कि वे तब से इसी पेड़ के नीचे बैठे रहें? इधर उधर देखिये कहीं होंगे। यह सुन घसीटासिंह ने कहा, "अच्छा चलो तुम ही आगे आगे चलो॥"

वे लोग इधर उधर ढूंढ़ने लगे, सामने से एक अहिरिन सिर पर खंचिये में दूध लिये आ रही थी, चोबदार ने उसको अपने पास बुला कर पूछा कि "तैने इस जगह कहीं एक औरत और एक मर्द को देखा है?" उसने कहा, "हां उस जङ्गल में मेरा अड़ाड़ है बहुत सी गाय भैंस मेरी वहां रहती हैं, अभी मैंने उन दोनें के हाथ दो पैसे का दूध बेचा है बाकी दूध ले कर शहर में बेचने जाती हूं।" यह सुन कर चोबदार बतौर इनाम के चार पैसे कमर से निकाल उसको देने लगा, उसने इन्कार किया और कहा कि मैं सेंत के पैसे नहीं लेती, हां चार पैसे का दूध आप लोग ले कर पी लें तो मैं शहर में जाने से बचूं और आपका अहसान मानूं। चोबदार ने कहा, "क्या हर्ज है तू दूध ही दे दे।" उस अहिरिन ने खांचा रख दिया और दूध देने लगी, चोबदार ने उन दोनें ऐयारों से कहा, आइये आप भी पी लीजिये, उन दोनों ने कहा, हमारा जी नहीं चाहता। वह बोला, अच्छा आपकी खुशी। चोबदार ने खूब दूध पीया तब फिर दोनों ऐयारों से उसने कहा, वाह क्या अच्छा दूध है, शहर में तो रोज आप पीते ही हैं भला आज इसको तो पी कर मजा देखिये।" उसके जिद्द करने पर दोनें ऐयारों ने भी दूध पीया और चार पैसे दूध वाली को दे दिये॥

वे तीनों तेजसिंह को ढूंढ़ने चले, थोड़ी ही दूर जा कर चोबदार ने कहा, न जाने क्यों मेरा सर घूमता है! घसीटासिंह बोले, मेरी भी यही दशा है, चुन्नीलाल तो कुछ कहा ही चाहते थे कि गिर पड़े। इसके बाद चोबदार और घसीटासिंह भी जमीन पर लेट गये। दूध बेचने वाली बहुत दूर नहीं गई थी, उन तीनों को गिरते देख दौड़ी हुई पास आई और लखलखा सुंघा कर होशियार किया, यह चोबदार तेजसिंह थे, जब होश में आये अपनी असली सूरत बना ली और दोनों की मुश्कें बांध गठड़ी कस एक को चपला और दूसरे को तेजसिंह ने पीठ पर लादा और नौगढ़ का रास्ता लिया॥
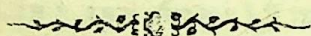
उन्नीसवां बयान।

तेजसिंह को छुड़ाने के लिये जब चपला चुनार गई तब चम्पा ने जी में सोचा कि ऐयार तो बहुत आये हुए हैं और मैं अकेली हूं, कहीं ऐसा न हो कि कोई आफत आ जाय, ऐसी तर्कीब करनी चाहिये जिसमें ऐयारों का डर न रहे और रात को भी आराम से सोने में आवे। यह सोच कर उसने एक मसाला बनाया। जब रात को सब सो गये और चन्द्रकान्ता भी पलङ्ग पर जा लेटी तब चम्पा ने उस मसाले को पानी में घोल कर जिस कमरे में चन्द्रकान्ता सोती थी उसके दर्वाजे पर दो दो गज इधर उधर लीप दिया और निश्चिन्त हो कर राजकुमारी के पलङ्ग के नीचे जा लेटी। इस मसाले में यह गुन था कि जिस जमीन पर उसका लेप किया जाय सूख जाने पर अगर किसी का पैर उस जमीन पर पड़े तो जोर से पटाखे की सी आवाज आवाज आवे और यह भी न मालूम हो कि इस जमीन पर कुछ लेप किया है। रात भर

चम्पा आराम से सोई रही कोई आदमी उस कमरे के अन्दर न आया, सुबह को चम्पा ने पानी से वह मसाला धो डाला। दूसरे दिन उसने दूसरी चालाकी और की। एक मट्टी की खोपड़ी बनाई और उसको रँग रँगा ठीक चन्द्रकान्ता की सूरत बना कर जिस पलङ्ग पर कुमारी सोया करती थी तकिये के सहारे वह खोपड़ी रख दी और धड़ की जगह कुछ कपड़ा रख कर एक हलकी चादर उस पर उढ़ा दी, मगर मुंह खुला रक्खा और खूब रोशनी करके उस चारपाई के चारो तरफ लेप भी कर दिया। कुमारी से कहा, आज आप दूसरे कमरे में आराम करें। चन्द्रकान्ता समझ गई और दूसरे कमरे में जा लेटी। जिस कमरे में चन्द्रकान्ता सोई उसके दर्वाजे पर भी लेप कर दिया और जिस कमरे में पलङ्ग पर खोपड़ी रक्खी थी उसके बगल में एक कोठड़ी थी, चिराग बुझा कर आप उसमें सो रही॥

आधी रात गुजर जाने बाद उस कमरे के अन्दर से जिसमें खोपड़ी रक्खी थी पटाखे की आवाज आई, सुनते ही चम्पा झट उठ बैठी और दौड़ कर बाहर से किवाड़ बन्द कर दिया और खूब गुल करने लगी, यहां तक कि बहुत सी लौंडियां वहां आ कर इकट्ठी हो गई और एक ने जा कर महाराज को खबर दी कि चन्द्रकान्ता के कमरे में चोर घुसा है, यह सुन महाराज खुद दौड़े गये और हुक्म दिया कि महल के पहरे से दस पांच सिपाही अभी आवें। जब सब इकट्ठे हुए कमरे का दर्वाजा खोला गया, देखा कि रामनारायण और पन्नालाल दोनों ऐयार भीतर हैं, बहुत से आदमी उनको पकड़ने के लिये अन्दर घुस गये, उन ऐयारों ने भी खञ्जर निकाल चलाना शुरू किया चार पांच सिपाहियों को जख्मी किया आखिर पकड़े गये। महाराज ने उनको कैद में रखने का हुक्म दिया

और चम्पा से हाल पूछा, उसने सब अपनी कार्रवाई कह सुनाई। महाराज बहुत खुश हुए और उसको इनाम दे कर पूछा कि चपला कहां है? उसने कहा वह बीमार है। फिर महाराज ने और कुछ न पूछा, अपने आरामगाह में चले गये। सुबह को दरबार में महाराज ने उन ऐयारों को तलब किया जब वे आये पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?" पन्नालाल बोला, "सरतोड़सिंह।" महाराज को उसकी इस ढिठाई पर बड़ा गुस्सा आया, कहने लगे कि ये लोग बड़े बदमाश हैं जरा भी नहीं डरते, खैर ले जाकर इन दोनों को खूब हाशियारी से कैद रक्खो। बमूजिब हुक्म के वे लोग कैदखाने में भेज दिये गये॥

महराज ने हरदयालसिंह से पूछा, कुछ तेजसिंह का पता लगा। हरदयालसिंह ने कहा, महाराज अभो तक तो पता नहीं लगा। वे दो ऐयार जो पकड़ गये हैं उन्हें खूब पीटा जाय तो शायद वे लोग कुछ बतावें। महाराज ने कहा, ठीक है मगर तेजसिंह आवेगा तो नाराज होगा कि ऐयारों को क्यों मारा, ऐसा कायदा नहीं है, खैर और कुछ दिन तेजसिंह की राह देख लो फिर जैसा मुनासिब होगा किया जायगा, मगर एक बात का और खयाल रखना, वह यह है कि तुम फौज के इन्तजाम से होशियार रहना क्योंकि शिवदत्तसिंह का चढ़ आना अब ताज्जुब नहीं है। हरदयालसिंह ने कहा, मैं इन्तजाम से होशियार हूं सिर्फ एक बात महाराज से इस बारे में पूछनी थी सो एकान्त में अर्ज करूंगा॥

जब दर्बार बर्खास्त होगया महराज ने हरदयालसिंह को एकान्त में बुलाया और पूछा—वह कौन सी बात है? उन्होंने कहा, "महाराज! तेजसिंह ने कई दफे मुझसे कहा था बल्कि कुंवर बीरेन्द्रसिंह और उनके पिता ने भी फर्माया था कि वह

के मुसल्मान सब कूर के तरफदार हो रहे हैं जहां तक हो इनको कम करना चाहिये, मैं भी देखता हूं तो यह बात ठोक मालूम होती है, इसके बारे में जैसा हुक्म हो किया जाय।" महाराज ने कहा, "ठीक है, हम खुद इस बात के लिये तुमसे कहने वाले थे, खैर अब कह देते हैं कि तुम धीरे धीरे सब मुसल्मानों को नाजुक कामों से बाहर कर दो। हरद्यालसिंह ने कहा, बहुत अच्छा ऐसा ही होगा, यह कह महराज से रुखसत हो अपने घर चले आये ॥
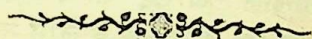
बीसवां बयान।

महाराज शिवदत्तसिंह ने घसीटासिंह वो चुन्नीलाल को तेजसिंह के पकड़ने के लिये भेज कर दर्बार बर्खास्त किया और महल में चले गये मगर दिल उनका रम्भा की जुल्फों में ऐसा फंस गया था कि किसी तरह निकल नहीं सकता था, उस रोज महारानी से भी हंस के बोलने की नौबत न आई। महारानी ने पूछा, आज आपका चेहरा सुस्त क्यों है? महाराज ने कहा, कुछ नहीं जागने से मेरी ऐसी कैफियत है। महारानी ने फिर पूछा, आपने वादा किया था कि उस गाने वाली को महल में ला कर तुमको भी उसका गाना सुनावेंगे सो क्या हुआ? जवाब दिया कि वह हमी लोगों को उल्लू बना कर चली गई तुमको किसका गाना सुनावें? यह सुन कर महारानी कलावती को बड़ा ताज्जुब हुआ पूछा, कुछ खुलासा कहिये क्या मामला है? "इस समय मेरा जी ठिकाने नहीं है मैं ज्यादे नहीं बोल सकता।" यह कह महाराज वहां से उठ कर अपने खास कमरे में

चले गये और पलङ्ग पर लेट कर रम्भा को याद करने और मन में सोचने लगे कि यह रम्भा कौन थी ! इसमें तो कोई शक नहीं कि वह औरत ही थी, फिर तेजसिंह को क्यों छुड़ा ले गई ! क्या इसी पर तो वह आशिक नहीं थी जैसा कि उसने कहा था ; हाय रम्भा ! तूने तो मुझे घायल कर डाला ! इसी वास्ते तू आई थी ? क्या करूं कुछ पता नहीं मालूम जो ढूंढूं !!

दिल की बेताबी और रम्भा के खयाल में रात भर नींद न आई, सुबह को महाराज ने दर्बार में आकर दरियाफ़ किया कि घसीटासिंह वो चुन्नीलाल तेजसिंह का पता लगा कर आये या नहीं ? मालूम हुआ कि अभी तक वे लोग नहीं आये, यह सुन महाराज को और भी तरद्दुद हुआ, अर्जियां तो सभों की सुनते थे मगर खयाल रम्भा ही की तरफ लगा था इतने में पण्डित बद्रीनाथ, नाजिम, ज्योतिषी जी और क्रूरसिंह पर नजर पड़ी उन लोगों ने सलाम किया और एक किनारे बैठ गये। उन लोगों के चेहरे पर सुस्ती वो उदासी देख और भी रञ्ज बढ़ गया, मगर कचहरी में कोई हाल उनसे न पूछा, दर्बार बर्खास्त कर के तखलिये में गये और पण्डित बद्रीनाथ, क्रूर-सिंह, नाजिम और जगन्नाथ ज्योतिषी को तलब किया जब वे लोग आये और सलाम करके अदब के साथ बैठ गये तब महा-राज ने पूछा, कहो तुम लोगों ने विजगढ़ जाकर क्या किया ? पण्डित बद्रीनाथ ने कहा, हुजूर काम तो यही हुआ कि भगवान-दत्त को तेजसिंह ने गिरफ़ार कर लिया और पन्नालाल वो रामनारायण को एक चम्पा नामी औरत वो बड़ी चालाकी और होशियारी से पकड़ लिया, बाकी मैं बच गया। उनके आदमियों में से सिर्फ तेजसिंह पकड़ा गया जिसको तावे-दार ने हुजूर में भेज दिया था, सिवाय इसके और कोई

काम नहीं हुआ। महाराज ने कहा, तेजसिंह को भी तो एक औरत छुड़ा ले गई। काम तो उसने सजा पाने लायक किया मगर अफसोस यह तो मैं जरूर कहूंगा कि वह औरत ही थी जो तेजसिंह को छुड़ा ले गई, मगर कौन थी? कहां से आई थी? यह न मालूम हुआ! तेजसिंह को तो लेही गई जाती दफे चुन्नीलाल और घसीटासिंह पर मालूम होता है हाथ फेर गई, वे दोनों उसको खोज में गये थे मगर अभी तक न आये। क्रूर की मदद करनेसे मेरा नुक्सान ही हुआ! खैर अब तुम लोग यह पता लगाओ कि वह औरत कौन थी! जिसने गाना सुना कर मुझे बेताब कर दिया और सभों की आंखों में धूल डाल कर तेजसिंह को छुड़ा ले गई, अभी तक उसकी मोहिनी सूरत मेरी आखों के आगे फिर रही है! नाजिमने कहा हुजूर मैं पहिचान गया वह जरूर चन्द्रकान्ता की सखी चपला थी, यह काम सिवाय उसके दूसरे का नहीं है! महाराज ने पूछा, क्या चपला चन्द्रकान्ता से भी ज्यादे खूबसूरत है? नाजिम ने कहा, महाराज चन्द्रकान्ता को तो चपला क्या पावेगी मगर उसके बाद दुनिया में खूबसूरत है तो चपला ही है, वह तेजसिंह पर आशिक भी है। इतना सुन महाराज कुछ देर तक हैरत में रहे फिर बोले कि चाहे जो हो जब तक चन्द्रकान्ता और चपला मेरे हाथ न लगेंगी मुझको आराम न मिलेगा, बेहतर है कि मैं इन दोनों के लिये जयसिंह को चीठी लिखूं। क्रूरसिंह बोला, महाराज जयसिंह चीठी को कुछ न मानेंगे। महाराज ने जवाब दिया, क्या हर्ज है अगर चीठी पर कुछ खयाल न करेंगे तो बिजयगढ़ को फतह ही करूँगा। यह कह मीरमुन्शी को तलब किया, जब वह आ गया तो हुक्म दिया कि राजा जयसिंह के नाम मेरी तरफ से एक खत लिखो कि "चन्द्र-

कान्ता की शादी मेरे साथ कर दे और दहेज में चपला को देदे।"
मीर मुन्शी ने बमूजिब हुक्म के खत लिखा जिस पर महाराज ने मोहर करके पण्डित बद्रीनाथ को दिया और कहा कि तुम्हीं इस चीठी को ले कर जाओ, यह काम तुम्हीं से बनैगा। पण्डित बद्रीनाथको क्या उज्र था, खत लेकर उसी वक्त बिजयगढ़ की तरफ रवाना हुए॥
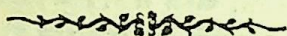
इक्कीसवां बयान।

एक दिन महाराज जयसिंह दर्बार में बैठे हरदयालसिंह से तेजसिंह का हाल पूछ रहे थे कि अभी तक पता लगा या नहीं इतने में सामने से तेजसिंह एक बड़ा भारी गट्ठड़ पीठ पर लादे हुए आ पहुंचे, गठड़ी तो दरबार के बीच में रख दी और झुक कर महाराज को सलाम किया। महाराज जयसिंह तेजसिंह को देख कर बहुत खुश हुए और बैठने के लिये इशारा किया। जब तेजसिंह बैठ गये महाराज ने पूछा, "क्योंजी! इतने दिन तुम कहां रहे और यह क्या लाये हो? तुम्हारे लिये हम लोगों को बड़ी परेशानी रही, दीवान जीतसिंह भी बहुत घबराते होंगे क्योंकि हमने वहां भी तलाश करवाया था।" तेजसिंह ने अर्ज किया, महाराज ताबेदार दुश्मनों के हाथ फँस गया था अब हजूर के एकबाल से छूट आया है बल्कि आती दफे चुनार के दो ऐयारों को भी जो वहां थे लेता आया है। महाराज यह सुन बहुत खुश हुए और उन्होंने अपने हाथ का कीमती कड़ा तेजसिंह को इनाम दे कर कहा कि "यहां भी दो ऐयारों को महल में चम्पा ने गिरफ़ार किया है जो कैद किये गये हैं। इनको भी वहीं भेज देना चाहिये।" यह कह कर हरदयालसिंह की तरफ

देखा उन्होंने प्यादों को गठड़ी खोलने के लिये हुक्म दिया, बमूजिब हुक्मके प्यादों ने गठड़ी खोली, तेजसिंहने उन दोनों को होशियार किया और प्यादों ने उन दोनों को लेजा कर उसी जेल में कैद कर दिया जिस में रामनारायण और पन्नालाल थे॥

तेजसिंह ने महाराज से अर्ज किया कि मेरे गिरफ़ार होने से नौगढ़ में सब कोई परेशान होंगे, अगर इजाजत हो तो मैं जाकर सभों से मिल आऊं। महाराज ने कहा, हां जरूर तुमको वहां जाना चाहिये जाओ मगर जल्दी वापस चले आना। इसके बाद महाराज ने हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि तुम भी मेरी तरफ से तोहफा लेकर तेजसिंह के साथ नौगढ़ जाओ। बहुत अच्छा कह के हरदयालसिंह ने तोहफे का खान तैयार किया और कुछ आदमी सङ्ग ले तेजसिंह के साथ नौगढ़ रवाना हुए॥

चपला जब महल में पहुंची उसको देखते ही चन्द्रकान्ता ने खुश होकर उसे गले लगा लिया और थोड़ी देर के बाद हाल पूछने लगी। चपला ने अपना पूरा पूरा हाल खुलासे तौर पर बयान किया। बड़ी देर तक चपला और चन्द्रकान्ता में चुहल होती रही, कुमारी ने चम्पा की चालाकी का हाल बयान करके कहा कि तुम्हारी शागिर्दा ने भी दो ऐयारों को गिरफ़ार किया है। यह सुन चपला बहुत खुश हुई और चम्पा को जो उसी जगह मौजूद थी गले लगा लिया और बहुत ही शाबाशी दी॥

इधर तेजसिंह जो नौगढ़ गये थे रास्ते में हरदयालसिंह से बोले कि अगर हम लोग सवेरे दरबार के वक्त पहुंचते तो अच्छा होता क्योंकि उस वक्त सब कोई वहां मौजूद रहेंगे। इस बात को हरदयालसिंह ने भी पसन्द किया और रास्ते में ठहर गये। दूसरे दिन दर्बार के समय वे दोनों पहुंचे और सीधे कचहरी में चले गये। राजा साहब के बगल में बीरेन्द्रसिंह भी

बैठे थे तेजसिंह को देख कर इतने खुश हुए मानों जहांन की दौलत इन्हें मिल गई हो। हरदयालसिंह ने झुक कर महाराज और कुमार को सलाम किया और जीतसिंह से भी बराबर की मुलाकात की। तेजसिंह ने भी राजा सुरेन्द्रसिंह के कदमों पर सर रक्खा, राजा साहब ने बड़े प्यार से उसका सर उठाया तब अपने पिता को पालागन करके तेजसिंह कुमार की बगल में जा बैठे। हरदयालसिंह ने तोहफा पेश किया और एक पौशाक जो कुंअर बीरेसिंह के वास्ते लाये थे वह उनको पहिराया जिसे देख राजा सुरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और कुमार की खुशी का तो कुछ ठिकाना ही न रहा। राजा ने तेजसिंह से गिरफ्तार होने का हाल पूछा तेजसिंह ने पूरा पूरा हाल अपने गिरफ्तार होने का और कुछ बनावटी ह ल अपने छूटने का बयान किया और यह भी कहा कि आती दफे वहां के दो ऐयारों को भी गिरफ्तार कर लाया हूं जो बिजयगढ़ में कैद हैं। यह सुन राजा ने खुश होकर तेजसिंह को बहुत कुछ इमाम दिया और कहा कि तुम अभी जाओ महल में सबसे मिल कर अपनी मां से भी मिलो उस बेचारी का तुम्हारी जुदाई में क्या हाल होगा वही जानती होगी। बमूजिब मर्जी के तेजसिंह सभों से मिलने के वासते रवाना हुए। हरदयालसिंह की मेहमानी के लिये राजा ने जीतसिंह को हुक्म देकर दर्बार बर्खास्त किया। सभों से मिलने के बाद तेज-सिंह कुंअर बीरेन्द्रसिंह के कमरे में गये, कुमार ने बड़ी खुशी से उठ कर तेजसिंह को गले लगा लिया जब बैठे तो कहा कि अपने गिरफ्तार होने का हाल तो तुमने बर्दार में ठीक २ बयान कर दिया मगर छूटने का हाल बना कर कहा था, अब सच २ बताओ तुमको किसने छुड़ाया ? तेजसिंह ने चपला की बड़ी तारीफ की और उस की मदद से अपने छूटने का सच्चा सच्चा

हाल कह दिया। कुमार ने कहा, लो मुबारक हो। तेजसिंह बोले पहिले आपको मैं मुबारकबाद दे लूँगा तब कहीं यह नौबत पहुंचेगी कि आप मुझको मुबारकबाद दें। कुमार हँस कर चुप हो रहे कई दिनों तक तेजसिंह हँसी खुशी से नौगढ़ में रहे मगर बीरेन्द्रसिंह का तकाजा रोज होता ही रहा कि फिर जिस तरह हो चन्द्रकान्ता से मुलाकात कराओ। यह भी धीरज देते रहे। कई दिन बाद हरदयालसिंह ने दर्बार में महाराज से अर्ज किया कि तावेदार को आये बहुत रोज हो गये वहां बहुत हर्ज होता होगा अब रुख्सत मिलती तो अच्छा था और महाराज ने फरमाया था कि आती दफे तेजसिंह को साथ लेते आना अब जैसी मर्जी हो। राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा, बहुत अच्छी बात है तुम उसको अपने साथ लेते जाओ। यह कह एक खिलअत दीवान हरदयालसिंह को दिया और तेजसिंह को भी उनके साथ बिदा किया। जाती समय तेजसिंह कुमार से मिलने आये, कुमार ने रोकर उनको बिदा किया और कहा कि मुझको ज्यादे कहने की जरूरत नहीं है मेरी हालत देखते जाओ। तेजसिंह ने बहुत कुछ ढाढ़स दिया और वहां से बिदा होकर उसी रोज बिजयगढ़ पहुंचे। दूसरे दिन दर्बार में दोनों आदमी हाजिर हुए। महाराज को सलाम कर अपनी अपनी जगह पर बैठ गये। तेजसिंह से महाराज ने राजा सुरेन्द्रसिंह की खैरवाफियत पूछी जिसको उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी के साथ बयान किया। हरदयालसिंह ने भी राजा सुरेन्द्रसिंह की बहुत तारीफ की। उसी वक्त चुनार से महाराज शिवदत्त की चीठी लिये हुए पण्डित बद्रीनाथ भी आ पहुंचे और आशीर्वाद देकर चीठी महाराज के हाथ में देदी, जिसको पढ़ने के लिये महाराज ने दीवान हरदयालसिंह को दिया। खत पढ़ते

पढ़ते हरदयालसिंह का चेहरा मारे गुस्से के लाल होगया, महाराज और तेजसिंह हरदयालसिंह के मुंह की तरफ देख रहे थे, चेहरे की रङ्गत देख कर समझ गये कि खत में कुछ बेअदबी की बातें लिखी हैं। खत पढ़ कर हरदयालसिं ने अर्ज किया कि यह खत तखलिये में सुनने लायक है। महाराज ने कहा—"अच्छा पहिले बद्रीनाथ के टिकने का बन्दोबस्त करो फिर हमारे पास दीवानखाने में आओ, तेजसिंह को भी साथ लेते आओ॥"

महाराज ने दर्बार बर्खास्त किया और महल में चले गये। दीवान हरदयालसिंह पण्डित बद्रीनाथ के रहने वो जरूरी सामान का इन्तजाम कर तेजसिंह को अपने साथ ले कोट में महाराज के पास गये और सलाम करके बैठ गये। महाराज ने शिवदत्तसिंह का खत सुनाने के लिये हुक्म दिया। हरदयालसिंह ने खत को महाराज के सामने ले जाकर अर्ज किया कि अगर सर्कार खुद पढ़ लेते तो अच्छा था। महाराज ने खत पढ़ा, पढ़ते ही आंखें मारे गुस्से के सुर्ख होगई खत फाड़ कर फेंक दिया और कहा, बद्रीनाथ से कह दो इस खत का जवाब यही है कि यहां से चला जाय। बाद इसके थोड़ी देर तक महाराज कुछ सोच कर रञ्ज भरी धीमी आवाज से बोले, क्रूर के चुनार जाने ही से हमने सोच लिया कि जहां तक बनेगा वह आग लगाने से न चूकेगा, वही हुआ! खैर मेरे जीते जी तो उसकी मुराद पूरी न होगी, आप लोगों को भी अब पूरा २ बन्दोबस्त रखना चाहिये। तेजसिंह ने हाथ जोड़ कर अर्ज किया कि इसमें तो कोई शक नहीं कि शिवदत्त अब जरूर फौज लेकर चढ़ आयेगा इसलिये हम लोगों को भी मुनासिब है कि अपनी फौज का इन्तजाम वो लड़ाई का

सामान पहिले से कर रक्खें। यों तो शिवदत्त की नीयत तभी मालूम हो गई थी जब उसने अपने ऐयारों को भेजा था अब तो कोई शक ही न रहा महाराज ने कहा, मैं इस बात को खूब जानता हूं कि शिवदत्त के पास तीस हजार फौज है और हमारे पास दस हजार, तो क्या मैं इससे डर जाऊंगा? तेजसिंह ने कहा, दस हजार फौज महाराज की और पांच हजार फौज हमारे सर्कार की, पन्द्रह हजार हो गई, ऐसे गीदड़ के मारने को इतनी फौज काफी है, अब महाराज दीवान साहब को एक खत दे कर मेरे साथ नौगढ़ भेजें; मैं जा कर तमाम फौज ले आता हूं बल्कि महाराज की राय हो तो कुंअर बीरेन्द्रसिंह,को भी बुला लें और फौज का इन्तजाम उनके हवाले करें, फिर देखिये क्या कैफियत होती है॥

दीवान हरदयालसिंह बोले, कृपानाथ! इस राय को तो मैं भी पसन्द करता हूं। महाराज ने कहा, सब तो ठीक है मगर बीरेन्द्रसिंह को अभी लड़ाई का काम सपुर्द करने का जी नहीं चाहता, चाहे वह इस फन में होशियार हो मगर क्या हुआ जैसा सुरेन्द्रसिंह का लड़का तैसा मेरा, मैं कैसे उसको लड़ने के लिये कहूंगा और सुरेन्द्रसिंह भी इस बात को कब मन्जूर करेंगे? तेजसिंह ने जवाब दिया कि महाराज इस बात की तरफ जरा भी न खयाल करें ऐसा नहीं हो सकता कि महाराज तो चढ़ाई पर जायं और बीरेन्द्रसिंह घर में बैठे आराम करें, उनका दिल कभी न मानेगा और राजा सुरेन्द्रसिंह भी बीर हैं कुछ कायर नहीं, कभी बीरेन्द्रसिंह को घर में बैठने न देंगे बल्कि खुद भी मैदान में बढ़ कर लड़ें तो ताज्जुब नहीं॥

महाराज जयसिंह तेजसिंह की बात सुन कर बहुत खुश

हुए और दीवान हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि तुम राजा सुरेन्द्रसिंह को शिवदत्त की गुस्ताखी का हाल और जो कुछ हमने उसका जवाब दिया है वह भी लिखो और पूछो कि आपकी क्या राय है इस खत का जवाब आ ले तो फिर जैसा होगा किया जायगा और खत भी तुम्हीं लेकर जाओ और कलही लौट आओ क्योंकि अब मौका देरी करने का नहीं है। हरदयालसिंह ने बमूजिब हुक्म के खत लिखा और महाराज ने उस पर मोहर कर के उसी वक्त दीवान हरदयालसिंह को बिदा कर दिया। दीवान साहब महाराज से बिदा होकर नौगढ़ की तरफ रवाना हुए, थोड़ा सा दिन बाकी था जब वहां पहुंचे, सीधे दीवान जीतसिंह के मकान पर चले गये, दीवान जीतसिंह खबर पातेही बाहर आये और हरदयालसिंह को लेजा कर अपने यहां उतारा और हाल चाल पूछा। हरदयालसिंह ने सब हाल खुलासा कहा। जीतसिंह गुस्से में आ कर बोले कि आज कल शिवदत्त के दिमाग में खलल हो गया है, हम लोगों को उसने साधारण समझ लिया है, खैर देखा जायगा कुछ हर्ज नहीं आप शाम को राजा साहब से मिलें॥

शाम के वक्त हरदयालसिंह जीतसिंह के साथ राजा सुरेन्द्रसिंह की मुलाकात को गये, वहां कुंअर बीरेन्द्रसिंह भी बैठे थे, हरदयालसिंह ने दोनों को सलाम करके राजा को नजर दी, राजा साहब ने बैठने के लिये इशारा किया और हाल पूछा—उन्होंने महाराज जयसिंह का खत दे दिया, महाराज ने खुद उस चीठी को पढ़ा, गुस्से के मारे कुछ बोल न सके और खत कुंअर बीरेन्द्रसिंह के हाथ में दे दिया, कुमार ने उसको बखूबी पढ़ा, इनकी भी वही हालत हुई क्रोध से

आंखों के आगे अंधेरा सा छा गया कुछ देर तक सोचते रहे इस के बाद हाथ जोड़ पिता जी से अर्ज किया कि मुझको लड़ाई का बड़ा हौसला है और यही हम लोगों का धर्म भी है फिर ऐसा मौका मिले न मिले इसलिये अर्ज करता हूं कि मुझ को हुक्म हो तो अपनी फौज लेकर जाऊं और विजयगढ़ पर चढ़ाई करने के पहिले ही शिवदत्त को कैद कर लाऊं। राजा सुरेन्द्रसिंह ने कहा, उस तरफ के जल्दी की कोई जरूरत नहीं है तुम अभी विजयगढ़ जाओ, क्षत्रियों को लड़ाई से ज्यादा प्यारा बाप, बेटा, भाई, भतीजा कोई नहीं होता इस लिये मैं तुम्हारी मुहब्बत छोड़ कर हुक्म देता हूं कि अपनी कुल फौज ले कर महाराज जयसिंह को मदद दो और अपना नाम करो। जीतसिंह की तरफ देख कर कहा कि फौज में मुनादी करा दो कि रात भर में सब लैस हो जायं, सुबह को कुमार के साथ जाना होगा। बाद इसके हरदयालसिंह से कहा कि आप आज रह जायं अपने साथ ही फौज और कुमार को ले कर जायं यह हुक्म दे राजमहल में चले गये। जीतसिंह दीवान हरदयालसिंह को साथ ले घर गये और कुमार अपने कमरे में जा कर लड़ाई का सामान करने लगे, चन्द्रकान्ता को देखने और लड़ाई पर चढ़ने की खुशी में रात किधर गई कुछ मालूम न हुआ॥

बाईसवां बयान।

सुबह होते ही कुमार नहा धो जंगी कपड़े पहिर हथियारों को बदन पर दुरुस्त कर मां से बिदा होने के लिये महल में गये। रानी से महाराज ने रात ही को सब हाल कह दिया

था, वे इनका फौजी ठाठ देख कर दिल में बहुत खुश हुईं, कुमार ने दण्डवत कर बिदा मांगी, रानी ने आंखों में आंसू भर कर कुमार को छाती से लगाया और पीठ पर हाथ फेर कर कहा, "बेठा जाओ बीर पुरुषों में नाम करो क्षत्री कुलका नाम रख फतह का डङ्का बजाओ, सूर बीरों का धर्म्म है कि लड़ाई के वक्त मां बाप, ऐश आराम किसी की मुहब्बत नहीं करते सो तुम भी जाओ ईश्वर करे लड़ाई में वैरी तुम्हारी पीठ न देखें ॥"

मां से बिदा हो कर कुमार बाहरआये, दीवान हरदयाल-सिंह के। मुस्तैद देखा, आप भी एक घोड़े पर सवार हो रवाना हुए। पीछे पीछे फौज भी समुद्र की तरह लहर मारती चली। जब विजयगढ़ के करीब पहुंचे तो कुमार घोड़े पर से उतर पड़े और हरदयालसिंह से बोले, मेरी राय है कि इसी जंगल में अपनी फौज के। उतारूँ और सब इन्तजाम कर लूँ तो शहर में चलूं। हरदयालसिंह ने कहा, आपकी राय बहुत अच्छी है मैं भी पहिले से चल कर आपके आने की खबर महाराज के। देता हूं फिर लौट कर आपके। साथ ले कर चलूंगा। कुमार ने कहा, अच्छा जाइये। हरदयालसिंह विजय-गढ़ पहुंच कुमार के आने की खबर देने के लिये महाराज के पास गये और खुलासा हाल बयान कर के कहा कि कुमार सेना सहित यहां से कोस भर पर उतरे हैं। यह सुन महाराज बहुत खुश हुए और बोले कि फौज के वास्ते तो वह मुकाम बहुत अच्छा है मगर बीरेन्द्रसिंह के। यहां ले आना चाहिये। अब तुम हमारे यहां के सब सर्दारों को ले जा कर इस्तकबाल कर के कुमार को यहां ले आओ ॥

बमूजिब हुक्म के हरदयालसिंह बहुत से सर्दारों के। लेकर

रवाने हुए। यह खबर तेजसिंह को भी हुई, सुनते ही बीरेन्द्र-सिंह के पास पहुंचे और दूर हा से बोले, "मुबारक हो।" तेजसिंह को देख कर कुमार बहुत खुश हुए और हाल पूछा। तेजसिंह ने कहा जो कुछ है सब अच्छा है, जो बाकी है वह अब बन जायगा। यह कह तेजसिंह लश्कर के इन्तजाम में लगे, इतने में दीवान हरदयालसिंह मय सरदारों के आ पहुंचे और महाराज ने जो हुक्म दिया था कहा। कुमार ने मंजूर किया और सज सजा कर घोड़े पर सवार हो १०० आदमी फौजी साथ ले बिजयगढ़ महाराज की मुलाकात को चले। शहर भर में मशहूर हो गया कि महाराज की मदद को कुंवर बीरेन्द्र-सिंह आये हैं, इस वक्त किले में जायेंगे। सवारी देखने के लिये अपने २ मकानों पर औरत मर्द पहिले ही से बैठे और सड़कों पर भी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई, सभों की आंखें उत्तर की तरफ सवारी के इन्तजार में थीं यह खबर महाराज को भी पहुची कि कुमार चले आते हैं, उन्होंने महल में जा कर महारानी से सब हाल कहा जिसको सुन कर वह बहुत प्रसन्न हुई और बहुत सी औरतों के साथ जिनमें चन्द्रकान्ता वो चपला भी थीं सवारी का तमाशा देखने के लिये ऊंची अटारी में जा बैठीं. महाराज भी सवारी देखने के लिये दीवानखाने की छत पर जा बैठे, थोड़ी देर में उत्तर की तरफ कुछ धूल उड़ती दिखाई दी और नजदीक आने से देखा कि थोड़ी सी फौज (सवारों की) चली आ रही है, कुछ अरसा गुजरा तो साफ दिखाई देने लगा॥

कुछ सवार जो धीरे धीरे महल की तरफ आ रहे थे फौ-लादी जरः पहिरे हुए थे जिस पर डूबते हुए सूर्य्य की किरणें पड़ने से अजब चमक दमक मालूम होती थी, हाथ में झण्डी-

दार नेजा लिये ढाल तलवार लगाये जवानी की उमङ्ग में अकड़े हुए बहुत ही भले मालूम पड़ते थे। उनके आगे आगे एक खूबसूरत ताकतवर जेवरों से सजे हुए घोड़े पर, जिसपर जड़ाऊ जीन कसी हुई थी और अठखेलियां कर रहा था, कुंअर बीरेन्द्रसिंह सवार थे, सिर पर फौलादी टोपी जिसमें एक हुमा के पर की लांबी कलगी लगी हुई थी, बदन में बेश-कीमत लिबास के ऊपर फौलादी जरः पहिने हुए थे, रङ्गसा-गोरा, बड़ी बड़ी आंखें, गालों पर सुर्खी छा रही थी, बड़े बड़े पन्नों के दानों का कण्ठा गले में, माला और भुजबन्द भी पन्ने ही का था जिसकी चमक चेहरे पर पड़ कर खूबसूरती को दूनी कर रही थी, कमर में जड़ाऊ पेटी जिसमें बनस्पती हीरा जड़ा हुआ था, फिल्ली तक का जूता जिसपर कोदैये मोती का काम था, पहरे हुए थे, चमड़ा नजर नहीं आता था ढाल तलवार खञ्जर तीर कमान लगाये एक गुर्ज करबूस में लटकता हुआ, हाथ में नेजा लिये घोड़ा कुदाते चले आते थे। ताकत, जवांमर्दी दिलेरी और रोआब उनके चेहरे ही से झलकता था, दोस्तों के दिल में मुहब्बत और दुश्मनों के दिल में खौफ मालूम होता था, सब से ज्यादे लुत्फ़ यह था कि ये सौ सवार जो कुमार के सङ्ग में चले आते थे सब उन्हीं के हमसिन थे। शहर में भीड़ लग गई, जिसकी निगाह कुमार पर पड़ती थी आखों में चकाचौंध सी आ जाती थी, महारानी ने जो बीरेन्द्रसिंह को बहुत दिनों पर इस ठाठ और रोआब से देखा सौगुनी मुहब्बत आगे से ज्यादे बढ़ गई, झट मुंह से निकल पड़ा, "अगर चन्द्रकान्ता के लायक वर है तो बीरेन्द्र, चाहे जो हो मैं तो इसी को दामाद बनाऊं-गी!" चन्द्रकान्ता वो चपला भी दूसरी खिड़की से देख रही

थीं। चपला ने टेढ़ी निगाहों से कुमारी की तरफ देखा, वह शर्मा गई, दिल हाथ से जाता रहा कुमार की जङ्गी तस्वीर आंखों में समा गई, उम्मीद हुई कि अब पास से देखूंगी। उधर महाराज की टकटकी बंध गई। इतने में कुमार किले के नीचे पहुंचे, महाराज से न रहा गया खुद उतर आये जब तक वे किले के अन्दर आवें महाराज भी पहुंच गये। बीरेन्द्रसिंह ने महाराज को देख कर पैर छूआ, उन्होंने उठा कर छाती से लगा लिया और हाथ पकड़े हुए सीधे महल में ले गये। महारानी उन दोनों को आते देख आगे तक बढ़ आई। कुमार ने चरन छूआ, महारानी की आंखों में प्रेमका जल भर आया बड़ी खुशी से कुमार को बैठने के लिये कहा, महाराज भी बैठ गये। बा-ं तरफ महारानी और दाहिनी तरफ कुमार थे, चारों तरफ लौंडियों की भीड़ थी जो कि अच्छे २ गहने वो कपड़े पहिरे खड़ी थीं। कुमार की नीची निगाह चारों तरफ घूमने लगी मानों किसी को ढूंढ़ रही है, चन्द्रकान्ता भी एक किवाड़ की आड़ में खड़ी उनको देख रही थी, मिलने के लिये तबीयत घबड़ा रही थी मगर क्या करे लाचार। थोड़ी देर तक महाराज और कुमार महल में रहे, बाद इसके उठे और कुमार को साथ लिये हुए दीवानखाने में आये और अपने खास आरामगाह के पास वाला एक सुन्दर कमरा उनके लिये मुकर्रर कर दिया। महाराज से बिदा हो कर कुमार अपने कमरे में गये, तेजसिंह भी पहुंचे। कुछ देर चुहल में गुजरी, चन्द्रकान्ता को महल में न देखने से उनकी तबीयत उदास थी, सोचते थे कि कैसे मुलाकात हो, इसी सोच में आंख लग गई। सुबह जब महाराज दर्बार में गये बीरेन्द्रसिंह स्नान पूजा से छुट्टी पा दर्बारी पौशाक पहिर शमला सरपेच जीगा समेत सिर पर रख

तेजसिंह को ले दरबार में गये। महाराज ने अपने सिंहासन के बगल में एक जड़ाऊ कुर्सी पर कुमार को बैठाया, हरदयालसिंह ने महाराज को चीठी का जवाब दिया जो राजा सुरेन्द्रसिंह ने लिखा था, उसको पढ़ कर महाराज बहुत खुश हुए, बाद थोड़ी देर के दीवान साहब को हुक्म दिया कि कुमार की फौज में हमारी तरफ से बाजार लगाया जाय और गल्ले वगैरह का पूरा इन्तजाम किया जाय जिसमें किसी को किसी तरह की तकलीफ न हो। कुमार ने अर्ज किया कि "महाराज! सामान सब साथ आया है।" महाराज ने कहा, "क्या तुमने इस राज्य को दूसरे का समझा है? सामान आया है तो क्या हुआ वह भी जब जरूरत होगी काम आवेगा। अब हम कुल फौज का इन्तजाम तुम्हारे सपुर्द करते हैं जैसा मुनासिब समझो बन्दोबस्त और इन्तजाम करो।" कुमार ने तेजसिंह की तरफ देख कर कहा कि तुम जाओ पहिले हमारी फौज के तीन हिस्से करके दो दो हजार विजयगढ़ के दोनों तरफ भेजो और हजार फौज के दस टुकड़े करके इधर उधर पांचपांच कोस तक फैला दो और खेमे वगैरह का पूरा बन्दोबस्त कर दो, जासूसों को चारो तरफ रवाना करो, बाकी महाराज के फौज की कल कवायद देख कर जैसा होगा इन्तजाम करेंगे। हुक्म पाते ही तेजसिंह रवाना हुए। इस इन्तजाम और हमदर्दी को देख कर महाराज को और भी तसल्ली हुई। हरदयालसिंह को हुक्म दिया कि फौज में मुनादी करा दो कि कल कवायद होगी। इतने में महाराज के जासूसों ने आकर अदब से सलाम कर खबर दिया कि शिवदत्तसिंह अपनी तीस हजार फौज ले कर सर्कार से मुकाबला करने के लिये रवाना हो चुका है, दो तीन दिन तक नजदीक आ जायगा। कुमार ने कहा, "कोई

لہ پیمی کی پالیسی ناقابل ضبطی ہے۔ اور پیڈ اپ

لی جاے تو اس صورت میں بھی حق باطل نہیں ہوتے۔
کرنا چاہیئے۔ سہ ماہی پر نصف آنہ فی روپیہ و
کے لیئے لیا جاویگا۔
س بنک کی کاپی۔ میونسپل رجسٹر تاریخ پیدائش۔ سکول
رہ ثبوت ایک ان میں سے دیا جا سکتا ہے۔ غلطی
ں بیمہ ہو غلطی معلوم ہونے پر لیا جاویگا۔
منافع بیمہ کرانے والوں کو دیا جاتا ہے۔ چونکہ کمپنی
ر اسکا خرچ بھی تقریباً تمام ہندوستان کی کمپنیوں
ر جو تقریباً تمام ہندوستانی کمپنیوں سے زیادہ ہے
مقرر کر سکتے ہیں۔ تاکہ امداد جلدی دیجاوے۔ اور ورثاء کو
بعد میں نہ ہو۔ وارث کسی وقت مقرر ہو سکتا ہے یا وصیت ہو سکتی
یادہ کا کیا ہے۔ جو تمام ہندوستانی کمپنیوں سے زیادہ ہے
ہیڈ آفس میں ایک ایکچوری جیسی حساب دان کو ملازم
فت اٹھا سکے۔ اور اخراجات وغیرہ کم رکھے۔
شتام پہلی مرتبہ بموجب قانون اشٹام لی جاویگی
ودیگی ہر نہایت اعلے ہیں۔ الغرض یہ کمپنی ہندوستان
ی ہے۔ پس اگر آپ دنیاوی تفکرات سے نجات پانا
و مفید طریقہ سے آپکے لیے بیمہ عقبی کا پیری ہو۔ اور
پسماندگان یعنی ہم خورما و ہم ثواب خود زندہ رہے
لیئے ذریعہ ڈھارس و دستگیری اور آپ کو تسلی بھی
والے اصحاب یا ایجنٹ بننے کے خواہشمند

نج سکیٹری راولپنڈی